इंदु संचेतना

हिंदी साहित्य की त्रैमासिक सृजन परिक्रमा

बाल साहित्य विशेषांक

इंदुसंचेतना

हिंदी साहित्य की त्रैमासिक सृजन परिक्रमा

इंदुसंचेतना

हिंदी साहित्य की त्रैमासिक सृजन परिक्रमा

चीन से निकलने वाली साहित्य की पहली अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष-2 , अंक-7, **बाल साहित्य विशेषांक 2017**

संपर्क - हिंदी विभाग, क्वान्ग्तोंग वैदेशिक अध्ययन विश्वविद्यालय,पाय यून ताताओ पेई, क्वान्ग्चौ, 510420, चीन

संपर्क (भारत) - 9/48, साहित्य सदन, कोतवाली मार्ग, महमूदाबाद(अवध), सीतापुर, 261203, उत्तर प्रदेश, भारत

ईमेल- indusanchetana@gmail.com dr.gunshekhar@gmail.com, gpsharma@gdufs.edu.cn,
संवेदन-sparsh@gmail.com

दूरभाष संख्या - +86-2036204385, +91-9454112975

विशेष विज्ञप्ति

संचेतना पत्रिका अब इन्दु संचेतना हो गयी है । पता चला है कि कुछ लोग अनधिकृत रूप से स्वयं को संचेतना का प्रतिनिधि बताकर रचना आमंत्रण एवं व्यापार का प्रयास कर रहे हैं । पाठकों एवं रचनाकारों से अनुरोध है कि इंदुसंचेतना/संचेतना के लिए रचना आमंत्रण एवं जानकारी के लिए अधिकृत सम्पादन मण्डल के अतिरिक्त किसी और के पत्राचार का जवाब न दें ।

इस अंक में|||

आलेख

कविता

गजल/हाइकू/गीत

लघु कथा

कहानी

संपादकीय-

आखिर बाल साहित्य उपेक्षित क्यों ?

'डॉ गुणशेखर'

इंदुसंचेतना का बाल साहित्य विशेषांक विलम्ब से निकल रहा है इसके संपादक मंडल नहीं, मैं जिम्मेदार हूँ| संपादक बिनय शुक्ल समय के पाबन्द हैं| उन्होंने शिकायती लहजे में मुझसे दो-तीन बार कहा कि पत्रिका समय से निकालनी चाहिए| मैं अपने रचनाकारों और पाठकों के साथ ही उनसे भी क्षमा याचना करता हूँ| लेकिन लगे हाथ इस अंक की देरी का संकोच भी आपसे साझा करने का मन है| वह यह कि आज के रचना जगत में बाल साहित्य तौहीन का विषय माना जा रहा है| यदि ऐसा नहीं होता तो बाल साहित्य का अकाल नहीं होता|

कार्टून और तरह-तरह के कार्यक्रमों से लदे-फँदे छोटे परदे यह दर्शाते हैं कि बच्चों की उपेक्षा करके कोई भी समाज सच्ची प्रगति नहीं कर सकता| किन्तु इसके साथ दूसरा सबसे बड़ा सच यह है कि वहां जो कुछ भी परोसा जा रहा है, वह बच्चों के मानसिक स्वस्थ्य के लिए हितकर नहीं है| बच्चे समय से पहले बड़े हो रहे हैं| अपराध की दुनिया की ओर तेजी से भाग रहे हैं| यदि बाल साहित्य बच्चों के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता तो वह कुछ नहीं तो स्पीड ब्रेकर का तो काम अवश्य ही करता|

इस अंक का नाम चूँकि पहले से 'बाल साहित्य विशेषांक' तय है इसलिए पाठकों से निवेदन है कि वे इसमें नामानुरूप अपेक्षित सामग्री न पाएं तो नाराज़ न हों| इसे सामान्य अंक के रूप में भी निकाल सकते थे पर मैंने जिद वश वैसा नहीं किया है| मेरी नाराज़गी अपने से भी है और अपने समान धर्मा साहित्यकारों से भी| बच्चों के प्रति हम इतने उदासीन हो चले हैं तो भला वे बुढ़ापे में बदला क्यों न लेंगे| हममें से कितने दादा- दादी बच्चों के लिए चाँद बुलाते हैं| कितने अपने पोते-पोतियों को विभिन्न चिड़ियों के नाम पर कौर खिलाते हैं| शिक्षा बढ़ी है, रंगीन किताबें भी आ गयी हैं, पर वात्सल्य का रंग फीका पड़ गया है| इसका कारण कहीं यह तो नहीं कि,

"रहने लगे हैं जबसे पक्के मकान में
मिटटी से खेलने को बच्चे तरस गए|"

शायद राजेश रेड्डी कुछ हद तक इसका सही कारण खोज सके हैं -

"मेरे दिल के किसी कोने में इक मासूम सा बच्चा
बड़ों की देख कर दुनिया बड़ा होने से डरता है|"

साहित्यकार ही जब बच्चों की कदर नहीं करेगा तब और किसी से क्या और कितनी उम्मीद की जा सकती है|

नाना अनुरोधों के बावजूद इस अंक में बाल साहित्य पर पर्याप्त सामग्री का न होना यह सिद्ध करता है कि साहित्य की मुख्य धारा में 'बच्चा' अनुपस्थित है| एक समय ऐसा भी आ सकता है कि साहित्य की पंजिका से बच्चों का नाम ही कट जाए|

मुंशी प्रेमचंद का 'हामिद' कहानियों से गायब है तो 'दिनकर' का 'हठकर बैठ जाने वाला चाँद' कविता से| पहले बड़े से बड़ा साहित्यकार बाल साहित्य पर उसी तन्मयता से कलम चलता था जैसे कि वह गंभीर साहित्य में रुचि लेकर करता था| आज बड़ा क्या छोटे से छोटा साहित्यकार भी गर्व से कह देता है, 'भाई ! मुझसे तो बाल साहित्य नहीं लिखा जाता|' गोया बाल साहित्य सृजन से उसका कद छोटा हो जाने का खतरा हो| यह भी एक प्रकार का साहित्यिक संकट है, जिसे साहित्य जगत गंभीरता से नहीं ले रहा है|

इस देरी में वह प्रतीक्षा भी एक कारण है कि मेरी अंतर्राष्ट्रीय महत्व की पत्रिका है| इसमें अब नहीं तो तब बल साहित्य आएगा ही| किन्तु विलंब के बावजूद बड़ों का अवलंब बच्चों की कल्पना ही रहा, यथार्थ न बन सका|

अब जो भी मिला उसे पाठकों को इस अनुरोध के साथ समर्पित कर रहा हूँ कि वे इसमें जिस बाल जीवन को नहीं पा रहे हैं उसे अपने ही परिवेश में खोजें| इस खोज में यह ध्यान रखना जरूरी है कि साहित्य से खोया हुआ बच्चा कहीं अपने भीतर भी रो रहा हो सकता है तो कहीं बाहर भी |उसे बड़ों की इच्छा के अनुरूप कमरे में भी सिसकता पाया जा सकता है और कभी उसकी मर्यादा लांघकर आँगन में आया हुआ भी| क्योंकि,

"कमरा- कमरा बाँट के हमने खुद को उसमें कैद किया
बच्चा तो बस बच्चा है आँगन में आ जाता है|"

बच्चों का साहित्य भले हम उपलब्ध न करवा पा रहे हों पर बच्चे तो आपके आस- पास हैं ही न| उन्हें खिलौनों से खेलने दें| बच्चों के खिलौने मिट्टी और प्लास्टिक के हो सकते हैं पर हम बड़ों के खिलौने तो ये हाँड़-माँस के जीवंत बच्चे ही हैं| किताबें तो ये बाद में भी पढ़ लेंगे| इन्हें मारे-पीटें नहीं| प्यार दें| पुचकारें, दुलारें|

"इन छोटे- छोटे हाथों को चाँद सितारे छूने दो
(वर्ना) चार किताबें पढ़कर ये भी हम जैसे हो जाएंगे|

बच्चों से खुलकर, मिलिए| घुल-मिलकर देखिये तो आप भी महसूस करेंगे कि इन गुलाबों की पंखुड़ियां असमय झर रही है |प्राकृतिक सुगंध लुप्त हो रही है| पहले ऐसा करके देखिये तो फिर आपको भी मेरी ही तरह पीड़ा होगी कि आखिर बाल साहित्य उपेक्षित क्यों है ?

बाल कथा का सुनहरा दौर

अल्का चन्द्रा

बाल साहित्य के अन्तर्गत बाल मनोविज्ञान को समझने वाली एवं बाल मन को छूने वाली कई बाल कथाएं रची गई हैं। जिनमें शिक्षाप्रद कथाओं के साथ–साथ मनोरंजक कथाएं भी शामिल है। बाल कथाओं के लेखन के दौर में चित्रकथाओं का दौर भी आया जब अकबर–बीरबल, चाचा चौधरी व साबू तथा तेनालीराम जैसे पात्रों को केन्द्र में रखकर कई बाल कहानियाँ रची गई। ये चित्रकथाएं बच्चों में खासा लोकप्रिय हुई। पंचतंत्र की कहानियों को केन्द्र बनाकर कई लेखकों ने पशु–पक्षियों को माध्यम बनाकर कई शिक्षाप्रद बाल कथाएं लिखी।

हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल की शुरूआत में कुछ बाल केन्द्रित पत्रिकाएं शुरु हुई जिनमें इलाहाबाद से प्रकाषित होने वाली ''बालदर्पण'' एवं भारतेंदु हरिष्चन्द्र के संपादन में निकलने वाली ''बाल बोधिनी'' प्रमुख हैं किन्तु इन पत्रिकाओं में बाल–कथाओं का वर्णन कम मिलता है। कई षोध आलेखों में यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि इस समय की पत्रिकाएं केवल 'उपदेशात्मक' बाल साहित्य केन्द्रित रही। बच्चों के मनोरंजन पर कम ही ध्यान दिया गया। आगे चलकर कई लेखक हुये जिन्होंने 'बालमन' को केन्द्र में रखकर कई बाल–कथाएं लिखीं। जिनमें सर्वप्रमुख मुंशी प्रेमचन्द्र हैं। इनकी कुछ प्रमुख बाल–कथाएं हैं– 'ईदगाह', 'पागल हाथी' एवं 'परीक्षा'। 'ईदगाह' का पात्र 'हामिद' आजतक लोगों को याद है। ऐसी बाल–कथाएं– कहानियाँ कम ही लिखी गई हैं, जिनके पात्र वर्षों तक लोगों के जुबान पर रहें। प्रेम चंद्र की यह कहानी 'ईदगाह' मनोरंजक एवं षिक्षाप्रद दोनों है तथा बालमन को छू जाने वाली है। वर्णन भी बेहतरीन है। ऐसा लगता है जैसे सबकुछ आँखों के सामने चल रहा है।

''किसी के कुर्ते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सुई–धागा लेने दौड़ा जा रहा है'', ''किसी के जूते कड़े हो गए हैं उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर पर भागा जाता है''।

नागार्जुन की बालकथा 'इनाम' भी प्रसिद्ध हुई। जिसमें बेचारे एक भेड़िये के गले में मांस खाते समय एक कांटा अटक गया था। नागार्जुन की बाल–कथाओं का संग्रह 'कथा मंजरी' के नाम से संकलित है।

विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक की कहानी 'काकी' भी सबको याद है। कहानी का मुख्य पात्र 'श्यामू' अपने भोलेपन एवं निर्दोष व्यवहार से सबका मन मोह लेता है। सुदर्शन की बाल कहानी 'हार की जीत' भी उल्लेखनीय है।

द्विवेदी युग की एक प्रमुख बाल पत्रिका रही 'बालसखा'। जिसका प्रकाशन लगातार 53 वर्षों तक चलता रहा। पं0 बदरीनाथ भट्ट इसके संपादक थे। इनमें बाल साहित्य की हर विधा में रचनाएं होती थी, वो भी सचिव रचनाएं होती थी। इनमें कई बाल कथाओं का प्रकाशन हुआ।

आगे आने वाले वर्षों में महादेवी वर्मा की 'गिल्लू', जयशकर प्रसाद की 'छोटा जादूगर' एवं हरिवंष राय बच्चन की बाल कहानी 'चुन्नी मुन्नी' उल्लेखनीय है।

इधर कुछ वर्षों में बाल–कथा एवं बाल कहानियों का दौर उतना समृद्ध नहीं दिखता है। बालकथा एवं बाल कहानियों के नाम पर कुछ बाल पत्रिकाएं ही बची हुई हैं। बालहंस, चंदामामा, चंपक, नन्हें सम्राट आदि बाल–पत्रिकाओं में कुछ बाल –कथाएं एवं कहानियाँ प्रकाशित होती रहती हैं किंतु ऐसी कहानियाँ विरले ही देखने को मिलती है जब कहानी का पात्र हमारे मस्तिष्क में कई सालों तक याद रहता है।

हम आजकल के बच्चों को अक्सर कहते रहते हैं कि वे इलक्ट्रॉनिक उपकरणों पर ज्यादा व्यस्त रहते हैं किंतु अब वो चित्रकथाएं, बालकथाएं उन्हें पढ़ने को नहीं मिलती हैं इसलिए वे भी मनोरंजन के लिए इलेक्ट्रॉनिक उनकरणों जैसे– टी0 वी0, कम्प्यूटर, मोबाइल आदि पर निर्भर रहते हैं। पंचतंत्र की कथाओं, अमर कथाओं का पुनः प्रकाशन शुरु होना चाहिए, जिससे वर्तमान युग के बच्चों में शिक्षा, नैतिकपरक मूल्य विकसित किये जा सके, साथ ही साथ उनका मनोरंजन भी हो सके। मनोरंजन के साधन के रुप में बाल–कथाओं, चित्रकथाओं का प्रकाशन पुनः शुरु हो।

++++++++++++++++

परिचय – अल्का चन्द्रा,
पिता – श्री लवकेष चन्द्र,
माता– श्रीमती शीला चन्द्रा जन्मतिथि– 25–12–1992,
शिक्षा– परास्नातक (इतिहास),
नौकरी– अंग्रेजी भाषा एवं व्यक्तित्व विकास प्रषिक्षक,
अभिरुची– लेखन, संगीत सुनना, अध्यापन
प्रकाषित रचनाएँ–साझा काव्य संग्रह ''चाँद मुट्ठी में कर ले'' में कुछ छंदबद्घ रचनाएँ, साझा गीत संग्रह ''चल मुसाफिर'' में कुछ गीत – दैनिक जागरण समाचारपत्र में कहानी , अमर उजाला 'युवान' में कविता प्रकाशित।

बाल साहित्य का महत्व

रणजीत कुमार सिन्हा

बाल-साहित्य का आशय बच्चों के लिखे जाने वाले साहित्य से हैं। जिससे बच्चों में संस्कार,सत्यता,कर्मठता,त्याग, सामाजिकता आदि जगाया जा सके। बचपन में बच्चें दादी, नानी, बाबा, आदि से लोरिया, कहानी सुनते थे। फिर बाद में बाल पत्रिकाओं के माध्यम से बच्चों का मनोरंजन, ज्ञानवर्धन और चरित्र निमार्ण की दिशा में बाल साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।आज भूमंडलीकरण , उदारीकरण, बाजारवाद, आदि ने बच्चों को भी काफी हद तक प्रभावित किया है। आजकल भारतीय परिवार की परिभाषा भी बदल गया है। संयुक्त परिवार का टूटन,एकल परिवार,या मियाँ बीबी और औलाद । आज के युग में बच्चें नाना-नानी, दादा-दादी, से दूर है। आजकल के अधिकतर मध्यवर्गीय परिवार तथा निम्न मध्यवर्गीय परिवारें भी सूचना विस्फोट,मोबाईल,वीडियों गेम,पोगो,आदि देखने एंव नेट पर खेलने में ही व्यस्त है।

आधुनिकता बोध या उत्तर आधुनिकतावाद ने मानवीय संवेदना को भी बाजारतंत्र से जोड़ दिया है।आजकल माता-पिता बच्चों को किताब से दूर ,खेल-कूद से दूर करते नज़र आ रहे है।बच्चें के मन का सही विकाश में वर्तमान उपभोगतावादी संस्कृति संकट पैदा कर रहा है। बालक की मानसिकता को ध्यान में रखकर,बालक में पढ़ने की रुची जगाने हेतु,मनोरंजन के माध्यम से बालक को सिखाने हेतु,एंव बालक के विकास के लिए जो लिखा जाता है,वह बाल साहित्य होता है। भारतीय वांग्मय में बालकों के सर्वांगीण चारित्रिक विकास एंव व्यक्तित्व के निर्माण हेतु, संस्कारों की व्याख्या की गयी एंव ऐसे साहित्य का निमार्ण किया गया जो कथाओं के माध्यम से, कविता के माध्यम से, गीत के माध्यम से, दोहा के माध्यम से, लोरियों के माध्यम से, अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करता है। रामायण, महाभारत, पुराण में इसका प्रमाण है। पशु-पंक्षियों की बालोपयोगी आकषर्क कथावस्तु, आदि के जरीए ऊंचे आदर्श भी प्रस्तुत किया गया है।पंचतंत्र बाल साहित्य का श्रेष्ठ उदाहरण है।

बांग्ला का बाल साहित्य भारतीय बाल साहित्य में सबसे अधिक समृद्ध है। बांग्ला के साहित्यकारों ने यह अनुभव किया कि बाल-साहित्य के सृजन के बिना कोई भी साहित्यकार महान नहीं बन सकता है। कारण साहित्य के प्रति लगाव बचपन से ही पनपती है। यही कारण है की बंकिमचंद्र, रवीन्द्रनाथ, शरतचन्द्र, ताराशंकर, बिभुतिभूषण, से लेकर समरेश बसु, सुनील गांगुली, शंखघोष, शक्ति दे, महास्वेता, नवारुण भट्टाचार्य, सुकुमार राय, उपेन्द्र किशोर राय, सभी के साहित्य सृजन में बाल साहित्य का भंडार है। बंगाल के लोगों में अपनी भाषा और साहित्य के प्रति जितना प्रेम और लगाव है, वह अन्यत्र नहीं है।बंगाल में आज भी बंगाली परिवार अपने बच्चों की शिक्षा की शुरुआत बंगला छड़ा, रवीन्द्र संगीत,नजरुलगीति, विद्यासागर कृत वर्ण परिचय, संदेश, आदि बाल - पत्रिकाओं से ही कराते हैं।

॥ बालसाहित्य : कुछ विचार ॥

प्रा. डॉ. मनोहर

कहानी सुनने और सुनाने की प्रवृत्ति जन्मजात है । शिशु माता के गर्भ से जब पृथ्वी पर अवतरित होता है, तब उसको विश्व के नैसर्गिक कार्य-कलाप विचित्र प्रतीत होते हैं, उसके भीतर कौतूहल जागृत होता है । नील जगत में तारों का टिमटिमाना, सूर्य-चंद्रमा का उदित एवं अस्त होना, पक्षियों का उड़ना, चहचहाना, उसे आल्हादकारक लगता है । नैसर्गिक क्रिया-कलाप उसके अन्दर जिज्ञासा को प्रवृत्त करते हैं । परिणाम स्वरूप प्रश्न-चिन्ह बुनते हैं- क्यों?, कैसे?, फिर । यहीं पर कहानी का बीज वपन होता है । क्यों और कैसे का समाधान ही कहानी की बुनियाद हैं ।

संध्या के समय नील आकाश तले दादी, नानी या माता के अंक में पलंग पर लेटे शिशु के बाल-मन में प्रश्न तरंगें हिलोरे मारने लगती हैं- उसकी जिज्ञासा रूपी क्षुधा को शांत करने के लिए नानी-दादी अमृत वर्षिणी कथा बुनती है-

'एक था राजा' से लेकर प्रश्न और उत्तर के क्रम से कथा की यात्रा का श्रीगणेश होता है, कथा का सूत्रपात लोरियों से होता है- क्रमश: लोककथा, लोकगीत, राजा-रानी की कथाएँ, परी कथाएँ, पशु-पक्षियों की कहानियाँ, पुराण, इतिहास की गाथाएँ कथा-क्रम और श्रृंखला को आगे ले चलती हैं । शिशु की आयु के बढ़ने के साथ कथा का इतिवृत्त, कथा-कथन और स्वरूप में परिवर्तन होता जाता है ।

बाल साहित्य पर विचार करते समय हमें पॉल हजार्ड की अमर कृति 'बुक्स चिल्ड्रेन एण्ड मैन' के कतिपय वाक्य स्मरण करने योग्य हैं । वे लिखते है-

"मैं ऐसी पुस्तकों को पसन्द करता हूँ जो इतिहास की आत्मा के प्रति वफादार होती हैं, जो बच्चों के लिए सहज और प्रत्यक्ष ज्ञान का द्वार खोल देती हैं, जो बच्चों में महान मानवीय संवेदनाओं की अनुभूति कराती हैं, जो ज्ञानवर्धक और नैतिक गुणों से युक्त होती हैं ।"

हमारे देश में बाल साहित्य उपेक्षित रहा है । पाश्चात्य देशों में बाल साहित्य के सृजन, प्रकाशन, रचना-प्रक्रिया, स्तर, उपयोगिता, मनोवैज्ञानिकता इत्यादि विभिन्न पहलुओं पर जो चिंतन, मनन और जो प्रयोग हुए हैं वे भारतीय भाषाओं में इतने व्यापक तथा वैविध्यपूर्ण नहीं हैं । विदेशों में जहाँ मूर्धन्य साहित्यकारों ने इस विधा को साहित्य का एक अभिन्न अंग मानकर उसके विकास में स्पृहणीय योगदान दिया, वहाँ पर भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य के उन्नयन में सराहनीय प्रयत्न नहीं हुआ है । बच्चों के लिए वहाँ पर हजारों की संख्या में पत्रिकाएँ और पुस्तकें प्रकाशित होती हैं । विशेष प्रकार के शिक्षालय, स्वास्थ्य के केंद्र, क्रीड़ा-स्थल और फिल्म आदि बनायी जाती हैं । ज्ञान-

कोष और संठाहालय निर्मित हैं । उन देशों ने यह अनुभव किया है कि बच्चों की प्रगती और उनके योग-क्षेम पर ही उस जाति का भविष्य निर्भर है ।

बहुत समय पूर्व, हमारे राठ्र-नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अनेक देशों के पर्यटन के पश्चात, यह अनुभव किया था कि पाश्चात्य और रूस आदि पूर्वी देशों में बच्चों के प्रति जो विशेष ध्यान दिया जाता है, उनके लिए विशिष्ट प्रकार के साहित्य का सृजन होता है, सुधारात्मक शिक्षा के साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास किये जाते है । यही कारण है कि उनकी वर्षगाँठ नवंबर 14 को बाल-दिवस के रूप में मनायी जाती है ।

स्वाधीनता के पूर्व विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर, प्रेमचंद, सत्यजित राय, राजाजी, सोहनलाल द्विवेदी, सुकुमार राय, सुब्रह्मण्य भारती, बुद्धदेव बसु आदि माहन लेखकों ने बाल-साहित्य की रचना में विशेष रुचि ली और सुंदर पुस्तकें प्रस्तुत की । स्वतंत्रता के पश्चात्, हमारे देश में भी बाल-साहित्य के सृजन और प्रकाशन में विशेष ध्यान दिया जाने लगा है ।

बाल साहित्य पर विचार करते समय हमें तीन बिंदुओं पर अधिक ध्यान देना होगा- सृजन, प्रकाशन और उपलब्धि । बाल साहित्य के लेखकों में बच्चों के मनोविज्ञान को समझे बिना जो साहित्य प्रस्तुत किया जाता है, उसके द्वारा वांछित फल प्राप्त नहीं होता ।

यह बात सभी लोग स्वीकार करेंगे कि बाल साहित्य रोचक, सरल, सरस और उपादेय हो । पर इसके साथ ही उसकी भाषा सरल और बोधगम्य होनी चाहिए । आज के बालक का बौद्धिक स्तर क्रमश: ऊँचा होता जा रहा है । आयु-वर्ग की दृष्टि से भी साहित्य भिन्न हो सकता है । प्रारंभ में हम बच्चों को ऊँचे बौद्धिक स्तर का साहित्य दें तो वे पूर्ण रूप से हृदयंगम कर उसका लाभ उठा नहीं पायेंगे, इसलिए प्रारंभिक बाल साहित्य में कुतूहल और जिज्ञासा की पूर्ति करनेवाली सामठाी भरपूर हो और साथ ही मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धक भी हो ।

हमारा लक्ष्य बच्चों को उत्तम भावी नागरिक बनाना है । इसलिए उन्हें अपने परिवार, समाज और राठ्र के प्रति दायित्व का बोध करानेवाला साहित्य देना परम आवश्यक हो जाता है । अत: हम जो साहित्य उन्हें देते हैं वह बच्चों के भीतर साहस, पराक्रम, नैतिक बल, स्वावलंबन, चरित्र-निर्माण, देशभक्ति, सेवाभाव, आत्मरक्षा आदि गुणों का पोषण करनेवाला हो । परंतु वह साहित्य उपदेशात्मक न हो । उसमें अंधविश्वास के बजाए तार्किक बुद्धि, विवेकशीलता और दृढ़ता पैदा करे- ये गुण नितांत आवश्यक हैं । क्योंकि बच्चों की अवस्था के बढ़ने के साथ उनकी कल्पना और भावना शक्ति भी बढ़ती जाती है । साथ-ही-साथ उनमें हेतुवाद का समांतर रूप में जागृत करने का प्रयास होना चाहिए ।

विश्व की समृद्ध भाषाओं में जो लोकप्रिय ठांथ हैं, जिन्हें बच्चों ने बहुत ही रुचि के साथ पढ़ा है, उन पुस्तकों में बालकों का मनोरंजन करने की असीम शक्ति के साथ अपूर्व रोचकता भी थी ।

विश्‌व की महान कृतियों में पंचतंत्र, गुलीवर की कहानियाँ, राबिन्सन क्रूसो, ट्रेजर अभिलैण्ड, ईसाप की कथाएँ, एलिस इन द वन्डरलैण्ड आदि महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं । इन कृतियों के पात्र पशु-पक्षी और बच्चे हैं । ये कृतियाँ बहुत पुरानी हैं, फिर भी आज भी बच्चे बड़ी रुचि के साथ पढ़ते हैं । उपर्युक्त कृतियों में नीति, उपदेश, साहस, अनोखी सूझ-बूझ, समयस्फूर्ति तथा अन्य शाश्‌वत मूल्यों के गुण विद्‌यमान हैं । उनमें ऐसे भी तत्व हैं जिनमें उन बातों पर चिंतन हुआ है जो जीवन और जगत्‌ से जुड़े हुए हैं । इन कृतियों की लाखों प्रतियाँ बिक चुकी हैं और विश्‌व की अधिकांश भाषाओं में इनका रूपांतर हो चुका है ।

विश्‌व-कथा साहित्य के अध्ययन से हमें यही विदित होता है कि प्रारंभ में श्रेष्ठ लेखकों ने बाल साहित्य की रचने में संकोच का ही अनुभव किया था । स्वयं चार्लेस लुडविंग डाग्शन ने जो आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी में गणित शास्त्र के प्रोफेसर थे, 'लुई कैरोल' उपनाम से अपनी कहानियाँ प्रकाशित की थीं, जो मैकमिलन कंपनी से 1864 में छपी थीं ।

भारतीय भाषाओं में भी विश्‌व की इन महान कृतियों के अनुवाद हुए । पंचतंत्र के साथ हितोपदेश, कथा सरित्सागर, बेताल कथाएँ, विक्रमादित्य की कहानियाँ, जातक कथाएँ, अरेबियन नाइट्‌स, सोहराब और रुस्तम, सिंदबाद की कहानियाँ, परी कथाएँ, लोककथाएँ, बीरबल, तेनाली राम जैसे विनोदी प्रकृति के हाजिर जबाब, सभा-चतुर विवेकशील व्यक्तियों की कहानियाँ, पुराण, महाकाव्य, संस्कृत के प्रसिद्‌ध नाटकों की कहानियाँ, उपनिषद की कहानियाँ प्राय: सभी भारतीय भाषाओं में पुनर्लिखित हुई हैं या अनूदित हुई हैं । ये सारी कहानियाँ बच्चों में बहुत लोकप्रिय भी हुई हैं।

अन्य भारतीय भाषाओं के तुलना में संख्या की दृष्टि से हिंदी में बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में रचा गया है । स्तरीय बाल साहित्य का भी हिंदी में अभाव नहीं है किंतु हिंदी के शीर्षस्थ लेखकों ने इस विधा की समृद्‌धि में कोई विशेष अभिरुचि नहीं दिखाई, इस विधा को जिन लेखकों ने अपनाया उनमें कवियों की संख्या अधिक है । ऐसे कलाकारों में सर्वश्री सोहनलाल द्‌विवेदी, द्‌वारका प्रसाद माहेश्‌वरी, निरंकार देव सेवक, राठ्रबंधु, चंद्रपाल सिंह यादव, रामावतार चेतन, चिरंजित, मनोहर वर्मा, विनोद चंद्र पाण्डेय, बालशौरि रेड्‌डी, रामचंद्र तिवारी, कपिल, धर्मपाल शास्त्री, रघुवीर सहाय शरण मित्र, रामेश्‌वर दयाल दुबे के नाम विशेष रूप से उल्‌लेखनीय है ।

वैसे हिंदी में लोक कथाएँ, पौराणिक कथाएँ, नीति कथाएँ, हास्य-व्यंग्य की रचनाएँ हजारों की संख्या में रची गयी हैं । हिंदी के यशस्वी लेखक इलाचंद्र जोशी, वृंदावनलाल वर्मा प्रभृति ने ऐतिहासिक कथाएँ प्रस्तुत करके हिंदी बाल साहित्य के एक बड़े अभाव की पूर्ति में प्रशंसनीय योगदान दिया है । बाल पाकेट बुक्स के नाम पर सैकड़ों पुस्तकें बाजार में आयीं, परंतु गुणात्मक बाल साहित्य के लेखन में प्रख्यात लेखकों में सर्वश्री विष्णु प्रभाकर, मनोहर वर्मा, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, व्यथित हृदय, विराज, शिवमूर्ति सिंह, योगराज थानी, मनहर चौहान, डॉ. मस्तराम कपूर, सुदर्शन, रमेश वर्मा, हिमांशु श्रीवास्तव, जयप्रकाश भारती, कन्हैयालाल नंदन, स्वदेश कुमार, उमाशंकर, विमला लूथरा,

कमल शुक्ल, सरस्वती कुमार दीपक, बालस्वरूप राही, राबिन शा पुष्प, गोविंद सिंह, सत्य प्रकाश अठावाल, डॉ. कृष्णा नागर, कमला चमेला, हसन जमाल, आलम शाह खान, शंभु प्रसाद श्रीवास्तव, विष्णुकांत पाण्डेय, दामोदर अठावाल, श्री प्रसाद, शकुंतला शर्मा, शकुंतला सिरोठिया, सावित्री परमार, अनंत कुशवाहा, डॉ. उषा यादव, अलका पाठक, केशवदेव इत्यादि ने कहानी, उपन्यास एवं नाटकों के क्षेत्र में पर्याप्त यश अर्जित किया है ।

हिंदी में बच्चों के लिए बड़ी संख्या में पत्रिकाएँ निकलीं; पर बानर, बालसखा, शिशु जैसी कुछ अच्छी पत्रिकाएँ काल कवलित हो गयीं । आज जो पत्रिकाएँ विशेष रूप से बच्चों में लोकप्रिय हैं, वे हैं- बाल भारती, नन्दन, पराग, चन्दा मामा, चम्पक, बालक ।

आज 21 वीं सदी में इन कहानियों में आज के जीवन से उभरती घटनाओं-प्रसंगों के बीच नन्हें बच्चों की साहस कथाएँ, व्यावहारिक कथाएँ अधिक लिखी जा रही हैं । इन कहानियों में लेखक जीवन का सत्य, मन के भाव और व्यक्तित्व-विकास की कल्पना को नजर-अंदाज नहीं करता । अत: आज की बाल-कहानियाँ सत्य का संवेदनशील और वस्तुनिष्ठ रूप दोनों का संतुलन बनाये रखने का प्रयत्न करती है ।

कोमल बचपन पर कठोर होती दुनिया...

सुनीता शानू

हर 8 वें मिनिट में एक बच्चा गायब हो रहा है...नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) का यह आँकड़ा हमें डराता है, सावधान करता है और यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम अपने बच्चों का ख्याल रखने में नाकामयाब रहे हैं।

हमारे लिये यह बेहद शर्मनाक बात है कि देश का भविष्य कहे जाने वाले बच्चों का भविष्य हम सुरक्षित नहीं रख पाते हैं। एन सी आर बी की रिपोर्ट बताती है कि गायब होने वाले बच्चों मे 55 फीसदी लड़कियां होती हैं और सबसे डरावनी और खौफ़नाक बात यह है कि 45 फीसदी बच्चों का कुछ पता नहीं चल पाता। इन बच्चों के साथ क्या होता है मार दिये जाते हैं या ज़िंदगी भर के लिये किसी ऎसी जगह बेच दिये जाते हैं जहाँ से इनका कोई सुराग नहीं मिल पाता।

लापता होने वाले बच्चों में ज्यादातर झुग्गी-बस्तियों, विस्थापितों, रोजगार की तलाश में दूर-दराज के गाँवों से शहरों में आ बसे परिवारों, छोटे कस्बों और गरीब व कमजोर तबकों के बच्चे होते हैं। ऎसे बच्चों को गायब करना बेहद आसान होता है। कुछ माता-पिता अशिक्षित होते हैं जिन्हें मूर्ख बना कर या लालच देकर मानव तस्करी के गिरोह बच्चे गायब कर देते हैं। शर्मिंदगी उन माता-पिता को देखकर होती है, जो गरीबी और पैसे के लालच में अपने मासूम बच्चों को बेच देंतें हैं।

जहाँ एक और बचपन बचाओ आंदोलन किये जा रहे हैं, दूसरी तरफ़ बाल श्रमिकों की संख्या में दिनों-दिन इजाफ़ा हो रहा है। (ILO) अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के मुताबिक दुनियाभर में लगभग बीस करोड़ बच्चे अपनी उम्र से ज्यादा श्रम वाला काम करते हैं और यह जानकर आश्चर्य होता है कि 14 साल से कम उम्र के सबसे ज्यादा बाल श्रमिक हमारे देश भारत में ही हैं।

आये दिन बच्चा उठाने वाले गिरोह पकड़े जा रहे है फ़िर भी बच्चों के गायब होने का सिलसिला बड़ता ही जा रहा है। लगभग 900 संगठित गिरोह ऎसे हैं जो बच्चों को यौन व्यापार में धकेलने तथा बंधुआ मजदूरी के लिए मजबूर करने का काम करते है। बच्चों के अंग-भंग कर उनसे भीख मंगवाते है, अपहृत बच्चों के अंगों को प्रत्यारोपण के लिए निकालने के बाद उन्हें अपने हाल पर मरने के लिए छोड़ दिया जाता है। यूनिसेफ की रिपोर्ट यह भी बताती है कि विश्व में करीब दस करोड़ से अधिक लड़कियां विभिन्न खतरनाक उद्योग-धंधों में काम कर रही हैं।

लापता बच्चों की खोज के लिये सरकार ने कई अभियान भी चलाये हैं

<u>ऑपरेशन स्माइली...</u> :गुमशुदा बच्चों को तलाश कर उनके उनके माता-पिता तक पहुंचाने के लिये ऑपरेशन स्माइल का निर्माण किया गया था। सबसे पहले गाजियाबाद में ऑपरेशन स्माइली का प्रोग्राम चलाया गया था। जो कि रेलवे स्टेशनों,बस अड्डों, छोटे-छोटे ढ़ाबों और खाने पीने की दुकानों और घरों में काम करने वाले नाबालिग बच्चों को ढूँढकर अपने परिवार तक पहुंचाने का कार्य करता

था। गाजियाबाद में इसकी कामयाबी होते ही पूरे उत्तर प्रदेश में यह अभियान चला दिया गया। ताजा आँकड़ों के हिसाब से--

फरवरी 2015 ---490 गुमशुदा बच्चे बरामद--- 354 लड़कियाँ,और 136 लड़के थे।

मार्च 2015 में 710 गुमशुदा बच्चे बरामद---- 516 लड़कियाँ और 194 लड़के थे।

पुलिस मुख्यालय से प्राप्त आंकड़ों के मुताबिक प्रदेश में अभी भी लगभग साढ़े 3 हजार बच्चे गायब हैं, इनमें ढाई हजार से अधिक लड़कियां हैं।

ट्रैक चाइल्ड वेब पोर्टल- : यह वेब पोर्टल 2011-12 में शुरू किया गया लेकिन यह पुलिस के द्वारा ही संचालित की जा सकती है। इसे किसी भी नागरिक को चलाने का या देखने का अधिकार नहीं होता। पुलिस को देश के किसी भी कौने में गुम हुये बच्चे का इस वेबसाइट से पता लग जाता है, क्योंकि सभी अलग-अलग राज्यों की पुलिस ही इस वेबसाइट को चलाती है। फ़रवरी 2016 में बाल संरक्षण समीति की बैठक में इस पोर्टल को अपडेट किये जाने की बात की गई। साथ ही डी डी सी सुनील कुमार नें अनाथ, बेसहारा, गुमशुदा, घर छोड़कर भागे गये बच्चो को कानूनी रूप से गोद लेनें तथा बालगृह में रह रहे 65 बच्चों के पठन-पाठन तथा नियमित जाँच के निर्देश दिये।

खोया पाया पोर्टल : महिला एवं बाल विकास मंत्रालय तथा इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से 2 जून 2015 को 'खोया-पाया' पोर्टल जारी किया। इसमें लापता बच्चों की खोज के लिये बच्चे का ब्योरा और फोटो 'खोया-पाया' पोर्टल पर डालना होता है। इस पोर्टल पर कोई भी नागरिक गुमशुदा या कहीं मिले बच्चे अथवा वयस्क की सूचना अपलोड कर सकता है। यह पोर्टल ऐसे साधनहीन लोगों की मदद करता है जो गरीब हैं और जिन्हें बच्चों के खो जाने पर रोकर चुप बैठ जाना पड़ता है। लापता बच्चे की सूचना आदान-प्रदान करने वाला 'खोया-पाया' एप्प मुफ्त में मोबाइल पर भी डाउनलोड किया जा सकता है। इसलिए यह दूर दराज के गांवों में भी कारगर साबित हुआ है। इस पोर्टल से पुलिस सहायता और बाल सहायता वेबसाइट भी जोड़ दी गई है।

इन सब वेब पोर्टल के अलावा, कई पुलिस थानों में अलग-अलग तरह के अभियान चलाये जा रहे हैं और लापता बच्चों की खोजबीन की जा रही है। फ़ेसबुक तथा व्हाट्स एप्प भी गुमशुदा बच्चों को ढूँढने में सहायक सिध्द हो रही है।

आई सी एम ई सी (इंटेरनेशनल सेंटर फ़ार मिसिंग एंड एक्स्प्लोईटेड चिल्ड्रन) की रिपोर्ट के अनुसार हर साल लापता बच्चों की संख्या—सयुंक्त राज्य-467000/जर्मनी-100000/दक्षिणी कोरिया-31425/अर्जेंटिना-29500/भारत- 70000/स्पेन- 20000/कनाडा- 40100/युनाइटेड किंगडम(U K)-140000

एन सी एम ई की रिपोर्ट के अनुसार युनाईटेड स्टेट्स में तकरीबन 8000000 बच्चे हर साल गुम होते हैं जिसमें 203000 बच्चे अपहरण के शिकार होते हैं।

पाकिस्तान में हर साल गायब होने वाले बच्चों की संख्या 3 हजार है, जबकि हमसे अधिक आबादी वाले चीन में 1 साल में 10 हजार बच्चे गायब होते हैं।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के मुताबिक विभिन्न राज्यों में जनवरी 2012 से फरवरी 2016 के बीच गायब हुए बच्चों की संख्यां कुल 1,94,213 , जिनमें से 1,29,270 बच्चों को बरामद कर लिया लेकिन 64,943 बच्चों का कुछ पता नहीं चल पाया।

नंवबर 2014 से लेकर 30 जून 2015 के बीच प्रति महीने 2,154 नाबालिग लड़के, 2,325 नाबालिग लड़कियां गायब हुई हैं, जबकि हर माह 2,036 नाबालिग लड़के, 2,251 नाबालिग लड़कियों को खोज लिया गया है। यानि कि आठ महीनों में 35,841 नाबालिग बच्चे गुम हुए हैं, जिनमें से 34,292 बरामद कर लिए गए हैं, 1,549 नाबालिग बच्चों का कोई सुराग नहीं लग पाया है।

लापता होने वाले बच्चों की संख्या में महाराष्ट्र अव्वल नंबर पर है, जहां पिछले 3 साल में 50 हजार बच्चे गायब हुए। उसके बाद मध्यप्रदेश से 24,836 बच्चे गायब हुए। दिल्ली में 19,948 और आंध्रप्रदेश 18,540 का नंबर क्रमशः तीसरा और चौथा है।

बाल-कवि नवीन कुमार जैन की कवितायें

नारी

स्नेह की धारा है वह, है वात्सल्य की मूर्ति
वीरुध वही,वन वही, कालिका की वो पूर्ति
राष्ट्र , समाज और परिवार को वो समर्पित
स्व - पर, हित को करती प्राण भी अर्पित
वाणी वही, गिरिजा वही, है दामिनी भी वह
कल्पना वो, प्रतिभा वही है कामिनी भी वह
किरन है वह, है सुभद्रा , है महादेवी भी वह
सृजक है वो समाज की समाजसेवी भी वह
है मदर टेरेसा, ऐनी बेसेन्ट, यशोदा भी वह
है अनैतिक समर में संघर्षरत,योद्धा भी वह
बोझ नहीं है , अबला नहीं, न द्वितीय है वह
वह धरा पर देवी रूप ,नारी, अद्वितीय वह
जननी वही , गृहणी वही , नंदिनी भी है वह
भगिनी वही , सती वही , संगिनी भी है वह
बरछी वही , कलम वही, तलवार भी है वह
कंचन वही, चाँदी वही , अलंकार भी है वह
शस्त्र भी वह, शास्त्र भी वह,शक्ति भी है वह
अस्त्र है वह,आस्था भी वह,भक्ति भी है वह

धरा पर स्वर्ग

चहकते पंक्षी, सुनहरा मौसम
उगता सूरज, मिटता हुआ तम
शीतल हवा की सुरीली आवाज
हरे-भरे पेड़ों का अल्हड़ अंदाज
मुझे दिखाई देता, ये स्वर्ग जहाँ
आओ तुमको भी लेता चलूँ वहाँ
तो छोड़ दो प्रकृति से, छेड़छाड़
खोलो, अंतर्मन के तुम, किवाड़
विकास के लिए वृक्ष, मत काटो
नदियाँ न रोको, पर्वत न छांटो
मोटर गाड़ियों से चलना छोड़ दो
धरा को नया स्वर नया मोड़ दो
फिर वही हरा चोला पहना दो उसे
सुनहरी मृतिका का गहना दो उसे
करो प्रकृति की, गोद में, विश्राम
जो है स्वर्ग से सुंदर, है अभिराम

प्यारी प्रकृति

तन झंकृत हुआ स्पर्श कर हरित पर्ण
मन महका देख प्रकृति के विविध वर्ण
वो पर्ण, हिममय, ओस से भींगे, हुए
ऊर्जावान हैं जो प्रकृति से, मैंने थे छुए
उस स्पर्श से मिली थी तन को ताजगी
चित्त शांत हुआ मिटी चिंता नाराजगी
जब प्रकृति का अकिंचित अतिन्यून अंग
भर देता मन में उमंग, तन में तरंग
सोचो जब प्रकृति को ही स्पर्श करूँ ?
प्रकृति में गोद में , मैं अपना सिर धरूँ
जो आत्मा का प्रकृति से हो जाए संग
तो अनेकों जीवन में, भी भर जाएँगे रंग
फिर न जन्म - मरण रहे, न, आत्मा
जाऊँ उसकी शरण में जो स्वयं परमात्मा

प्रकृति

थका मन पाता आश्रय, प्रकृति की गोद में
शिथिल तन होता फुर्तीला,
उसके विनोद में पंक्षी सुनाते लोरी ,
वायु माथा सहलाती
सुन झरने की ध्वनि आत्मा तृप्त हो जाती
सूख गिरे, पत्ते खड़-खड़ करते उड़ते आते
स्वर्णमयी मृतिका की, मुझे चादर उड़ाते
ममतामयी , की गोद में, मैं करता विश्राम
प्रकृति का कण-कण, कोमल, देता आराम
शांत, चिंता रहित, ऊर्जावान, मैं हो जाता
फिर क्या? फिर दौड़- भाग में लग जाता

परिचय :
जन्म तिथि- 27/01/2002
प्रकाशन विवरण - स्वरचित पुस्तक- मेरे विचार
सम्मान -द्रोण प्रांतीय नव युवक संघ द्रोणगिरि प्रतिभा सम्मान ,चेतना सम्मान ,मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति प्रतिभा प्रोत्साहन पुरस्कार ,श्रमणोदय जैन अवार्ड 2016,जैन युवा प्रतिभा सम्मान, यंग जैना अवार्ड 2016 प्रतिभा सम्मान और धार्मिक शैक्षणिक शिविर सम्मान
संस्थाओं से सम्बद्धता -सदस्य साहित्य संगम संस्थान व अन्य स्थानीय, इंटरनेट की ई साहित्य संस्थाओं से संपर्क ।
काव्य मंच , मंच पर काव्य पाठ - लगभग 12 वर्ष की उम्र से ही फिल्मी गानों की तर्ज पर भजन रचे जिनकी विभिन्न धार्मिक मंचों पर प्रस्तुति दी । विभिन्न धार्मिक व सामाजिक और विद्यालयीन मंचों पर काव्य पाठ किया है ।
अन्य विवरण - स्थानीय पत्र - पत्रिकाओं में, ई - पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन होता रहता है । लगभग 3 वर्ष का साहित्यिक अनुभव है वर्तमान में पढ़ाई के साथ - साथ साहित्य सेवा में संलग्न हूँ ।

बाल कविता- होमवर्क मशीन

गरिमा कान्सकार

काश!
होमवर्क की एक
मशीन होती
तो होमवर्क के नाम से
मैं कभी न रोती
बैठ जाती
मशीन के सामने
फट फट हर
विषय का बटन दवाती
जल्दी से होमवर्क हो जाता
सब हो जाते कितने खुश
कोई न मरता मुझे
न पाप न मेरी टीचर
सब करते बेशुमार प्यार
मुझे भी लगता
कोई है मेरा यार
फिर में खेलने जाती
मेरी भी लाईफ़
होती थोड़ी
इंटेरस्टिंग ना की
बोरिग बोरिग

संतोष कुमार वर्मा की कवितायें

१. सपना

सपने वो अक्सर टूटे मेरे
जिसे मैं बड़े मन से
पूरा करना चाहा
अब सपना मेरा
कुछ रहा ही नहीं
समय आया और
रुका ही नहीं
पर देखता हूँ मैं
अक्सर लोग रुके रहते हैं
किसी न किसी के लिए
जो नहीं बढ़ना चाहते आगे
क्यों रुके रहते हैं वो
उसी के लिए
मैं ऐसे लोगो को भी
देखता हूँ
जो नही रुकते
कभी किसी के लिए
और उन्हें बढ़ते भी देखा
आज यहाँ तो कल वहाँ
गलती मेरी है ?
कि मैं बढ़ नहीं पाया
या उन लोगो की
जिनके कारण मुझे
बढ़ने नहीं दिया गया ?
सिर्फ इसलिए
क्योंकि। ...

उसे पता है
कल चार और
इसके जैसा आ जायेंगे
फिर हमें किसके द्वारा पूछा जाएगा ?
इसी तरह काबिलियत दबती है
और कोख में घुट घुट मरती है
सपने यूं ही तो ,
चुर -चुर होते है
कोई करना चाहता है बयां
पर कुछ और करने के लिए
मजबूर होते है
मजबूरियों को दूर करना है
काबिलियत को मशहूर करना है
खामोशियाँ ले लेगी जान हमारी
भ्रष्ट्राचारियों के विरुद्ध

अपना आवाज़ बुलंद करना है I

2. पेट की भूख

मैंने देखा,
अपने घर के मंदिर के पास,
चौराहे पर एक लड़का
उसकी बहन और एक नन्ही सी बच्ची
लड़ रहे थे 'पेट की भूख' की लड़ाई

हुई थी,
वह ट्रेंड अपनी दुग्धावस्था से
अगर गिर भी जाती आठ फिट ऊपर से
रस्सी के एक डोर से , तो उसे अफ़सोस
किस बात का. .... ?
मुक्ति मिलती वरना पैसे मिलते

किया था,
क्या कसूर उसने, जो भोग रही है !
दुसरो के हिस्से की सजा!!
पढाई की जगह कर रही
भूख की, जिंदगी की लड़ाई !!
हमें,
उससे अपने ज़िन्दगी की मायने
की सीख लेना चाहिए
कि हम कहाँ खो रहे है
अपनी ज़िंदगी !!!

कविता की कवितायें

कुमारी कविता

आधुनिक बच्चे

कहां गईं वे किलकारियां
नहीं कही बागों में ।
कहीं वह छिप तो नहीं गई
टी.वी और मोबाइलों में ?
कहां गईं वह स्वतंत्रा
नहीं रही उन चंचल आंखों में
कहीं वह दब तो नहीं गईं
विषय के भंडारों में?
कहां गया वह बालपन
नहीं कहीं इन आधुनिक बच्चों में
कहीं वह छिप तो नहीं गई
प्रौढ़ बनाने की चाहत में?

बाल - भिक्षुक

हाय !मेरा मन मचल उठा ,
देख उस दरिद्र को
मेरी आंखे नम हो गई ,
मैं भागी उसकी ओर ।
गंदे नंगे पांव थे जिसके ,
फटा कपड़ा, बाल थे बिखरे ।
आती जब वह हाथ पसारे,
लोग उसे दूर भगातें।
कुछ उससे ठिठोली करते ,
कुछ उसे पैसे भी देते ।
कुछ पढ़ने की सलाह भी देते ,
पर...
वे बेचारी क्या जाने?
शिक्षा - ज्ञान क्या कहलावे,
वे तो बस यही जानती ,
हम कहां भिक्षुक कुछ पढ न पावे।
वह नन्हीं जाने अनजानी,
न जाने दुनियादारी ।
छीना बचपन भिक्षुक बनाकर
कंधे पे आयी बड़ी जिम्मेदारी
धिक्कार है मुझे उन
आलसी मानवों पर
जो इनको मजबूर करतें
इस कुकर्म के लिए ....
दुख है मुझे उन अपाहिजों पर
जो मजबूर होकर अपने बच्चों से
यह कुकर्म करवाते
महंगाई ,बेरोजगारी ...
यही वह जीवाणु
जो इनको भिक्षुक बनाता ।

*** बचपन ***

रंजना महेंद्र चौबे

बचपन
नादान
अल्हड़
कभी झूमता,कभी घूमता
बर्फ सा सफेद
सतरंगी लालिमा लिए
कभी स्याह, कभी फेनिल
बचपन की गलियों में झाँकता बचपन
कभी माँ की गोद में सिमटता
तो कभी पिता की छाव में इतराता
रिश्तों की बाग़डोर थामता बचपन
रिश्तों में रचता-बसता बचपन
कभी दरवाजे की ओट से झाँकता
तो कभी खिड़की निहारता बचपन
गेंद के पीछे दौड़ता-भागता बचपन
बल्लेबाजी के लिए दुलराता बचपन
गिल्ली डंडे को उछालता
कंचे फेंककर झूमता बचपन
लट्टू नचाता नादान बचपन
वक़्त के पहियों की करवट बदलता बचपन
उम्र के गलियारे की एक हसीं शाम है
बचपन
जिंदगी का खूबसूरत पड़ाव है बचपन
बचपन के रंगीन सपनों से ही जिंदगी
सजती है
और
सच तो ये है कि
इस बचपन में ही जिंदगी बसती है।
बचपन में ही जिंदगी बसती है।

परिचय :- रंजना महेंद्र चौबे
जन्म - 05 जनवरी 1990
शिक्षा- डी. टी.एड. / स्नातक व स्नातकोत्तर (हिंदी)/ MUPET - 2016
सम्प्रति - रिसर्च एसोसिएट

सम्मान व पुरस्कार -1. विशिष्ट विद्यार्थी पुरस्कार 2017,2. डॉ. के. एस. केलकर स्वर्ण पदक - 2016,3. महादेवी वर्मा हिंदी अकादमी पुरस्कार 2016,4. मारवाड़ी सम्मेलन बी एम रूईया हिंदी स्वर्ण पदक - 2013,5. तेजस्विनी पुरस्कार -2013,6. राष्ट्रीय परिसंवाद 'हिंदी नाटकों के विविध रूप'में प्रपत्र वाचक रूप में सहभागी 2009,7. राष्ट्रीय संगोष्ठी 'अनुसंधान : प्रविधि एवं प्रक्रिया' में प्रतिभागी,7. I - Quest 2011में प्रथम पुरस्कार विजेता ,8. S. N. D. T. युवा महोत्सव निबंध विजेता-2011,2012,2013

भगवती सोनी की कविताएं

शब्द

शब्द जिन्दा भी होते हैं
मरे भी
कमजोर भी होते हैं
बलिष्ठ भी
डरपोक भी होते हैं
और शेर भी
बेईमान भी होते हैं
और ईमानदार भी
झूठे भी होते हैं
और सच्चे भी
जालसाज भी होते हैं
और सपाट भी
अदबी भी होते हैं
बेअदबी भी
पर शब्द तो सिर्फ
शब्द होते हैं
फिर इस सबका
निर्णय कौन करता है ?
मैं ?
आप ?
या हम सब ?

प्रतिस्पर्धा

मैंने देखा एक फूल खिला है
बड़ा सुन्दर है
इतना कि उसे देखते ही
मुस्कराहट बाहर निकलने को
मजबूर हो जाये
गुलाब का फूल
बहुत सुंदर होता है
अलग अलग रंगों में
लेकिन सुर्ख लाल गुलाब का तो
कहना ही क्या
तब मेरे दिमाग में आया
कि ऐसी ही ख़ुशी
मेरे भीतर तब क्यों नहीं उठती ?
जब मैं किसी और रंग के
फूल को देखती हूँ
क्या इनमें भी वर्ग होते हैं ?
क्या होती है वही प्रतिस्पर्धा ?
जो हम मानवों में होती है |

जी करता है----

दिनेश वर्मा 'कनक'

जी करता है मैं भी उड़कर आसमान तक जाऊं,
संग हवा के बातें करते चन्दा तक हो आऊं.
ऊंचे पेड़ों की चोटी पर सुन्दर नीड़ बनाऊं,
तोते की बोली मैं संग पिका के गाऊं.

पंख सुनहरे मेरे होते तो मैं भी इठलाता,
भर भर लाता चोंच मे दाने मजे मजे से खाता.
पीठ बिठा के अपनी मैं तो भैया को ले जाता,
हौले हौले पंख हिला के सारा गगन घुमाता.

कभी यहाँ पे कभी वहाँ पे उड़ता पंख पखारे,
प्यास बुझाने जाता मैं तो शीतल नदी किनारे.
बातें करते रात रात भर मुझसे जुगनू तारे,
परी कथायें मैना कहती मिलकर सुनते सारे..

चन्दा की किरणों से आता शीतलता का न्योता,
मंद हवा के झोंकों से मैं मीठी निंदिया सोता.
मित्रगणों के साथ में मेरा एक जग न्यारा होता,
कितनी खुशियाँ पाता जब ये सच सपना होता.

सुप्रिया सिन्हा की कवितायें

देश का वीर सिपाही

माँ,,, मैं भी बनूँगा
नन्हा वीर सिपाही
अपने प्यारे भारत देश का,,
रक्षक बनकर सेवा करूँगा
सारे जहाँ से सुंदर
अपने प्यारे हिंदुस्तान का ।
वर्दी पहनकर,, सैनिक बनकर
कहलाऊँगा देश का वीर जवान,,
शौर्य, साहस से सीमा-पथ पर
युद्ध करके, मैं भी कहलाऊँगा
भारत - देश का वीर महान ।
जो मेरे देश को हानि पहुँचायेगा
करूँगा बुरा हाल उस शैतान का,,
एक-एक का चुन-चुन कर करूँगा
खात्मा अपने देश के दुश्मन का ।
देश की मिट्टी का तिलक लगाकर
हर बाधा से टकरा जाऊँगा ,,,
दुश्मनों को हार का सामना कराकर
तभी मैं अपने घर को लौटूँगा ।
माँ ,, बेशक छोटा हूँ मैं ! पर
मेरा बुलंद हौसला कभी ना टूटेगा,,
देख मेरे बाजूओं की ताकत
सारे दुश्मन रणभूमि में
पीठ दिखाकर भाग जाएगा ।
भारत देश का वीर सपूत हूँ मैं
अपने देश का हमेशा मान रखूँगा,,
सीना तानकर अपने दम पर मैं
अपनी जीत का परचम लहराऊँगा ।

परियों की रानी

सुंदर शहजादी,परियों की रानी
अपने सुंदर नगर की
मुझे भी सैर करा दो ना ।
फूलों की महकती बगिया में
रंग-बिरंगी तितलियों की दुनिया में ।
सतरंगी इंद्रधनुष से सजे नीले अंबर में
उमड़ते-घुमड़ते काले-काले बादल में ।
सुंदर शहजादी, परियों की रानी
अपने जादू की छड़ी घुमाकर
मुझे भी जादू बतला दो ना,,
क्लास में हमेशा फर्स्ट आऊँ
जल्दी-जल्दी होमवर्क कर लूँ ।
मम्मी से कभी ना डाँट पड़े
हमेशा मम्मी का लाडला रहूँ ।
सुंदर शहजादी, परियों की रानी
कुछ ऐसी तरकीब सिखला दो ना,,
कोई दोस्त ना मुझसे रूठे
सब मुझसे बहुत प्यार करे ,,
हम-सब मिलजुल कर रहें
और हमेशा हम-सब खुश रहें ।

नीरज कुमार नीर की कवितायें

कौआ बोला कांव कांव

कौआ बोला कांव कांव
बिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ
मे मे करके बकरी भागी
शेर बोला किसको खाऊँ ....

भों भों करता कुत्ता आया
आसमान में चील चिल्लाया
चीं चीं करता चूहा बोला
कहाँ जाऊँ मैं कहाँ जाऊँ ..

सूढ़ उठा हाथी चिंघाड़ा
हिनहिना कर दौड़ा घोड़ा
कछुआ ने खरगोश से बोला
ठहर जरा तो मैं भी आऊँ

मुर्गे ने दी ज़ोर की बांग
ऊँट की लंबी लंबी टांग
बारिश हुई मेढक टर्राया
अब तो पानी मे मैं जाऊँ ॥

हाथी भाई

सुबह सुबह हाथी भाई ,
मेरे घर पर आये ,
सूढ़ उठाकर, पूँछ हिलाकर,
दो-दो दांत दिखाए.
क्या चाहिए हाथी भाई,
खुलकर मुझे बताओ,
क्या हैं आपके हाल चाल,
मुझे भी जरा सुनाओ.
भूखा हूँ आज सुबह से,
हाथी ने फ़रमाया,
ब्रश तो कर लिया है,
कुछ नहीं पर खाया .
जाओ जल्दी से जाकर
खाने को कुछ लाओ,
हाथी भाई आये हैं,
मम्मी को बतलाओ.
मम्मी ने पूछा हाथी से
खाने में क्या लोगे,
यहीं खड़े खाओगे या
कुर्सी पर बैठोगे.
खाने में मैं लेता हूँ
नब्बे दर्जन केले
चार टब दूध पीता हूँ
खड़े खड़े अकेले .
सुनकर हाथी की बातें
मम्मी का सर चकराया
सुबह सुबह हाथी का बच्चा
मेरे घर क्यों आया .
देखकर मम्मी की हैरानी
हाथी ने हल सुझाया ,
लेकर आओ नोट दस के
बोला और मुस्काया .
लेकर नोट दस का फिर
हाथी ने सूढ़ उठाया
खुश रहने का आशीष दिया
फिर आगे कदम बढ़ाया .

डॉ किरण वालिया की कवितायें

1)' वसीयत '

आज पूरी हो गई मेरी वसीयत
कई दिनों से
मेरे कांपते हाथ
कलम का बोझ
सह नहीं पाते ...
मेरी आँखों को
न जाने क्यों
धुंधला धुंधला दिखता....
मेरा यह मन
न जाने कौन से जन्मों का
दर्द समेटे था ...
पर आज सब कर्ज़
उतार दिए मैंने ।
दे डाले सारे अंगारे
उड़ेल दिया सारा प्यार
अपनी ममता
अपना विश्वास
अपनी पीड़ा
अपना उल्लास
अपना उन्माद
अपना संघर्ष
अपने रिश्ते
सारे नाते
सब तुम्हें निभाने हैं अब
लो लिख डाला है अपना
वसीयनामा

2) ' वो मैं नहीं थी '

सुनो !
कुछ कहने से पहले जान लो
अपने तुम्हारे बीच
ये जो रिश्ता है ना
इसे बार बार
अंगारों पर चलना होगा
तुम पिघलोगे क्या बर्फ बन ...
देखो !
तपती दोपहरी में
चलते चलते
प्यासे थके पथिक को
घनी छाया की तलाश है जैसे
तुम अपने प्यार के साए में
थाम पाओगे यह तपता तन...
ठहरो !
कदम अपने थामें रखो
सूरज को हथेली में उगा
मोम के पंखों को फैला
उड़ना है बादलों पार
उड़ सकोगे मेरे साथ
दुनिया से हो बेपरवाह
कहो !
अंगारों पर चलकर
तपते तन को थाम
या मेरे संग उड़ कर
इक नया जहान बना
ढल पाओगे मेरे संग
तो ठहर जाना

लेकिन ...
वह जा चुका था
शायद जान गया था
मेरे हौसलों से लड़ न पाएगा
मेरे चमकते चेहरे से
डर गया वह
कायर आदमी ।
शायद उसके सांचे
में ढल सकती जो
वो मैं नही थी
वो मैं नहीं थी ।

कहानी की कविता

प्रा. डॉ. मनोहर

पिंकी
जब देखो तब,
कहानी सुनाने की जिद करती
है ।
अब,
मैं उसे कैसे बताऊँ
कि
राजा की, रानी की,
परियों की, राजकुमारों की,
फूलों की, तितली की,
झरनों की, पहाड़ों की
कहानी वाली किताब
खो गई
है ।
और,
अब की कहानी
उसे क्या सुनाऊँगा
जिन कहानियों को
मैं नहीं समझ पाया
उसे कैसे समझाऊँगा?
पिंकी
जिद्दी है
कहानी सुनेगी ।
मैंने कहानी शुरू की --
किसी शहर में,
एक ईमानदार रहता था ।
पिंकी ने पूछा-
मामा, ये ईमानदार क्या होता है?
मैं हकलाया,
ईमानदार का सीधा-सादा
अर्थ नहीं बता पाया ।
पिंकी ने फिर पूछा-
ईमानदार क्या पापा जैसा होता है?
मैं चुप रहा
तो
वो नासमझ जाने कैसे समझ गई --
मास्टरजी जैसा,
पड़ोस वाले चाचा जैसा
या
फिर उस पत्रकार चाचा-सा,
खाकी वरदी वाले इंस्पेक्टर-सा
या
हमारे स्कूल में आए मंत्री जैसा?
बताओ न मामा
तुम चुप क्यों हो गए?
कहानी शुरू करते ही
पिंकी सो गई ।

- मनोहर

बालदिवस को समर्पित दो ग़ज़लें

डॉ. संगम 'वर्मा'

1

बड़ीशिद्दत से पुकारे गुल ए गुलज़ार हो समर
सारी क़ायनात निहारे कहे चिरंजीव रहो समर

माँ की ऊँगली थाम पथ पर बढ़ते जाना समर
श्रवण के जैसे सेवा सुश्रुषा करते जाना समर

सबकी आँखों का तारा बनकर चमकना समर
सुखी पड़ी गगरिया में सागर भरते जाना समर

पालने में तिरी अठखेलियाँ मोह लेती हैं समर
माँ की ममता अंखियन से टोह लेती हैं समर

तिरी तुतलाहट में शहद की मिठास सी है समर
अधरों पे बूँदें ओस की मधुर सुवास सी है समर

आँखों में नूर है सितारा दूर है पर मेरा फितूर है
गाथा प्रेम की अमर है तो सबका संगम समर है

2

हँसते हैं तो ये बड़े अच्छे लगते हैं
ये नन्हें भगवान बड़े सच्चे लगते हैं

छोटे से मुँह में इनके संसार बसा है
नन्द यशोदा के नन्हे कृष्ण लगते हैं

उछलते रहते हैं ये दिन भर आँगन में
बंद मुट्ठी में ये सारा आकाश रखते हैं

गज़ब की ठिठोली है गूफ़्तगू में इनकी
तुतली आवाज़ में बड़े मासूम लगते हैं

बस इक तिरी चाहत पर आमदा है मुझे
मिल जाये तो हर सपने सुहाने लगते हैं

इन्ही से रौनक है इस संसार की संगम
मेरे माथे का चाँद कभी सूरज लगते हैं

परिचय :जन्म - 17 अप्रैल 1985, शिकोहाबाद (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा - एम. ए. (हिन्दी) स्वर्ण पदक, यू.जी.सी. नेट, हिन्दी-2006, पी-एच.डी. (हिन्दी) 2017
सम्प्रति- प्रवक्ता- परास्नातक हिंदी विभाग, सतीश चन्द्र धवन राजकीय महाविद्यालय,लुधियाना, पंजाब
लेखन - 1) मानक हिन्दी व्याकरण,2) मानक हिन्दी कार्यशाला, (संयुक्त लेखन)
उपलब्धियाँ- विभिन्न राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध-पत्र प्रकाशित एवं अनेक राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पत्र वाचन,तीन बार रेडियो पर काव्य पाठन और साक्षात्कार
संपादन - राष्ट्र भाषा हिन्दी स्मारिका,पंजाब
सम्मान - पंजाब स्तरीय 'हिन्दी सेवी सम्मान' सन 2012, 2013, 2014, 2015,2016 ,खन्ना में "युवा कवि सम्मान" से सम्मानित

माँ मेरी माँ

डॉ0 चन्द्रकान्त तिवारी

समय के प्रवाह में,
लहरों की गति पर
हमारी जीवन नैया की पालें
तीव्र गति से गतिमान हैं।

आँखें मूँद लेता हूँ
एक तुम्हारी आकृति
मेरी आँखों में,
मेरे ह्रदय में, है विराजमान
अब यादें नहीं रह गई शेष
तुम्हारी स्मृति ही,
रह गई अवशेष।
धुंध है, साया है।
स्मृति ही सरमाया है।

संभलता हूँ, संभालता हूँ, स्वयं को
स्मृति कोष पालता हूँ।
प्रतिक्षण, प्रतिपल जीवन की दरिया
नित–नित तुम आये, मेरी दिनचर्या।
कैसा हूँ, किस कदर
मैं जीता हूँ
कंकाल हूँ। फीनिक्स पक्षी का
अपनी राख से ही, उठता हूँ।

मैं जब भी दिनचर्या में भरमाता हूँ
तुमको ही निकट पाता हूँ।
वह लोरी गाकर मुझे मनाना,
तुमसे छिपकर मेरा भागना
रात–रात भर, मेरे रोने से
सुबह तक, तुम्हारा जागना।
मेरे गिरने पर
तुम्हारा बेसुध हो जाना,
पास आकर स्पर्श कर,
गोद में उठाना।

अब तक, न भूल सका हूँ।
उन बहुमूल्य रत्नों सी स्मृति
तुम अब भी, जिंदा हो माँ
मेरे रक्त के, कण–कण में।
वह स्मृति अब भी वर्तमान है।

स्तब्ध हूँ, आश्चर्यचकित हूँ
यह सब संभव कैसे
तुम्हारा जलाया शिक्षा रूपी प्रेम का दीपक
मेरे ह्रदय में, अब तक माँ
प्रज्जवलित है।

तुम घर के, हर कोने में
रसोई में, घर–आँगन में
अब तक, नजर आती हो।
तुम नक्षतलोक के, तारामण्डल की भाँति
मेरे जीवन रूपी परिधि के
चारों ओर गतिमान हो।
मरा जीवन अनुगामी है तुम्हारा।
मैं अतीत के पृष्ठों पर वर्तमान का बीज बो
रहा हूँ
माँ अब भी तुम्हारी गोद में सो रहा हूँ।
धूल मिट्टी न लग जाये माँ
अपना आँचल फैला दो माँ।

माँ अब तक याद है मुझको
मेरे छोटे पाँव की कोशिश
तुम्हारे दो हाथ पकड़कर
चलने की थो।
किशोरावस्था में तुम्हारा साथ
पूरे ह्रदय से था।
मेरे चारों ओर, जो सुख शांति थी
तुम ही कारण थी माँ–तुम ही।

आज फिर ढूँढ रहा हूँ माँ
मैं तुमको नित–नित
वह स्पर्श अब, तन को नहीं
हृदय को छूता है।

तुम यूँ रूठ कर, चली गई माँ
अब नहीं आओगी क्या
उस मनहूस दिवस को मैं
अब तक न भूल पाया हूँ
रोता हूँ, पछताता हूँ
स्वयं को सताता हूँ।
तुम्हारी तस्वीर पर लगी धूल को
आँसुओं से मिटाता हूँ।

मेरे नित–नित दिनचर्या के कामों को–माँ
देख रही हो ना
हृदय मंदिर में
तुम्हारे नाम का आसन
अब भी बुन रहा हूँ।
रेत से विलग कर
राई को चुन रहा हूँ।
काँटों से फूलों को
अलग कर रहा हूँ
माँ मेरी माँ .... आज भी
मैं तुमको, साक्षात देख रहा हूँ।

रवि कुमार गोंड़ की कवितायें

मन करता बच्चा बन जाऊं

मन करता मैं
बच्चा बन जाऊं
चढूं भाग्य पर इठलाऊं
झूमूँ, नाचूँ, गाऊं, कूदूँ
सारी दुनिया को मुट्ठी में भर
अपने बस में कर जाऊं |
माँ की गोद और दादी की लोरी
नाना और नानी की कहानी
वह स्वप्न भरी स्नेह की डोरी
मन करता मैं उस बचपन में
फिर से जाकर खो जाऊं
फिर से मैं बच्चा बन जाऊं |
नाना के कन्धों पर बैठकर
मन करता फिर घूमूं मेला
जो चाहूँ मैं जिद करके
अपने मन का ले लूँ खेला
मन करता मैं फिर से
रूठूँ और रोऊँ गाऊं
खेल-खिलौनों की खातिर मैं
इतराउं और इठलाऊं |
मन करता मैं
फिर से अब
वही शरारती बच्चा बन जाऊं
वही शरारती बच्चा बन जाऊं |

पैसा

माँ मुझे तुम पैसा दे दो
मैं भी पैसों के पेड़ उगाऊँगा
बनकर बड़ा आदमी मैं
जग में धूम मचाऊँगा |
छोटे-छोटे सिक्के होंगे
उनसे चाकलेट, लालीपॉप खूब मिलेंगे
झट से निकालूँगा जेब से पैसे
ढेर खरीदूँगा चाकलेटें |
माँ मुझे तुम रूपया दे दो
मैं भी रूपयों का पेड़ उगाऊँगा
दो हजार, पाँच सौ के नोट उगाकर
देश को गरीब मुक्त बनाऊँगा |
न होगा कोई भूखा
न खायेगा कोई रूखा-सूखा
सब ख़ुशी से धूम मचायेंगे
पैसों की न होगी किल्लत
सब रूपयों का पेड़ उगायेंगे |

पतंग

फरीदा खातून

रंग बिरंगे कागज से बन गया पतंग
मन मे उड़ाने की ढेरों उमंग
बांध गले में लंबी डोर
नापने लगा नीले अंबर का छोर
उड़ा गगन में ऊंचा-ऊंचा।
मेघों के संग मन ये नाचा ।
इतने में एक लड़ाकू पतंग आया
तेज माँझे से बना हुआ उसका धागा,
आया गले से पेंच लड़ाया,
मैं भी भिड़ा पर लड़खड़ाया,
फिर लहराते हुए नीचे आया ।
सबकी नजरें मेरी ओर,
मच गया लूटने का शोर ।
इसका-उसका किसका हूँ मैं????
कोई इधर से लपका,
कोई उछल के झपटा,
इस झगड़े में मैं फट गया,
मैं कटी पतंग ।

लघु-कथा

पहचान

`

सुशांत सुप्रिय

उसका चेहरा एक साथ कई लोगों से मिलता-जुलता था जिसकी वजह से वह कई लोगों को कई दूसरे लोगों की याद दिलाता था । उसकी पहचान भी अजीब थी । दक्षिण वाले उसे बंगाली समझते थे । बंगाल वाले उसे तमिल मानते थे । पंजाबी उसे हिन्दी-भाषी समझते थे जबकि हिन्दी वालों ने उसे कभी अपना समझा ही नहीं था । किसी को उसकी आँखों में किसी और की आँखों की झलक मिलती । किसी को उसकी नाक या ठोड़ी जानी-पहचानी लगती तो किसी को उसके होठ और उसका हेयर-स्टाइल किसी और की याद दिला देते । कोई उसके बातचीत करने के अंदाज़ से उसे कोई और समझ लेता तो कोई उसकी वेश-भूषा देख कर धोखा खा जाता ।

अक्सर जब वह अपना परिचय देता तो सामने वाला चौंक कर कहता-- "अरे, आप 'ये' हैं ? मैं तो आपको 'वो' समझता था !" 'ये' या 'वो' उसका पेशा, उसका राज्य या उस से जुड़ा कुछ भी हो सकता था । लोग उसकी उम्र को ले कर भी धोखा खा जाते थे । कुछ लोग उसे तीस-बत्तीस का समझते, कुछ उसे चालीस के आस-पास का मानते जबकि बाक़ी उसकी सही उम्र का अंदाज़ा ही नहीं लगा पाते । "आप बालों को 'डाई ' करते हैं या ये नैचुरली इतने काले हैं ? " अक्सर लोग उससे पूछ बैठते । उसके शादी-शुदा होने या न होने को ले कर भी लोगों में असमंजस और संदेह की स्थिति बनी रहती । यह तब तक रहती जब तक वह स्वयं आपको अपनी सही स्थिति नहीं बता देता । हालाँकि उसके सही-सही बता देने के बाद भी आधे लोग यह मानने को तैयार नहीं होते कि उसने सही कहा है । और तो और , उसका नाम भी अजीब था । नाम से वह कुछ लोगों को गोवा का बाशिंदा लगता , कुछ को केरल का । जब तक वह खुद न बता दे कि वह कहाँ का था , भ्रम की स्थिति बनी रहती । हालाँकि उसके बता देने के बाद भी कुछ लोगों के मन से संदेह पूरी तरह ख़त्म नहीं होता था । वह खुद खिली हुई धूप-सा , चलती हुई हवा-सा , बहती हुई नदी-सा था । वह जब जहाँ होता, वहीं का हो जाना चाहता था ।

चार दोस्तों की पहल

नवीन कुमार जैन

राजू,गुड़िया, मोनिका और मोनू इन चारों की आपस में गहरी मित्रता थी । चारों ही मित्र प्रतिदिन अपने अन्य सहपाठियों के साथ विद्यालय जाते थे । एक दिन मास्टर जी ने बच्चों को प्रकृति संरक्षण का पाठ पढ़ाया , इन चारों ने भी पढ़ा । चारों ही बच्चे रोज की तरह शाम को पार्क में बैठे थे पर आज वो खेल नहीं रहे थे , आज तो उनके मन में मास्टर जी की बताई बातें चल रहीं थी लेकिन सबसे शरारती राजू मिट्टी कुरेद रहा था जैसे ही उसके कुरेदते कुरेदते गड्डा हो गया तो वहाँ से एक पालीथीन निकली, उसने अपने सभी मित्रों को पालीथीन के बारे में बताया । सभी आश्चर्यचकित रह गए उन्होंने सोचा कि हम जो भी इधर उधर फेंकते हैं वह यूँ ही धरती में रह जाता है; इतने में राजू वोला मैंने कल अपने घर के पास लगे नीम के पेड़ के नीचे केले के छिलके फेंके थे, चलो उन्हें देखते हैं । सभी राजू के घर के पास, नीम के पेड़ के नीचे इकठ्ठे हुए और थोड़ा - थोड़ा खोदना प्रारंभ किया पर उन्हें केले के छिलके नहीं मिले । दूसरे दिन वो स्कूल गए उन्होंने मास्टर जी को ये बात बताई तो मास्टर जी ने उनको समझाया कि बच्चों पाॅलीथीन का प्रयोग पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक है इसे यदि हम यूँ ही कहीं फेंक दें मिट्टी में या कहीं भी तो यह सैकड़ों वर्षों तक नष्ट नहीं होती और मृदा को भी प्रदूषित कर अनुपजाऊ बना देती है ; और अगर हम इसे जला दें तो इससे वायु प्रदूषण होता है जिसके कारण हमें श्वांस संबंधी एवं अन्य बीमारियाँ हो सकती हैं । और केला का छिलके या अन्य जैविक अपशिष्ट आसानी से मिट्टी में नष्ट हो जाते हैं, खाद का निर्माण करते हैं इससे मृदा की उपजाऊ क्षमता बढ़ती है । मास्टर जी ने और भी बहुत सी बातें बताईं । राजू,गुड़िया, मोनिका और मोनू को ये जानकर बहुत दुख हुआ कि हमारे पाॅलीथीन का प्रयोग करने से पर्यावरण को खतरा पर फिर भी हम इसका उपयोग करते हैं । उन्होंने एक योजना बनाकर काम किया ; कागज के गत्तों और फूलों की पत्तियाँ आदि से आकर्षक थैले बनाए और उन थैलों को अपने गाँव के प्रत्येक घर पर मुफ्त में बाँटा और बताया कि पालीथीन पर्यावरण के लिए नुकसान दायक है हमें इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए । सभी ग्रामवासियों ने उसी दिन से कागज से बशे थैलों का प्रयोग करने का संकल्प लिया और इस महान कार्य के लिए राजू,गुड़िया,मोनिका और मोनू की न सिर्फ प्रशंसा की बल्कि उन्हें सम्मानित भी किया ।

शिक्षा - हमें अपनी प्रकृति को कभी नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए, पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करना चाहिए और यदि कोई ऐसा करता है तो उसे प्रेम से समझाना चाहिए ।

डॉ प्रदीप कुमार शर्मा की बाल कहानियाँ

लालच का फल

पुराने जमाने की बात है। जामनगर में कपड़े का एक व्यापारी रहता था। नाम था उसका- फोकटमल। वैसे उसका असली नाम सेठ किरोड़ीमल था, परंतु हर समय मुफ्त का माल ढूँढते रहने के कारण उसका नाम सेठ फोकटमल पड़ गया। यथा नाम तथा गुण। वह हमेशा निन्यानबे के फेर में पड़ा रहता था। उस पर हरदम एक ही धुन सवार रहती थी कि किस तरह अधिक से अधिक धन कमाया जा सके।

वह कंजूस भी इतना अधिक था कि स्वयं भी बीमार पड़ता तो दवा-दारू पर खर्च नहीं करता। वह खाना घर में खाता, तो पानी बाहर पीता। पानी की बचत के लिए वह नहाता भी बहुत कम था। उसके घर में शायद ही कभी दो सब्जी बनती हो। सिर्फ त्यौहार एवं विशिष्ट अवसरों पर ही उसके घर में दाल बनता। घर में नमक खत्म हो जाये, तो कई दिनों तक बिना नमक के ही काम चलाना पड़ता।

कपड़े के नाम पर वह धोती के साथ एक बनियान पहनता था। कभी कहीं जाना होता तो अपने विवाह के समय सिलवाया गया कुर्ता कंधे पर डालकर चला जाता ताकि लोग यह न समझें कि उसके पास कुर्ता नहीं है। वैसे उन्होंने उस कुर्ते को शादी के बाद कभी पहना ही नहीं। उनके कपड़े का रंग मटमैला ही रहता क्योंकि वे साबुन के प्रयोग से सर्वथा वंचित जो थे। सेठजी के बीबी-बच्चे उनसे परेशान थे क्योंकि न तो वे स्वयं अच्छा खाते-पीते और न उन्हें खाने-पीने देते। चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए, यही सेठजी के आदर्श थे।

एक समय की बात है। वे कपड़ा बेचने श्यामनगर बाजार जा रहे थे। रास्ते में लम्बा-चौड़ा जंगल पड़ता था। फोकटमल अभी जंगल में घुसा ही था कि सामने से डाकुओं का दल आ धमका। डर के मारे उसके होश उड़ गए। डाकुओं ने फोकटमल के सारे पैसे तथा कपड़े लूट लिए और उसे खूब पीटने के बाद एक पेड़ से बाँधकर भाग गए।

कुछ देर बाद वह होश में आया। लूट जाने का दुख तो था ही, वहाँ बंधन में पड़े-पड़े भूखे-प्यासे मरने तथा जंगली जानवरों का आहार बन जाने की भी आशंका थी। वे जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगे।

उधर से एक साधु महाराज कहीं जा रहे थे। फोकटमल की आवाज सुनकर वे उसके पास आए। उसे बंधनमुक्त करने के बाद पूछे- ''वत्स, तुम्हारी दशा कैसे हुई।''

राते बिलखते फोकटमल ने सारी राम कहानी साधु महाराज को कह सुनाई। साधु महाराज ने धीरज बंधाते हुए कहा- ''चिंता मत करो ! प्रभु सब कुछ ठीक कर देंगे।''

''क्या खाक ठीक होगा महाराज, मैं तो किसी को मुँह दिखाने के भी काबिल नहीं रहा। कल का सेठ किरोड़ीमल आज सड़क पर आ गया।'' सेठ ने कहा।

साधु महाराज को सेठ पर दया आ गई। उन्होंने पूछा- ''कितने रुपयों के कपड़े थे।''

सेठ ने कहा- ''लगभग सत्रह सौ रुपये के थे महाराज।''

साधु महाराज ने अपने कमण्डल से एक-एक करके सौ-सौ रुपये के सत्रह नोट निकाले और बोले- ''ये रखो तुम्हारे सत्रह सौ रुपये।''

सेठ फोकटमल की आँखे खुली की खुली रह गईं। उसे लालच के भूत ने धमकाया। वह संभलकर बोला- ''महाराज, मैंने सत्रह सौ नहीं, सत्रह हजार रुपये बताये थे।''

''कोई बात नहीं, ये लो सत्रह हजार रूपये।'' कहते हुए साधु महाराज ने एक-एक करके बहुत से सौ-सौ रूपये के नोट निकालकर दे दिए। पर फोकटमल के लालच की भी सीमा न थी। बोला- ''महाराज, मैंने सत्रह हजार नहीं, सत्तर हजार रुपये कहा था।''

फोकटमल के लालच को देखकर साधु महाराज थोड़ा परेशान जरूर हुए, फिर भी मन ही मन कुछ निर्णय लेकर कहा- ''ठीक है, ये लो सत्तर हजार रूपए।''

फोकटमल अब सत्तर हजार रूपए लेकर घर लौटने लगा। रास्ते में उसने सोचा यदि साधु महाराज का कमंडल ही उसे मिल जाए तो कुछ भी किए बगैर वह रातों-रात अरबपति बन जाए। वह तेजी से जंगल की ओर लौटने लगा। कुछ ही दूरी पर उसे साधु महाराज भी मिल गए। वह बडे प्रेम से बोला- ''महाराज ये सत्तर हजार रुपए आप अपने पास रख लीजिए और कृपा कर अपना कमंडल मुझे दे दीजिए।

''जैसी तुम्हारी इच्छा। ये लो।'' साधु महाराज ने कहा और उसे अपना कमण्डल दे दिया।

कमण्डल पाकर फोकटमल की खुशी का ठिकाना न रहा। वह साधु महाराज को धन्यवाद देकर घर की ओर प्रस्थान किया। घर पहुँचकर वह जैसे ही कमण्डल में हाथ डालकर बाहर निकाला तो कुछ भी नहीं निकला। तीन-चार बार ऐसा करने पर जब कुछ भी न मिला तो उसने अपना सिर पीट लिया।

// **सबक** //

बहुत पुरानी बात है। नंदनवन में एक तालाब था। उसके किनारे एक बेल का पेड़ था। उस पेड़ पर एक नटखट बंदर रहा था। वह दिन भर उछलकूद करता रहता था। इस पेड़ से उस पेड़ और इस डाली से उस डाली पर वह छलांग लगाकर ऐसे-ऐसे करतब दिखाता कि दूसरे जानवर दाँतों तले ऊँगली दबा लेते। बंदर को शरारत करने में बहुत मजा आता था।

तालाब में पानी पीने जंगल के सभी जानवर आते थे। बंदर उन्हें खूब सताता। वह कभी उन्हें बेल फेंककर मारा करता, तो कभी उनकी पूँछ खींचकर पेड़ पर जा बैठता। सभी जानवर पेड़ पर नहीं चढ़ सकते। अगर कोई पेड़ पर चढ़ भी जाता तो बंदर उसको देखते ही देखते हवा में गोता लगाता हुआ दूसरे पेड़ पर जा पहुँचता और वह जानवर हाथ मलता रह जाता। सभी जानवर बंदर की इन कारगुजारियों से परे शासन थे।

एक दिन भालू ने एक सभा बुलाई। उसने कहा- ''मनुष्य से मिलते-जुलते इस जानवर ने मनुष्य के समान ही हमारी नाक में दम कर रखा है। इसे किसी प्रकार से सबक सिखाना होगा ताकि भविष्य में वह किसी को परेशान न कर सके।''

''लेकिन वह तो हमारी पकड़ में आता ही नहीं, हम उसे कैसे सबक सिखाएँ ?'' एक नन्हे खरगोश ने अपनी चिंता जताई।

बात सही थी। सभी सोच में पड़ गए।

''मैं उसे सबक सिखाऊँगी।'' एक नन्हीं गिलहरी की आवाज सुनकर सभी जानवर चौक पड़े। सामने आकर गिलहरी ने अपना परिचय देकर योजना बताई जो सबको पसंद आई। सबने उसे शुभकामनाएँ दी और सभा समाप्त हो गयी।

योजनानुसार अगले दिन कुछ जानवर तालाब पर पानी पीने गए। स्वभाव से मजबूर बंदर पेड़ की डाली पर आराम से बैठकर बेल तोड-तोड़कर उन्हें मारने लगा। इधर नन्हीं गिलहरी चुपचाप पेड़ पर चढ़ गई और फूर्ती से बंदर की पूँछ को अपने नुकीली दाँतों से काट दिया जो कटकर नीचे गिर गया। बंदर दर्द से बिलबिला उठा।

सारे जानवर बंदर की कटी पूँछ को पकड़ कर **'दुमकटा बंदर' 'दुमकटा बंदर'** उसे कहकर चिढ़ाने लगे।

// अनुभव //

मनोज दसवीं कक्षा में पढ़ता था। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान था। पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ वह खेलकूद में भी बहुत तेज था। वार्षिक परीक्षा समाप्त हो चुकी थी । उसके सभी पर्चे अच्छे हुए थे। इसलिए वह निश्चिन्त था। उसने निश्चय किया कि वह गर्मी की छुट्टियों में अपने पापा जी के साथ उनकी दुकान पर बैठेगा ताकि उसे कुछ अनुभव भी हो और समय भी कटे।

उसके पिता जी की शहर के सदर बाजार में किराने की दुकान थी। वे अपनी सहायता व सुविधा के लिए एक नौकर भी रखते थे। वे अक्सर मनोज से अपनी पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देने को कहा करते थे। वे अभी से उसमें दुकानदारी का मोह पलने नहीं देना चाहते थे।

रात को भोजन के समय मनोज ने पापा जी से छुट्टियों में दुकान पर बैठने की बात कही।

''मनोज बेटे, अभी आपको पढ़ाई की तरफ ध्यान देनी चाहिए। दुकानदारी के लिए तो सारी उमर पड़ी है।'' पापा जी ने समझाया।

मनोज कुछ कहता उससे पहले ही उसकी मम्मी ने घुसपैठ कर दी- ''मान भी जाइए ना, बस छुट्टियों में ही तो बैठने की बात है। कुछ सीख भी लेगा ताकि आवश्यकता पड़ने पर काम आ सके।''

''ठीक है, आप लोगों की यही इच्छा है तो कल से ही दुकान पर चलने के लिए तैयार हो जाओ।'' पापा जी ने हथियार डाल दिए। मनोज का मन खुशी से झूम उठा।

अब मनोज अपने पापाजी एवं नौकर के साथ दुकान पर बैठने लगा। धीरे-धीरे उसे भी चीजों के नापतौल, भाव आदि याद हो गए। वह ग्राहकों को सामान तौलकर देता और हिसाब कर उनसे रुपये ले लेता। धीरे-धीरे उसकी लगन, मेहनत और ग्राहकों के प्रति उसके व्यवहार से पापा जी भी आश्वस्त हो गए।

दो माह कब बीत गए, उसे पता ही नहीं चला। इस बीच उसका परीक्षा परिणाम भी निकल गया। वह प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ था।

एक दिन दुकान से घर आते समय उसके पिताजी की मोटर सायकल को एक ट्रक ने ठोकर मार दी। उन्हें कुछ लोगों ने अस्पताल पहुँचाया। उन्हें कई जगह गंभीर चोटें लगी थी, सो उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।

मनोज और उसकी मम्मी बारी-बारी से उनके साथ अस्पताल में रहते। इस बीच उनकी सारी जमा पूँजी दवा-दारू तथा डाक्टरों की फीस में भेंट चढ़ गई। दस दिन बाद उन्हें अस्पताल से तो छुट्टी मिल गई, पर मनोज के पिता जी पूर्ण स्वस्थ नहीं हो पाए थे। डाक्टरो ने उन्हें कम्पलीट बेडरेस्ट की सलाह दी थी।

मनोज ने सोचा ऐसे तो काम नहीं चलेगा। कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। एक्सीडेण्ट के बाद से दुकान बंद थी, क्योंकि सिर्फ नौकर के भरोसे दुकान नहीं छोड़ा जा सकता था। उसने मम्मी से बात की कि वह स्कूल समय के अलावा बचे समय में सुबह-शाम कुछ देर नौकर के साथ दुकान पर बैठेगा, ताकि कुछ आमदनी हो और ग्राहक भी न टूटें। मम्मी पहले तो कुछ झिझकीं पर बाद में मनोज के जोर देने पर "हाँ" कर दी।

अब मनोज नौकर के साथ दुकान पर बैठने लगा। दुकान पहले की तरह चलने लगी।
कुछ ही दिनों में मनोज के पिता जी भी पूर्ण स्वस्थ हो गए। इस प्रकार मनोज की दुकानदारी का अनुभव समय पर काम आया।

हास्य कथा -- " कवि बौड़म और पाण्डुलिपि की खोज "

अरविन्द कुमार

'कवि बौड़म ने किताबें खरीद कर पढ़ने की अच्छी आदत कभी नहीं डाली | वह ज़्यादातर माँगकर लाता था | कभी - कभार चुराकर भी किताबें पार कर देता था | वैसे भी उसके ज़्यादातर दिन कड़की भरे ही बीतते थे | सच पूछिए तो इस मंहगाई मे किताबें खरीदने की उसकी कभी औकात ही नहीं हुई | लेकिन पढ़ने का अच्छा शौक भरपूर बना हुआ था | उसे पढ़ने को कुछ न कुछ जरूर चाहिए होता था , वरना उसका हाजमा खराब हो जाता था | अब किताबें माँगकर ले जाना तो ठीक है , लेकिन उन्हें वापस न लौटाने की उसकी बीमारी बहुत खराब थी | इसका कारण यह था कि उन्हीं किताबों को बाद मे किसी बेचकर या फिर रद्दीवाले को देकर वह अपने कई खर्चे निकाल लेता था | सो , अधिकांश परिचितों ने उसे किताबें देना ही बंद कर दिया |

उधर किताबों की दुकानों पर लगे सीसी टीवी कैमरों ने चोरी की गुंजाइश भी खत्म कर दी थी | सो , बौड़म ने आजकल एक पुराने और सड़ियल टाइप के खानदानी पुस्तकालय की शरण ले ली थी | इस पुस्तकालय का भवन काफी जर्जर और किताबों का रख - रखाव बेहद खराब था | यहाँ का मालिक और संचालक लाइब्रेरियाँ कम कामेडियन ज्यादा लगता था | सो कवि बौड़म भी वहाँ पढ़ता कम , बकैती ही ज्यादा करता था | शुरुआत मे वहाँ के लाइब्रेरियन बाबू पर अपना प्रभाव जमाने के चक्कर मे बौड़म ने अपनी ऊट पटांग कविताएं सुना - सुना कर उसे पका डाला | सो , उस बाबू ने बौड़म की कविताओं से अपना पिंड छुड़ाने के लिए उसको लीक से हटकर जूनियर जेम्स बॉन्ड की जासूसी कॉमिक्स व वेदप्रकाश शर्मा के जासूसी उपन्यास व कहानियाँ पढ़ने का चस्का लगा दिया |

अब हुआ ये कि उस बाबू ने बौड़म की कविताओं से तो अपना पिंड छुड़ा लिया , लेकिन बौड़म को कविता के साथ ही जासूसी का शौक चढ़ा दिया | बौड़म छिद्रान्वेषी होने लगा | छोटी - छोटी बातों पर कविता के बजाय जासूसी पेंच गढ़ने लगा | पढ़ने वाले चश्मे की जगह खुर्दबीन लेकर घूमने लगा | सिर पर गांधी टोपी की जगह एक कटी - फटी हैट और शरीर के देशी कुर्ता पाजामे के ऊपर एक पुरानी कई जेबों वाली जैकेट चढ़ गई | परिणामतः कवि बौड़म उन लाइब्रेरियन बाबू को अपनी घिसी - पिटी कविताओं की जगह बेसिर - पैर के जासूसी कारनामों से भी पकाने लगा | वह दावा करने लगा कि किसी भी छोटे - मोटे केस को वह चुटकियों मे हल कर सकता है |

बहरहाल , एक दिन कवि बौड़म जब रोज की तरह अपने घर से पुस्तकालय की ओर निकलने ही वाला था | तभी उसने लाइब्रेरियन बाबू को स्वयं अपने घर की ओर तूफान मेल की तरह आते देखा | वही थुल - थुल करती चर्बी चढ़ी काया , सफ़ेद कुर्ता - पाजामे का सूती

और मटमैला ड्रेस, उस पर पड़ी मुँह मे भरे हुए पान की लाल - लाल बेतरतीब छींटे | एक चैन के सहारे नाक पार अटका हुआ गोल फ्रेम का गाँधी चश्मा , जो उनका ब्राण्ड बन गया था | घिसटती हुई हवाई चप्पल पर डंडे की तरह लहराती हुई टाँगें | बौड़म ने दूर से ही झट पहचान लिया , वो हूबहू वही थे | लेकिन वो सोचने लगा कि दिन चढ़े ही ताबड़तोड़ कदम बढ़ाते हुए ये इधर क्या करने चले आ रहे हैं ?

बौड़म कुछ और सोचता या समझ पाता , उसके पहले ही लाइब्रेरियन बाबू उसके दरवाजे तक पहुँच गए | उन्होने कमरे के अंदर दाखिल होने के लिए अपना कदम बढ़ाया ही था कि एक 'धड़ाम sssss की जोरदार आवाज हुई | जैसे किसी आतंकवादी ने बौड़म के घर मे बम विस्फोट कर दिया हो | | .....और फिर "हाय मैं मरा ..... बुहूहूहू.... " की करुण आवाज से उस पुराने कमरे की दीवारें हिल गई | मानो कोई छोटा - मोटा भूकम्प आ गया हो | - " ये चीख की आवाज तो शायद पढ़ाकू बाबू की है ?" आवाज का अनुमान करते हुए बौड़म फौरन दौरवाजे की ओर लपका | देखता क्या है कि लाइब्रेरियन बाबू बिना किसी लाग लपेट के साष्टांग प्रणाम की मुद्रा मे मुँह के बल औंधे गिरकर धराशायी हो चुके हैं | कराहने व अजीब सी बेसुरी रोने की आवाज़े उन्ही के गले से बड़ी मुश्किल से निकल रही थी | घर के भीतर घुसने की जल्दबाजी मे वे पुरानी और ऊँची ड्योढ़ी से अटक कर अनायास ही भरभरा कर गिर पड़े थे |

आगंतुक की दुर्दशा देख बौड़म का कवि हृदय जलती हुई मोमबत्ती की तरह पिघल गया| परिणामतः , किसी दयालु व्यक्ति की तरह वह तत्काल अपने शरणागत की रक्षा के लिए तत्पर हो उठा | बेहद फुर्ती दिखाते हुए उसने अपनी कमजोर और सींकिया बाहें फैलायी| उन्हे उठाने के प्रयास मे तेजी से नीचे झुका | लाइब्रेरियन बाबू की बाहें पकड़ कर ऊपर की ओर खींचने की कोशिश की | लेकिन हड़बड़ी मे वह अपना स्वयं का भी वजन संभाल न पाया और लाइब्रेरियन बाबू के ऊपर ही लुढ़कता चला गया | - 'भडामssss' परिणामतः लाइब्रेरियन बाबू की एक और दर्द भरी चीख कमरे की दीवारों को सुन्न करती चली गई | - " हाय - हाय , मार डाला रे ssss पापड़ वाले को |"

"आँय... अरे ! ये क्या हुआ पढ़ाकू बाबू ?" - किसी तरह खुद को संभाल कर उठाने के बाद बौड़म ने बड़े प्यार से उन्हें भी सहारा देकर उठाते हुए पूछा | " हुआ क्या खाक ? तुम्हें दिख नहीं रहा या समझ नहीं आ रहा ?" - पढ़ाकू बाबू किसी फुस्स हुए पटाखे की तरह फट पड़ने की कोशिश करते हुए बोले | लाइब्रेरियन बाबू को कवि बौड़म प्यार से पढ़ाकू बाबू ही संबोधित करता था | क्योंकि वो लाइब्रेरी के रख रखाव मे भले ही ज्यादा रुचि नहीं ले पाते थे , किन्तु अपना टप्पे जैसा चश्मा लगाए ज्यादा से ज्यादा किताबें पढ़ने की कोशिश मे जरूर लगे रहते थे |

बहरहाल , बौड़म की चिकनी चुपड़ी बातों का उन पर कोई असर पड़ता नहीं दिखा | बल्कि वो तो सहानुभूति के दो बोल सुनते ही बौड़म पर पूरी ताकत लगाकर फिर से फट पड़े - " अमां, लानत है बौड़म मियाँ ! किसी के इस्तक बाल यानी स्वागत सत्कार का ये कौन

सा तरीका है ? अमां , तुम्हें रहने के लिए बाबा आदम के जमाने की यही दड़बानुमा हवेली मिली थी , जिसे तुम घर कहते हो | ....और मिली भी थी , तो कम से कम ये मनहूस ड्योढ़ी को तो बदलवा देते | अगर इसे तुमने फर्श के बराबर करवा दिया होता तो कम से कम इस समय मेरी ये हालत नहीं होती |" उनकी आवाज मे दर्द के साथ - साथ शिकायत और गुस्से की मात्रा भी अच्छी - ख़ासी थी |

"ओहो , अब गुस्सा छोड़ो भी पढ़ाकू बाबू और ये बोलो कि कहीं ज्यादा चोट तो नहीं लगी ? ठहरो मैं पानी और कोई दवा लेकर आता हूँ |" - कहते हुए कवि बौड़म भीतर की ओर पलटा तो पढ़ाकू बाबू फिर फट पड़े | उसी पिनक मे चीखते - कराहते हुए बोले - "क्या समझते हो कि चोट मेरे दिल - दिमाग या गुर्दे तक पहुँच गई है ? अरे , इतने से मुझे कुछ नहीं होने वाला | मैंने भी वैद्य झड़ी-भूटी लाल की लिखी सेहत सुधारने की सैकड़ों किताबें पढ़ रखी है समझे ? अरे ! तुम्हारे जैसों की किताबी लत का खयाल न होता तो आज मैं भी कोई खांटी हकीम होता , हूँह ! बड़े आये दवा लाने वाले | अब भी मेरे लिए कुछ करना ही है तो पहले इस ड्योढ़ी को ठीक करवा लो |"

उनका दर्द भरा पारा और चढ़ते देख बौड़म को आत्म समर्पण करना पड़ा | मिमियाते हुए बोला - "हाँ , हाँ | मैं जानता हूँ , मैंने आपको पढ़ाकू बाबू जैसा नाम यूँ ही थोड़े दे रखा है | आपकी हर काबिलियत का लोहा मानता हूँ | आपके ज्ञान को प्रणाम करता हूँ | आखिर, आप भी अंग्रेजों के जमाने के लाइब्रेरियन ऐसे ही थोड़े हैं |" लल्लो - चप्पों वाली इस चाशनी भरी बोली से पढ़ाकू बाबू कुछ नार्मल हुए तो बौड़म ने फिर पुचकारा - " अब गुस्सा थूकिए भी बाबू जी ! चलिये , ये तो बताइये कि आपने अपने कृशकाय चरण कमलों को इधर का कष्ट क्यों दे दिया ? जबकि आपको पता था कि मैं उधर बस पहुँचने ही वाला था|"

अब तक पढ़ाकू बाबू उठकर बैठ चुके थे | थोड़ा संयत होते हुए बोले - " हाँ मुझे पता था ,लेकिन बात ही कुछ ऐसी थी कि मुझसे देर करना बर्दाश्त नहीं हुआ | तुमसे तत्काल बताना बहुत जरूरी हो गया था |"

"ऐसा भी क्या हो गया ?" - कवि बौड़म की उत्सुकुता अचानक ही बहुत बढ़ गई थी |

"अब क्या बताएँ बौड़म जी ? दरअसल , वो जो अपने यहाँ एक बहुत पुरानी कविताओं की एक पाण्डुलिपि थी न ? ....वह अचानक गायब हो गई है | कल से एकदम लापता हो गई है|"

कवि बौड़म जैसे आसमान से गिरा - "कौन ? वही स्वामी भड़भड़ा नन्द जी वाली .... जो अवधी बोली मे लिखी हुई थी ? जिसका मै खड़ी हिन्दी मे अनुवाद करने की योजना बना रहा था ?"

"हाँ हाँ , वही पाण्डुलिपि है बौड़म जी | उसका अनुवाद आप जैसे किसी बौड़म कवि से करवाना मेरा बहुत पुराना सपना था | जो अब लगभग टूट चुका है |" - पढ़ाकू बाबू का यह दर्द ड्योढ़ी पर लगी चोट से भी कई गुना ज्यादा जान पड़ता था , जो अब उनके दिल से निकलकर सीधा बौड़म के दिल मे घुस गया था | इस दर्द की अधिकता व गंभीरता से बौड़म

के माथे पर भी पसीना चुहचुहा आया | मर्मांतक पीड़ा की रेखाएँ अचानक ही उसके चेहरे पर भी साफ - साफ पढ़ी जा सकती थी |

बौड़म कुछ देर तक दर्द के गहरे सागर मे मन ही मन विचारों का चप्पू चलाते हुए डूबता उतराता रहा | जब किनारा मिलता न दिखा तो उसके मन मे उसकी ही रची हुई एक साहस भरी कविता की कुछ पंक्तियाँ हलचल मचाने लगी - "बौड़म वह डगमगाती नैया ही क्या , जो पार लगने से पहले बह जाय | वह लम्बी सी मोमबत्ती ही क्या , जो रात ढलने से पहले गल जाय ? वह बड़ी से बड़ी समस्या ही क्या , जो सुलझाने से पहले ही हल हो जाय| वह पाण्डुलिपि की चोरी ही क्या , जो जासूस बने बौड़म की छानबीन से बच जाय |" फिर अचानक उसकी विचारों वाली डूबती नैया किसी किनारे जा लगी | फिर वह किसी धीर गंभीर कवि की तरह बोला - " पढ़ाकू बाबू ! चिन्ता मत करिए | हमीं ने दर्द दिया है , हमीं दवा देंगे |"

ये शेर सुनते ही पढ़ाकू बाबू का पारा सीधे सातवें आसमान पर पहुँच गया | बिना कुछ सोचे समझे लगे छाती कूट - कूट कर दहाड़ने - "क्या मतलब बौड़म जी ? क्या अपने ही वह पाण्डुलिपि चुराई है जो अब वापस कर देंगे ? मुझे कम से कम आपसे तो यह उम्मीद नहीं थी | ये क्या कर दिया आपने ? मुझे तो आपकी इस घोर कारस्तानी पर कुंटलों शर्म आ रही है | दुकानों से किताबे चुराने की आपकी आदत क्या कम बुरी थी , जो अपने लाइब्रेरी से पांडुलिपियाँ भी चुरानी शुरू कर दी ? उस पर भी तुर्रा यह कि उसे वापस करके पूरी ईमानदारी की क्रेडिट भी ले लेंगे | छिः , मुझे तो शर्म आती है, आपकी ऐसी ओछी सोच पर| हाय - हाय ! ये क्या सोचा था क्या हो गया ? जिसे मीठा आम सोचा था , वह खट्टा अमरूद बन गया | ... बुहूहूहूssss |" वो किसी विधवा स्त्री की तरह हाथ - पाँव पटकते , छाती पीटते हुए रोते - कलपते ही चले जा रहे थे |

"अरे - अरे , पहले मेरी बात का सही मतलब तो सुनिये |" - बौड़म ने उन्हे चुप करने का प्रयास किया तो वे अपने हत्थे से और उखड़ने लगे | " अरे क्या खाक सुने तुम्हारी | अब इस शेर के आगे और कहने सुनने को रख छोड़ा है तुमने ?" पढ़ाकू बाबू अचानक दोनों हाथ ऊपर करके पागलों की तरह गाते हुए चीखने लगे - " देख तेरे संसार की हालत , क्या हो गई भगवान ? कितना बदल गया इंसान ? कविता न बदली , पढ़ाकू न बदला , बौड़म हुआ बेईमान | हाय - हाय रे ! कितना बदल गया इंसान ?"

एक प्रसिद्ध भजन के इन बोलों की ऐसी दुर्गति पूर्ण प्रस्तुति देखकर कवि बौड़म को समझते देर न लगी कि ये पढ़ाकू जी उससे भी बड़े बौड़म हैं | जो किसी गलत फहमी के शिकार होकर बिना सोचे समझे , बिना दही - नमक का रायता फैलाते ही चले जा रहे हैं | अचानक ही फैलते जा रहे इन पढ़ाकू जी को तत्काल चुप करना जरूरी था | वरना , अभी ये हो हुल्लड़ सुनकर मुहल्ले वाले भी पहुँच आयेंगे और बात का बतंगड़ बनाना शुरू कर देंगे | लेकिन पढ़ाकू जी कई कोशिशों के बाद भी वह सीधे से मान ही नहीं रहे थे | तब.... ?

.....क्या करें , ...क्या करें ? सोचते - सोचते अचानक कवि बौड़म ने वहाँ रखा एक पका हुआ आम का फल उठाया और जल्दी मे सीधे पढ़ाकू जी के खुले मुँह मे ठूँस दिया |
"ढुबक - ढुबक... , - अचानक ही पढ़ाकू जी का भट्ठे जैसा खुला हुआ मुँह दो तीन हिचकियों के साथ ही 'फुल स्टाप' हो गया | बौड़म भुन्नाते हुए बोला - "तेरे इस पागलपन की अब दूसरी दवा क्या है ?"

"गूं - गूं SSSsss " - पढ़ाकू जी चीखने और मुँह खुलवाने की असफल कोशिश करते हुए फड़फड़ाने लगे | बौड़म जल्दी से बोला - " पहले मेरी बात ध्यान से सुनो | मेरी शायरी का वह मतलब नहीं था जो तुमने कूद कर अपनी मोटी बुद्धि से निकाल लिया | अरे , मेरे कहने का मतलब यह था कि मेरी वजह से वह पाण्डुलिपि बंद अलमारी से निकलकर बाहर आयी थी न ? अब मैं ही उसे अपनी जासूसी खोपड़ी से खोजकर वापस भी ले आऊँगा | समझे....?"

ये सुनते ही पढ़ाकू बाबू की बन्द खोपड़ी का ताला भक्क से खुल गया | फटाफट बौड़म की बात से सहमति मे ऊपर नीचे सिर हिलाने लगे | साथ ही मुँह मे ठूँसा हुआ आम भी वापस निकालने का इशारा करने लगे | तब बौड़म ने उनके हलक मे धीरे से हाथ डालकर वह आम वापस खींच लिया | दो तीन बार 'हुच्च - हुच्च' करके पढ़ाकू बाबू थोड़ा संयत हुए तो फिर बौड़म को डाँटने लगे - "ये बात मुझे पहले नहीं बता सकते थे ? खामखाँ मेरे पान का मजा किरकिरा कर दिया .....|" फिर बौड़म के हाथ से अपने मुँह का उगला हुआ आम छीनकर बड़े प्यार से बोले - "........और साथ मे इस प्यारे से मीठे आम का भी | लाओ , पहले इसी से थोड़ा गला तर करता हूँ |" ....और फिर किसी हबशी की तरह पढ़ाकू बाबू उस आम को नोचने - खसोटने लगे | उनके मुँह पर पान की लाली के साथ ही आम का पिचपिचा रस फैलने लगा , जो अब अजीब सी वितृष्णा पैदा करने लगा था | लेकिन मामला संभलते देख कवि बौड़म के होठों पर मुस्कान आ रही थी |
जब आम पूरी तरह निचुड़ कर सिर्फ गुठली रह गया तो पढ़ाकू बाबू ने स्वाद से भरपूर संतुष्टि वाली जोरदार डकार मारी | फिर कवि बौड़म से बोले - " तो चले भाई लाइब्रेरी की ओर ? आखिर पाण्डुलिपि की खोज के नेक काम मे भी अब देरी ठीक नहीं ?" उनकी जबान मे आमरस से उपजी अजीब सी मिठास भर आई थी , जिससे कवि बौड़म काफी राहत महसूस कर रहा था | उसने मुसकुराते हुए कहा - " इस नामुराद आम की गुठली को आपके शातिर पंजों से आजादी मिले तब तो आगे बढ़ें |"

" हें हें हें हें sssss " - पढ़ाकू बाबू ने अजीब सी हँसी हँसकर उस गुठली को बड़ी हसरत भरी निगाहों से देखा | आखिरी बार उसे दांतों से भींचकर जी भर कर चूसा और फिर बड़े बेमन से अपने कुर्ते की एक जेब मे डालते हुए बोले - ' चलो भाई ! ये लालच भी न , इंसान को बड़ा स्वार्थी बना देती है | सोच रहा हूँ अब इस गुठली से कुछ और मजा न मिला तो इसे सुखाकर कूट लूँगा | सुना है इसका चूर्ण पेट दर्द मे बड़ा फायदे मंद होता है |" बौड़म ठहाका लगा कर बोला - "हाँ भाई हाँ , आखिर इसे ही तो आम के आम और गुठलियों के

दाम कहते हैं |" जवाब मे पढ़ाकू बाबू भी ही-ही करके हँस दिये | इसके बाद दोनों लाइब्रेरी की ओर आगे बढ़ चले |

थोड़ा आगे बढ़ते ही अचानक बौड़म को कुछ याद आया - " अरे पढ़ाकू बाबू ! मैं जल्दबाज़ी मे एक जरूरी चीज तो भूल ही गया | आप थोड़ी देर यहीं खड़े रहिए | मैं दौड़कर दो मिनट मे अपनी खुर्दबीन या आतिशी शीशा ले आता हूँ | उसके बिना सही मौका मुआइना नहीं हो पाएगा |" इतना कहकर बौड़म सरपट घर की ओर भागा |

"हाँ हाँ ठीक है , ले आइए |"

और सचमुच थोड़ी ही देर मे सारे खटारा , टूटे - फूटे जासूसी उपकरणों के साथ बौड़म पुस्तकालय के गेट पर हाजिर था | ये सारी चीजे उसने इस पुस्तकालय से ही पार की हुई कुछ बेकार किताबों के बदले अपने कबाड़ी से बदल कर लिए थे | पढ़ाकू बाबू को ये मामला भी पता चल गया होता तो उनका हार्ट अटैक होने से कोई नहीं रोक सकता था | बहरहाल , खुशी की बात ये थी कि आज इसका उद्घाटन भी उन्ही की लाइब्रेरी से हो रहा था |

लाइब्रेरी के पास पहुँचकर बौड़म ने बड़े ध्यान से किसी खाँटी जासूस की तरह पहले आस - पास का मुआइना किया | फिर गंभीर होते हुए बोला - "पढ़ाकू बाबू ! इससे पहले कि मैं अपना काम शुरू करूँ , मुझे आप से कुछ निहायत जरूरी और गंभीर सवालों के जवाब चाहिए |" पढ़ाकू बाबू के कदम यह सुनते ही जहाँ के तहाँ अटक गए | शंकालु दृष्टि से कवि बौड़म को देखते हुए बोले - " हाँ हाँ पूछिए | यही तो एक अच्छे और सच्चे जासूस के लक्षण होने चाहिए | मुझे खुशी है कि तुमने मेरे पढ़ाये हुए कॉमिक्स और कहानियों से सचमुच बहुत कुछ सीख लिया है |" अपनी प्रशंसा सुनकर बौड़म का सीना फूल कर छप्पन इंच का हो गया | वह और उत्साह मे आ गया | पूछताछ शुरू करते हुए बोला -" हाँ तो पढ़ाकू बाबू ! मेरे सवालों को काफी ध्यान से और गंभीरता पूर्वक सुनिए , फिर काफी सोच समझ कर पूरी ईमानदारी और नेक नीयती से उसका उत्तर दीजिये |"

"जी पूछिए......" - पढ़ाकू बाबू की घुटी घुटी सी धीमी आवाज उनके कंठ से बड़ी मुश्किल से निकली | लगा कि वे किसी मुलजिम की तरह , किसी कोर्ट मे , किसी सख्त सजा देने के लिए मशहूर , किसी गुस्सैल जज के सामने , किसी कटघरे मे खड़े है | मानो पाण्डुलिपि की चोरी का इल्जाम सीधा उन्ही पर लगा हुआ है | बौड़म के भीतर से मानो किसी मँजे हुए विदेशी जासूस की आत्मा बोल रही थी - " हाँ तो पढ़ाकू बाबू ! पहले ये बताइये कि आप इस लाइब्रेरी मे कितने दिनो से काम कर रहे हैं ?"

"ये ....ये..... कैसा सवाल है ? क्या आप मुझ पर ही शक कर रहे हैं ?" - पढ़ाकू बाबू कुछ भड़कने को हुए तो बौड़म ने उन्हे डपटने के अंदाज मे कहा - " चुप करिए और सीधे - सीधे मेरे सवालों का जवाब दीजिये | ....और हाँ यह भी सुन लीजिये कि जासूसी का पहला सिद्धान्त यही है कि हर शख्स पर शक की सुई रखो | बाल की खाल खींच लो | एक छोटा सा क्लू या सुराग भी हमे अपनी मंजिल तक बड़ी आसानी से पहुंचा सकता है | समझे ?"

पढ़ाकू बाबू को अब लगा कि उनका ऊँट सचमुच किसी पहाड़ के नीचे आ गया है | इसकी बात मानने मे ही भलाई है | वरना अपना ज्ञान परोस-परोस कर उनका हाजमा बिगाड़ देगा | किसी बकरे की तरह मिमियाते हुए बोले - "मैं ss मैंsssss यहाँ बचपन से काम कर रहा हूँ | ये लाइब्रेरी मेरे बाप - दादा ने शुरू की थी भाई | अरे खानदानी लाइब्रेरियन हूँ |" ये कहते हुए पढ़ाकू बाबू का सीना गर्व से चौड़ा हो गया | इस रुतबे का तत्काल असर बौड़म पर भी पड़ा | उनके सम्मान मे उसका अगला सवाल थोड़ा मुलायम हो गया |

- "हूँ ... तो इसकी पूरी देखभाल सिर्फ और सिर्फ आपके ही जिम्मे है ?"

"जी हाँ , इसमे कोई शक नहीं है |"

"आपके अलावा और कितने कर्मचारी काम करते हैं इसमे ? - बौड़म का दूसरा सवाल फिर भभकता हुआ ही था |

"अरे कोई और नहीं भाई ! कहा तो कि मैं इकलौता 'वन मैन टीम' ही यहाँ का सब कुछ हूँ | अरे नई कितबे खरीदने के पैसे तो हैं नहीं मेरे पास | कोई कर्मचारी रखकर उसे तनख्वाह कहाँ से दूँगा ? तुम तो खुद इतने दिन से यहाँ आकर देख रहे हो |" - अपनी आर्थिक हालत पर पढ़ाकू बाबू को मानो रोना आ गया | कवि बौड़म ने उनकी दुखती रग पर शायद ज्यादा ज़ोर से हाथ रख दिया था | बिना पूछे ही आगे बताते चले गए - "इसी तंगहाली की वजह से तो आज तक मेरा विवाह भी नहीं हो पाया | अब यह पाण्डुलिपि भी न मिली तो अपनी बाप - दादों की संपत्ति खोने के अफसोस मे कुँवारा ही स्वर्ग सिधार जाऊंगा | बुहूहूहू ....|" उनको मानो फिर से रोना आ गया था |

" अच्छा....अच्छा , चुप करिये , शांत रहिए | ये बताइये कि इस लाइब्रेरी मे और कितने लोग आते जाते हैं ?"

" ...और कितने लोग ? अमां मियाँ ! लोगो को पढ़ने का शौक भी रह गया है कहीं ? ये तो कहो तुम्हारे जैसा एकाध बंदा इस दुनिया मे अभी जिंदा है , जिसने मुझे भी जीने का मकसद दे दिया है | वरना पिछले अनेक वर्षों से मैं यहाँ अकेला ही मक्खियाँ मारता रहा हूँ |" - पढ़ाकू बाबू का सब्र छलकता ही जा रहा था | लगता था कि अब लाउड स्पीकर छाप भों - भों करके रोना बस शुरू ही करने वाले है |

आखिर कवि बौड़म ने मामले को थोड़ा हल्का बनाने की गरज से सवालों का सिलसिला स्थगित कर दिया | कहने लगा - " कोई बात नहीं | लगता है ज्यादा सवालों से कोई लाभ भी नहीं होगा | चलिये , इसके बाद मौका मुआइना भी कर लेते हैं |"

"हाँ हाँ चलिये | मैं ताला खोलता हूँ |"

पढ़ाकू बाबू आगे बढ़े | काफी देर तक चाबी के साथ किचिर - पिचिर करने बाद बड़ी मुश्किल से जंग लगा हुआ ताला खुला | फिर ज़ोर के धक्के के साथ उसका भारी दरवाजा भी चूँ चर्र करते हुए धकेल कर खोला गया | अभी दोनों ने भीतर कदम रखने के लिए अपना पैर बढ़ाया ही था कि एक बड़ा सा काले रंग का चमगादड़ झपट्टा मारकर उनसे टकराया फिर हड़बड़ाकर उनके सिर के ऊपर से निकल भागा | - "हें हें हें हें , चमगादड़ है जी | यहाँ का

पुराना निवासी है | इसे दिन मे दिखता नहीं है | इसीलिए हमसे टकरा गया |" पढ़ाकू बाबू खीसे निपोरते हुए बोले | हालाँकि अचानक हुई इस घटना से दोनों हड़बड़ा कर एक दूसरे पर गिरते - गिरते बचे थे | एक कदम पीछे हटते हुए पढ़ाकू बाबू बोले - " लगता है कुछ अशुभ घटने वाला है | हम थोड़ा रुककर भीतर चलते हैं |"

बौड़म बोला - "तो आप इतने पढ़ - लिख कर भी अंधविश्वासी ही रह गए | चलो कोई बात नहीं | आप को खड़े रहना है तो खड़े रहिए | मैं भीतर जा रहा हूँ | बौड़म किसी शुभ घड़ी की प्रतीक्षा नहीं करता | बल्कि शुभ घड़ी हमेशा बौड़म की प्रतीक्षा करती रहती है | समझे ? "

बौड़म किसी चतुर चालक जासूस की तरह भीतर घुसा | नीचे झुककर अपनी खुर्दबीन से एक - एक खाली जगह पर पड़े निशानों की समीक्षा करते हुए आगे बढ़ने लगा | पीछे - पीछे पढ़ाकू बाबू भी मजबूरन घुसते आए | उनका दिल ज़ोरों से धाड़ - धाड़ करके बज रहा था | उनके चेहरे पर सुबह के दस बजने से पहले ही बारह बजते हुए दिखाई पड़ रहे थे | उनके मन का वहम कम करने की गरज से बौड़म ने उनसे आगे बातचीत करनी शुरू कर दी - " .. ...लेकिन एक बात और बताइये पढ़ाकू बाबू ! अभी तो आपने कहा था कि यहाँ आपके अलावा कोई और नहीं रहता | फिर ये चमगादड़ कहाँ से आ गया ?"

पढ़ाकू बाबू रोनी सी सूरत बनाते हुए कहने लगे - "अरे भाई , मेरा मतलब था कि यहाँ मेरे अलावा कोई दूसरा इंसान नहीं रहता है | अरे ! चींटी , मक्खी , दीमक , चूहे , बिल्ली , चमगादड़ आदि ..... , इन सबको हम कहाँ तक रोक सकते है ? पुरानी बिल्डिंग है | ये सब तो आते जाते ही रहते हैं |"

अचानक बौड़म फर्श के धूल पार कुछ पंजों के निशानों पर गौर फरमाता हुआ बोला - "यहाँ पर किसी बड़ी बिल्ली के घुसते हुए पंजे नजर आ रहे हैं | आखिर ये बिल्ली भीतर घुसी ही क्यों है ? उसके लिए यहाँ दूध मलाई तो रखी नहीं रहती |" - बौड़म ने खुर्दबीन से उसके पंजों के निशान का मुआइना करते हुए पूछा |

"क्या बात करते हैं बौड़म जी ! दूध मलाई तो खुद मैंने भी महीनों से नहीं चखा |" - पढ़ाकू बाबू अपने होंठों पर जीभ फिरते हुए बोले |

"तब आखिर ये बिल्ली यहाँ क्यों घुसी ? यहाँ उसने बच्चे तो नहीं दे रखे ?....और अगर ऐसा है तो आपको फौरन 'बच्चों का पालन पोषण कैसे करें ?' नामक किताब चेक करे | हो सकता है वह यहाँ यही पढ़ने आयी हो | ....और अगर नहीं भी आयी तो आपको खुद ये किताब उसे पढ़ने के लिए दे देनी चाहिए |"

"हें हें हें हें SSSSS , आप भी अच्छा मज़ाक कर लेते हैं बौड़म जी |" - पढ़ाकू बाबू फिस्स से हँस कर रह गए तो बौड़म ने मानो उनको डांट दिया - " ये हंसने की बात नहीं है | आखिर बिल्ली यहाँ किसी न किसी वजह से ही आयी होगी | उसके साथ ही किसी और जीव के पंजों के निशान दिख रहे हैं | जरा गंभीरता से सोचिए पढ़ाकू बाबू ! कुछ अकल भी खर्च

करिए न... | मुझे ये मामला भी संदिग्ध लग रहा है |" बौड़म ने अगले पदचिन्हों का मुआइना करते हुए कहा |

पढ़ाकू बाबू सचमुच गंभीर हो गए | अपना भी सिर भी उसी खुर्दबीन मे घुसेड़ने की कोशिश करते हुए बोले - " कुछ सुराग मिल रहा है क्या बौड़म जी ?"

"तब क्या , मैं यहाँ सिर्फ तफरीह करने के लिए सर खपा रहा हूँ ?" - बौड़म ने थोड़ा भाव खाकर कहा |

"बताइये जल्दी , मुझे भी बताइये " - पढ़ाकू बाबू अधीरता से बोले |

"अरे ये खोपड़ी खुर्दबीन से दूर करिए और धैर्य भी रखिए | यूं बच्चों की तरह मचलना आपको शोभा नहीं देता |" - बौड़म ने एक बार फिर उन्हे डपटने के अंदाज मे कहा तो पढ़ाकू बाबू किसी भीगी बिल्ली की तरह दुबक कर पीछे हट गए |

" ये , ये .... अरे ये क्या है ? कुछ जाना - पहचाना सा लगता है |" बौड़म किसी चीज पर निगाह टिकाते हुए बोला | लेकिन इस बार पढ़ाकू की कुछ बोलने की हिम्मत न पड़ी कि कहीं बौड़म उन्हे फिर न डपट दे | वे काफी देर तक चुप ही रहे तो बौड़म ने ज़ोर से डपट कर कहा - " आपसे ही अब मैं कुछ पूछ रहा हूँ तो सुन नहीं रहे हैं | वैसे तो बहुत पकर - पकर कर रहे थे |"

"आँय , भला क्या है दिखाइए तो ...?" - पढ़ाकू बाबू जैसे नींद से जागकर सिटपिटा उठे | बौड़म ने एक छोटी चिमटी से किसी मँजे हुए जासूस की तरह एक नन्हें कागज का टुकड़ा बड़ी सावधानी से उठाया और उसे पढ़ाकू बाबू की आँखों के सामने किसी सरप्राइज़ की तरह लहराने लगा |

"क्या है ये ?' - पढ़ाकू बाबू अपनी ऐनक को नाक पर ठीक करते हुए मिचमिची आँखों से देखने की कोशिश करने लगे | लेकिन दिमाग पर काफी ज़ोर डालने के बावजूद उन्हे कुछ समझ मे नहीं आया | वह टुकड़ा था ही इतना छोटा , जिसे खुर्दबीन से ही देखा जा सकता था और पतली नुकीली चिमटी से ही पकड़ा जा सकता था | अब उनके पुराने चश्मे मे इतना दम कहाँ रह गया था ? बेचारे धूप मे बैठे अन्धे उल्लू की तरह बस बौड़म को ताकते रहे |

अब बौड़म ने शेख़ी बघारी - "बहुत बड़ा सुराग मिला है पढ़ाकू बाबू | हो न हो , ये उसी पुरानी पाण्डुलिपि जैसे कागज का टुकड़ा है , जो किताबों के रखरखाव के प्रति आपकी घोर लापरवाही साफ दर्शा रहा है ...| आखिर आप इतनी बड़ी लापरवाही कैसे कर सकते हैं पढ़ाकू बाबू ? आपके होते हुए पुरानी किताबों के पन्ने यहाँ - वहाँ कैसे भटक रहे हैं ? हो न हो , उस पाण्डुलिपि के साथ भी कोई ऐसा ही हादसा हुआ होगा |"

"नहीं ssssss |" हादसे की बात से पढ़ाकू बाबू बेसाख्ता चीख पड़े | बौड़म ने लपक कर उनका मुँह दबाकर चुप कराया - "अरे थोड़ा धैर्य रखिए , पहले भी समझा चुका हूँ | मुझे और खोजने दीजिये | बाद मे इकट्ठा हाय तोबा मचा लेना |" उसकी खुर्दबीन फिर अपने काम मे मगन होकर आगे बढ़ने लगी | थोड़ी ही देर बाद बौड़म फिर चीखकर बोला - " हे हे , ...ये.....मारा ssss | मिल गया ... पकड़ लिया रे |"

“अब क्या मिला ?”

“ये देखो , वही है वही |”

“अरे वही क्या ? बौड़म जी !”

“अरे उसी पांडुलिप वाले कागज के टुकड़े का बड़ा भाई | यानी उसी का थोड़ा और बड़ा टुकड़ा | मेरी खोज सही दिशा मे आगे बढ़ रही है |”- बौड़म खुशी से चीखता हुआ बोला |

लेकिन पढ़ाकू बाबू के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी - “ बौड़म बाबू ! अगर ये सचमुच उसी पाण्डुलिपि के कागज का टुकड़ा है तो फिर ये छोटे - छोटे टुकड़े - टुकड़े मे क्यों मिल रहा है ? कहीं उसके साथ सचमुच कोई अनहोनी तो नहीं हो गई ? बुहूहूहू..... |” उनका मन दहाड़ें मार कर रोने का हो रहा था |

“अरे चुप करिये जी | बात - बात मे बच्चों की तरह पिनिक्की बहाने लगते हैं | ये अपनी पानी जैसी बहती हुई पतली नाक का रस और बेवजह के आँसू किसी और दिन के लिए संभाल कर रखिए पढ़ाकू बाबू |”

“क्या करूँ ? तुम्हारी हर खोज के साथ मेरा दिल और भावुक होने लगता है | मुझे माफ कर दो |”

बौड़म की खुर्दबीन धूल मे कुछ निशान या सबूत की तलाश मे तेजी से आगे बढ़ती जा रही थी | अचानक बिल्ली के पंजों के साथ ही उसे एक प्रकार के निशान और दिखे - “.....और अब ये देखो ...ये किस जीव के निशान हैं ?” “क्या है , क्या है ?” - पढ़ाकू बाबू ने फिर से बौड़म के साथ ही जमीन मे सर घुसा कर जानने - समझने की कोशिश किया , लेकिन सफलता न मिली | वो इस गुत्थी को अभी सुलझा भी नहीं पाये थे कि उन्हें थोड़ी दूर पर कुछ लाल रंग के धब्बे दिखाई दिये | बौड़म चिहुँक उठा - “अब ये क्या है ? कहीं खून तो नहीं ?” खून का नाम सुनते ही पढ़ाकू बाबू की घिग्घी बंध गई | उनके मुंह से अबकी कुछ बोल ही न फूटा |

बौड़म ने पास जाकर ध्यान से मुआइना किया तो खुद भी डर के मारे उछल गया | चीखते हुए कहने लगा - “ ये खून ही है | सचमुच का खून | लगता है थोड़ी ही देर पहले यहाँ किसी का खून हो गया है |”

“क्या सचमुच ऐसा हो गया है ? ऐसी किताबों के लिए खून तो मैंने जेम्स हेडली चेज़ के उपन्यासों मे ही होते हुए पढ़ा है | लेकिन यहाँ .... मेरी लाइब्रेरी मे .....? हे भगवान ! ये कैसी अशुभ घटनाएँ हो रही है ? अब तो लगता है पुलिस केस होकर रहेगा | बौड़म जी ! कहीं पुलिस मुझे ही इस खून के आरोप मे गिरफ्तार न कर ले ? हाय - हाय अब मेरा क्या होगा ? मेरे जेल जाने के बाद इस लाइब्रेरी का क्या होगा ?” - पढ़ाकू बाबू की पिनिक्की इस बार कुछ ज्यादा जोरों से बह निकली थी |

“चुप करो पढ़ाकू बाबू ! पहले जांच पूरी तो होने दो | देखने समझने तो दो कि आखिर किसका खून हुआ है ? ....और यदि सचमुच किसी का खून हुआ है तो लाश भी यहीं कहीं होनी चाहिए |”

"लाश.....? क्या कहा .....लाश ? अगर यहाँ किसी का खून हुआ है तो वो जरूर अब तक भूत बन गया होगा | वह भूत हमे जिंदा खा जाएगा बौड़म जी | चलो जल्दी बाहर निकलो | भागो यहाँ से | लगता है है ये लाइब्रेरी अब भूतिया हो गयी है | चलो,यहाँ से निकलो बौड़म बाबू ! हमे नहीं खोजना वो पाण्डुलिपि , ...इस तरह से अपनी जान जोखिम मे डाल कर |" भय का भूत पढ़ाकू बाबू के सिर चढ़ कर बोलने लगा था | लेकिन बौड़म ने अपना होश हवास दुरुस्त रखने की कोशिश करते हुए उनकी पीठ पर एक हल्की सी धौल जमाई | - "अरे अभी रुको भी , इतना मत डरो पढ़ाकू बाबू ! ऐसे ही दिनों के लिए मैं गले मे हनुमान जी का लॉकेट डाले रहता हूँ | कोई भूत प्रेत हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता समझे ?"

हनुमान जी का नाम सुनते ही पढ़ाकू बाबू उछल कर बौड़म के गले से लिपट गए | - "जय हनुमान ज्ञान गुण सागर , जय कपीस तिहूं लोक उजागर | भूत पिशाच निकट नहीं आवें , महावीर जब नाम सुनावें |" डर के मारे पढ़ाकू बाबू का शरीर सूखे पत्ते की तरह काँपने लगा था | बौड़म ने हिम्मत बांधते हुए उन्हें झिंझोड़ कर अपने शरीर से अलग किया और उन्हे सांत्वना देते हुए बोला -" जरा ठहरिए , दूर रहिए मुझसे | मुझे अपना काम आगे बढ़ाने दीजिये | लाश की खोज करना बहुत जरूरी है | यहाँ असल मुद्दा यह है कि क्या ये पाण्डुलिपि सचमुच किसी के लिए इतनी महत्वपूर्ण थी , जिसके लिए किसी का खून भी हो सकता है ?" बड़ी मुश्किल से पढ़ाकू बाबू थोड़ा परे हटे तो बौड़म अपने मन का भय दबाकर किसी मंजे हुए जासूस की तरह फिर से खोज मे जुट गया |

जरा सा आगे बढ़ते ही खून की बहुत सी छींटे पड़ी हुई दिखी , जिसे देखकर इतनी हिम्मत वाला कवि बौड़म भी सचमुच थोड़ा घबरा गया | लेकिन हिम्मत जुटा कर फिर पास गया और फिर आगे उसे जो चीज देखने को मिली उससे वह मानो उछल ही गया | या यूं कहें कि बौड़म भी बेहोश होते - होते बचा - " यहाँ खून से लथपथ किसी का कोई कटा हुआ अंग पड़ा है | ये खून की बूंदे हो न हो , इसी की होंगी |"

"क्या ....? लाश का खून से लथपथ ...कटा हुआ अंग | अरे बाप रे , बचाओ sssssss खून .....खून.... !" बिना कुछ देखे और आगे सुने ..... पढ़ाकू बाबू इस बार डर के मारे सीधे बाहर को भागने को हुआ | एकदम सरपट | लेकिन डर की अधिकता से एक आलमारी से टकराकर गिरा और वहीं लुढ़कते - लुढ़कते बचा | कवि बौड़म ने उसका हाथ पकड़ कर खींचा और चुपचाप सब कुछ देखते रहने को कहा |

बौड़म ने हिम्मत न हारी | खुर्दबीन पर नजरें टिकाकर ध्यान देखते हुए उस कटे हुए अंग को चिमटी से सावधानी पूर्वक उठाया | एक प्लास्टिक की थैली मे डाला | फिर आसपास अतिरिक्त निरीक्षण करने लगा | वहाँ हर तरफ बेतरतीब ढंग से कुछ किताबें फैली हुई थी या यूं कहें कि बिखरी हुई थी | अलमारी पर , कुर्सी पर , मेज पर और फर्श पर भी | वहाँ कोई भी छोटा मोटा जानवर या कम लंबा या दुबला पतला चोर आसानी से इन किताबों के बीच छुपकर बैठा हो सकता था | ये खयाल आते ही अचानक उसकी छठी इंद्रिय सतर्क हो उठी |

उसने पास पड़ा एक एक कुर्सी का टूटा हुआ हत्था उठाया और उसे किताबों के पीछे की खाली जगह मे घुसा - घुसा कर 'हुस्स - हुस्स' करने लगा | एकदम पगलेटों की तरह |
अब पढ़ाकू बाबू भी बौड़म की इस कारस्तानी को उसके ठीक पीछे खड़े होकर आश्चर्य पूर्वक उचक - उचक कर देखने लगे | तभी किताबों के बीच एक आहट सी हुई | कुछ खुदबुदाने की आवाज आयी | फिर एक भूचाल सा उठा | कुछ किताबें ऊपर को और दायें - बाए उछली | दो भयानक रूप से जलते हुए अंगारे भभके | एक तेज खौंखीयानी सी आवाज गूँजी | ..... बौड़म तेजी से सहम गया | लेकिन जब तक वह संभलता या पीछे हटता , एक काला सा , झबरा सा , चार पैरों वाला भयंकर सा जीव उछला | उसके मुंह मे ताजा , गाढ़ा , लाल रंग का खून लगा हुआ था | किसी खीझे हुए पिशाच की तरह उसने सामने दिखे बौड़म के ऊपर छलांग लगा दी | लेकिन बौड़म किस्मत का धनी निकला | उसका सिर थोड़ा झुका हुआ था | जिसकी वजह से वह उसकी खोपड़ी के ऊपर से गुजरता हुआ निकल गया |
लेकिन हाय री किस्मत ! पढ़ाकू बाबू न बच सके | वे उसी समय बौड़म के ठीक पीछे से उचक - उचक कर झांक रहे थे | उस भयानक जीव के पंजे उन्हीं के चेहरे से जा टकराये | उन्होने दोनों हाथों से अपना चेहरा बचाने की कोशिश तो किया , किन्तु संभल न सके | भयंकर जीव उनके हाथों और चेहरे को लहूलुहान करता हुआ पीछे को निकल गया , लाइब्रेरी के खुले दरवाजे की ओर | पढ़ाकू बाबू की जोरदार चीख गूँजते ही घबराया हुआ बौड़म पीछे पलटा | हाथ मे लिए हुए लकड़ी के हत्थे को , उस भागते जीव पर बिना कुछ सोचे - समझे दे मारा | जवाब मे एक और जोरदार चीख गूँजी | लेकिन दुर्भाग्य से इस बार भी यह चीख भी पढ़ाकू बाबू की ही थी - "अरे सचमुच मार डाला रे sssss |" पढ़ाकू बाबू एक बार फिर चारों खाने चित्त हो चुके थे |
अब पता चला कि बौड़म का डंडा उस भयंकर जीव को न लगकर पीछे - पीछे उचक रहे पढ़ाकू बाबू के सिर पर ही बज गया था | लेकिन बौड़म ने अब भी हिम्मत न हारी | पढ़ाकू बाबू को छोड़ करके पहले उस जीव को ठीक से देखने के लिए उसके ही पीछे ही भागा | बाहर दरवाजे तक दौड़ता हुआ आया | वह जीव तो न पकड़ा जा सका | लेकिन बौड़म ने भागते हुए उसकी एक झलक देख लिया था | वह बड़ा ही खूँखार बिल्ला था | जो इस मुहल्ले के आस - पास अक्सर देखा जाता था ..... चूहों जैसे शिकार की तलाश मे |
"चूहे ....?" - अचानक , चूहों की बात ध्यान मे आते ही बौड़म के दिमाग मे जैसे घंटियाँ बज उठी | 'हाँ चूहे .....? चूहे तो लाइब्रेरी मे भी हो सकते हैं | तो क्या यह बिल्ला चूहों की तलाश मे लाइब्रेरी मे घुसा था ? तब तो आज भी इसने चूहे का ही शिकार किया होगा | तो क्या वह खून से लथपथ कटा हुआ अंग भी चूहे का ही था ?' उसकी जासूस बुद्धि बड़ी तेजी से काम कर रही थी | वह फौरन खुली धूप के उजाले मे आया | प्लास्टिक की झिल्ली से उस कटे हुए अंग को बाहर निकाला | खुर्दबीन को उसके ऊपर करके ध्यान से देखा | पहचानते ही खुशी से बल्लियों उछल पड़ा | - " अरे ! ये मारा पापड़ वाले को | ये तो चूहे की ही कटी हुई पूँछ है भाई | कत्ल और खून का रहस्य अब खुल चुका है | पाण्डुलिपि का

चोर भी अब पकड़ा ही समझो | असली चीज लगता है वहीं मिलेगी |" खुशियों से भरा बौड़म फिर किसी घोड़े की तरह चौकड़ी भरता हुआ वापस भागा | छलांग मारकर लाइब्रेरी के भीतर पहुँचा और घटना स्थल पर कूद कर गिरा |

- "हाय - हाय , फिर से मार डाला रे sssss | अरे मनहूस तेरा सत्यानाश हो, तुझे कीड़े पड़े| तेरी किताब कभी न छपे , छपे भी तो किसी को पढ़ने को मयस्सर न हो |" ये पढ़ाकू बाबू की तीसरी चीख गूँजी थी और बाद मे उनके दर्द भरे , उलाहने भरे प्रवचन शुरू हो गए थे | जैसे ही बौड़म ने अपने पैरों के नीचे किसी गुलगुली सी चीज का अहसास किया तो उचककर पीछा हटा | देखता क्या है कि उसका पाँव पढ़ाकू बाबू के हाथों को कुचलता चला गया था |

"अरे बाप रे ! आज उठते ही पढ़ाकू बाबू ने किसका मुंह देख लिया था ? अभी और कितनी दुर्गति करवायेंगे ये अपनी ?" - लेकिन जैसे ही उसे ध्यान आया कि पढ़ाकू बाबू ने तो आज सुबह - सुबह बौड़म का ही मुंह देखा था तो वह सिटपिटाकर खुद ही चुप हो गया | बहरहाल , अभी उसे किसी की भी , कोई भी बात , गाली या प्रवचन सुनने की अथवा माफी मांगने की भी , बिलकुल फुर्सत न थी | अपनी झोंक मे वह सीधा किताबों के उसी ढेर मे घुसता चला गया , जहाँ से निकल कर भयंकर बिल्ले ने उस पर हमला बोला था | अब वह तेजी से वहाँ की किताबों को उलटने - पुलटने लगा था | फिर अचानक एक किताब को देखते ही वह खुशी के मारे पगला गया | " मिल गई रे sssss ,मिल गयी sssss | अरे पढ़ाकू बाबू ! मिल गयी रे ..... तेरी पाण्डुलिपि | ये देख ! उठ जा मेरे भाई ! सारा दुख दर्द भूल के उठ जा रे |" फिर बौड़म अपनी खुशी की झोंक मे उसी जगह नाच - नाच कर गाने भी लगा - " उठ जा .....ऐ मेरे भाई .....कि खुशी की ..... ये दोपहर .... फिर न आएगी.... |" उसके जासूसी शरीर पर फिर से कवि बौड़म की आत्मा प्रवेश करने लगी थी |

उधर , पढ़ाकू बाबू के कानों तक भी जब ये रस भरे शब्द पहुंचे , तो मानो 'ग्लूकोज की बोतल ' बनकर बिना सिरिंज के ही तत्काल सारे शरीर मे घुल गए | उनके रक्त मे ऊर्जा का संचार होने लगा | ये खबर दर्द से निजात दिलाने वाली 'पैरासीटामाल' नामक दवा से भी तेज काम कर गयी थी | कराहते , लुढ़कते , लुंजपुंज से हो गए पढ़ाकू बाबू उठने की कोशिश करते हुए दो बार और भरभरा कर गिरे | लेकिन बदले मे उनके चेहरे पर दर्द की लकीरों की जगह खुशियों भरी मुस्कान ही दिखी | फिर तीसरी बार भी वे गिरते , इससे पहले ही बौड़म ने उन्हे सहारा देकर खड़ा कर दिया | पढ़ाकू बाबू चहक कर बोले, "अरे! सच मे बौड़म भाई ? अरे ! मेरा कहा सुना माफ करना मेरे यार , मेरे भाई ! मेरे दोस्त , ...मेरे जानी दुश्मन !" ये चौथा शब्द बड़े धीरे से उनके गले से निकला था , जिसे बौड़म ठीक से सुन न सका | बस दोनों खुशी के मारे लिपट गए | एक दूसरे की बलैया लेने लगा | एक दूसरे की तारीफ़ों का दौर भी चला | काफी देर के बाद , जब ये 'भरत मिलाप' सम्पन्न हुआ तो दोनों उस पाण्डुलिपि समेत उस हल्के अंधेरे से बाहर निकले और साफ उजाले मे आकर सुकून की साँसे लेने लगे |

अब बौड़म ने फिर से खुर्दबीन जेब से निकाली और पहले मिले हुए कागज के टुकड़ों और पाण्डुलिपि के पन्नों को आपस मे मिला कर इस घटना की सारी कड़ियाँ जोड़ने लगा | अचानक उसकी नजर पाण्डुलिपि के ऊपरी पन्ने पर लगे काले दाग पर पड़ी | वो उसे ध्यान से देखने के बाद उस पर नाक रगड़कर सूंघते हुए बोला - " अभी तक तुमने किताबों के ऊपर रखकर नाश्ता करने की आदत नहीं छोड़ी पढ़ाकू बाबू ?"

"ये कैसा सवाल है बौड़म बाबू ? अरे घोडा घास से कब तक दोस्ती निभाएगा भाई ? अपना तो खाना - पीना और सोना भी कभी - कभी इन किताबों पर होता ही रहता है | आखिर इन्हीं की वजह से तो रातदिन यहाँ पडा रहता हूँ | अब थोड़ा सा इनका इस्तेमाल इस तरह भी हो जाता है तो इसमे बुराई क्या है ?"

" बुराई ही तो है पढ़ाकू बाबू ! आपकी इन्हीं खराब आदतों की वजह से यह भयंकर घटना यहाँ हुई है |"

"मेरी वजह से बौड़म जी ?" - पढ़ाकू बाबू की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गई |

"हाँ बिलकुल आपकी वजह से |" - बौड़म ने रहस्य का आवरण हटाते हुए कहा |

"किसी दिन आपने इस किताब पर रखकर कहीं से लाये हुए चाकलेट वाले पेड़े - बर्फी खाये थे | उसके चूरे और उसकी तीखी महक इस किताब के पन्ने मे चिपकी रह गई | बाद मे कुछ खाने पीने की तलाश मे घूमते हुए चूहे इस किताब तक पहुँच गये | चाकलेट की स्वादिष्ट महक से आकर्षित चूहे इस पाण्डुलिपि को खींचकर उस कोने मे ले गये थे | जहाँ वह चाट- चाट कर या खुरचकर इसकी मिठाई का रसास्वादन कर रहे थे | इसी खींच घसीट की प्रक्रिया मे इसके पन्नों के कुछ टुकड़े फट भी गये थे | जो मुझे खुर्दबीन से तलाशी के दौरान प्राप्त हुए थे | इस बीच इन चूहों की तलाश मे घूम रही वह भयंकर बिल्ली भी यहाँ तक पहुँच गई | उसने चूहों को पकड़ कर दबोच लिया और खा गयी , जिनका खून उसके मुंह पर लगा था और आसपास भी छिटका था | धूल मे पंजों के निशान देखकर मुझे पहले ही किसी ऐसे जानवर के यहाँ होने का शक हो गया था | खून से लथपथ वह कटा हुआ अंग भी एक चूहे की पूँछ का हिस्सा था | सारे सबूत उस संभावित बिल्ले की ओर ही इशारा कर रहे थे , जिसे भगाने के लिए मैंने जल्दबाज़ी मे डंडे का इस्तेमाल करके खड़बड़ाहट की | वहाँ सचमुच छुपी बिल्ली ने उसी वजह से खतरा भाँप कर मुझ पर हमला बोला | नीचे झुके होने की वजह से मैं तो बच गया , किन्तु मेरे ठीक पीछे से उचक कर देख रहे आप उससे सीधे टकरा गये | उसी हमले मे आपको खरोंचे लगी और आप गिरकर नई चोटें खा गये |"

" बुहूहूहू.....! यही तो सबसे बुरा हुआ मेरे साथ | ....पर ये पाण्डुलिपि तो इतनी बड़ी घटना के बाद भी काफी सुरक्षित लग रही है | है न ?" - पढ़ाकू बाबू लंबी साँस खींच कर बोले |

" हाँ , वह भी उस बिल्ली की ही दया है | उसने सही वक्त पर पहुँचकर चूहों को शिकार जो बना बना लिया था | वरना आपकी चाकलेट की महक तो उस किताब की ऐसी चीरफाड़ करवाती कि उसके पुर्जे भी पहचान मे न आते | बस कवर के ही कुछ हिस्से कटे - फटे हैं , जो मैं आसानी से 'रिपेयर' कर दूंगा |"

"आपका बहुत - बहुत धन्यवाद बौड़म जी ! आपने एक धरोहर को नष्ट होने से बचा लिया |"
"धन्यवाद उन चूहों को भी जिन्होने अपनी जान देकर आपकी गलती की सजा भुगती और धन्यवाद उस बिल्ली को भी दीजिये , जिसने आपको भी गंदी आदत की सजा देकर एक नया सबक सिखाया |"
"हाहाहाहा sssss" - दोनों का एक मिलाजुला ठहाका गूँजा और फिर दोनों ही हँसते हुए पहले पढ़ाकू बाबू के खरोंच भरे चेहरे की , फिर उस कटी - फटी पाण्डुलिपि की मरहम पट्टी और मरम्मत मे जुट गये | ------------------------

संक्षिप्त परिचय - अरविंद कुमार 'साहू' (देश के जाने माने बाल साहित्यकार)

जन्म तिथि - 15 अक्तूबर 1969 (उत्तर प्रदेश , भारत)
पिता का नाम - श्री राम अभिलाष साहू . माता का नाम - श्रीमती केदारा देवी
शिक्षा - स्नातक (1989) एमएमएम पीजी कॉलेज , कालाकांकर (अवध विश्वविद्यालय ,फ़ैज़ाबाद)
प्रकाशन - पिछले 30 वर्षों से कहानी , कविता , गजल , लेख आदि विभिन्न विधाओं मे लेखन | बाल साहित्य मे विशेष रुचि | कॉमिक पात्र कवि बौड़म का सृजन | देश की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं मे 200 से अधिक रचनाएँ प्रकाशित | अनेक कवि सम्मेलनों मे सहभागिता एवं साहित्यिक कार्यक्रमों मे सम्मानित |
पुस्तकें -- नीम भवानी (खंड काव्य), कवि बौड़म की हास्य कथाएँ , परियों का पेड़ , जंगल मे फटफटिया (बाल कहानी संग्रह) , गुड़िया रानी आओ जी (बाल कविता संग्रह) शीघ्र प्रकाश्य |
जागरण जंक्शन साप्ताहिक मे फीचर संपादक | मधुर सरस मासिक , सारा समय न्यूज एवं सुपर इंडिया साप्ताहिक मे साहित्य संपादक तथा अपूर्व उड़ान बाल मासिक एवं जयविजय ई पत्रिका मे सह संपादक रहे | कई अन्य पत्रिकाओं के विशेषांकों का संपादन एवं सम्पादकीय सहयोग |
संप्रति - स्वतंत्र लेखन , शेयर बाजार मे फ्रैंचाइजी प्रबन्धक एवं जीवन बीमा एवं म्यूचुअल फंड कार्य से सम्बद्ध |

बाल कहानी

धुएँ को बाँध लो

शीला पांडे

सुलेमान और समीर दोनों अगल–बगल छोटे–छोटे घरों में रहते थे।

उनके घरों में मात्र एक दीवार का ही फर्क था। शहर में अक्सर ही लोगों को छोटी जगहों में रहना पड़ता है।

सुलेमान और समीर अभी–अभी ही उछलते–कूदते स्कूल से अपने–अपने घरों को आये थे।

घर पहुँचते ही सुलेमान दे देखा 'अब्बू उसकी अम्मी पर आज फिर बिफर रहे थे। अम्मी चुपचाप एक कोने में खड़ी थीं। इससे पहले भी कई बार सुलेमान ने अपनी अम्मी को बेबस होते हुए देखा था।

सुलेमान की अम्मी को जब भी कोई डाँटता सुलेमान को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। सुलेमान अब बड़ा हो रहा था। वह हर हाल अपनी अम्मी की मदद करना चाहता था।

इसी बीच पड़ोसी मिश्रा जी के यहाँ से शंख बजने की आवाज आयी तो सुलेमान को सारा माजरा समझते देर न लगी। जब–जब पड़ोसी, मिश्रा अंकल के यहाँ शंख बजती थी। हर बार सुलेमान के घर में भूचाल आता था।

सुलेमान के अब्बू यहाँ से वहाँ पैदल पैंतरा मार रहे थे। अम्मी को सख्त हिदायत दी जा रही थी कि सुलेमान आज बिल्कुल भी खेलने बाहर न जाये।

सुलेमान के घर के दरवाजे की घंटी घनघना उठी। खेलने का समय हो गया था। मिश्रा जो का बेटा समीर सुलेमान के घर के दरवाजे की घंटी बजा रहा था।

दूर से देखते ही सुलेमान के अब्बू ने समीर को उल्टे पाँव वापस लौटा दिया था।

समीर सोच रहा था 'मैं भगवान जी की पूजा छोड़कर खेलने आ गया था इसीलिए शायद मुझे खेलने को नहीं मिला।' समीर पश्चाताप से भर कर वापस अपने घर जाकर पूजा में बैठ गया था। पहली बार आज हवन कार्य में उसने भी हाथ बँटाया था।

सुलेमान के घर की आवाजें काफी तेज हो गयीं थीं। सुलेमान की अम्मी ने आज चुप्पी तोड़ दी थी। उनकी भी आवाजें स्पष्ट सुनाई दे रहीं थीं 'कोई भूत–प्रेत नही हाँक रहा है एक साधारण सी पूजा करते हैं ये लोग और कुछ नही।'

सुलेमान के अब्बू लगभग चिल्ला पड़े थे। 'फिर वे आग की परात को लाकर पड़ोंसियों के घर के बगल में क्यों रख जाते हैं अपने घर में ही रखें न? सारी अला–बला तो हमारे घर में छोड़ जाते हैं सारा धुआँ तो हमारे घर में आता है।'

सुलेमान को कुछ समझ में आये न आये पर इतना समझ में आ चुका था कि पड़ोस से सारा झगड़ा इस धुएँ के कारण है।

सुलेमान सरपट कहीं दौड़ गया था।

मिश्रा अंकल का घर खुला था। हवन की परात मिश्रा जी का बड़ा लड़का बाहर लाकर रखने ही वाला था।

परात को देखते ही सुलेमान उत्तेजित हो गया। वह तपाक से फट पड़ा था 'धुएँ को बाँध लो बिल्कुल भी मेरे घर में न आये।' कहकर सुलेमान ताव में धमकता हुआ उल्टे पाँव वापस अपने घर लौट आया था।

समीर फौरन उठकर सुलेमान के पीछे गया था लेकिन तब तक सुलेमान अपने घर के अन्दर जा चुका था। समीर सुलेमान की बातों से भीतर तक बेचैन हो गया था।

बड़ों को तो जैसे कोई असर ही नही पड़ा था वे सब सुलेमान के तेवर की चर्चा करते हुए मजा ले रहे थे।

समीर जब दो दिन बाद सुलेमान से मिला तो पिछले दिनों में उसके बिगड़ पड़ने का कारण पूछा।

सुलेमान दुखी था। उसने समीर से सारी बातें साझा कर दी उसने कहा कि 'मेरे अब्बू को लगता है कि तुम लोग अपना भूत–प्रेत भगाकर मेरे घर में हाँक देते हो। इसी से असुरक्षित होकर अब्बू अम्मी को डाँटने लगते हैं। वे मुझे तुम्हारे साथ खेलने के लिए नहीं भेजना चाहते। तुम लोगों से कोई मेल–जोल नहीं रखना चाहते।'

'अब्बू का अम्मी को डाँटना मुझे अच्छा नहीं लगता। इसीलिए मैने धुएँ को बाँधने वाली बात कही।'

समीर असहाय होते हुए बोला 'यार,धुएँ में ऐसा कुछ नही होता ह जो तुम्हारे अब्बू उससे डरते हैं।'

सुलेमान बड़े भोलेपन से बोला 'मुझे नही पता! अब्बू कहते हैं तुम लोग अपने घर की नजर को हमारे घर भेजने के लिए आग की सुलगती परात तुम्हारे घर से सटे मेरे दरवाजे के पास रख जाते हो। जिससे हमारा बुरा हो जाता है'।

समीर बार–बार समझाने की कोशिश करता रहा था लेकिन सुलेमान अभी भी लाचार और बेबस दिखाई दे रहा था।

समीर को सुलेमान के घर के झगड़े का सारा मामला समझ में आ चुका था। उसने इस भ्रम से सुलेमान को बचाने के लिए अटल निर्णय ले लिया था।

कुछ दिनों बाद समीर के घर में दुबारा पूजा का कार्य सम्पन्न हुआ था। आज समीर के दरवाजे के बाहर रखी हवन की परात के इर्द–गिर्द कई बच्चे खड़े थे। ये बच्चे परात के चारों ओर चटाई को घुमाते हुए उसे चौड़े ऊँचे पाईप की शक्ल दे रहे थे।

दरवाजे के सामने पतली सड़क पर गुजरते हुए लोग, बड़ेचकित भाव से देख रहे थे।

बच्चे चटाई को पाईप बनाने में कामयाब हो गये थे। अब हवन का धुआँ सीधे ऊपर आकाश में जा रहा था।

समीर को संतोष हुआ कि सुलेमान के अब्बू को धुएँ से अब कोई परेशानी नही होगी।

बच्चे अपनी इस कामयाबी से खुश हो रहे थे। तभी बाहर तेज हवा चलने लगी थी हवा तेजी से बही और हवन का धुआँ ऊपर न जाकर सुलेमान के घर के अन्दर जाने लगा।

समीर यह देखकर अचानक परेशान होने लगा।

इसी समय सड़क से संस्कृत पाठशाला के आचार्य जी गुजरे। वे समीर को परे''ाान देखकर वहीं ठिठक गये। वे समीर को पहले से जानते थे।

आचार्य जी ने उससे पूछा 'क्या बात है समीर, तुम इतने परेशान क्यों लग रहे हो? यहाँ इतने सारे बच्चे मिलकर यह क्या कर रहे हो?'

समीर ने सामने देखते ही आचार्य जी को प्राणाम किया फिर उदास स्वर में बोला 'धुएँ को बाँधना चाह रहा हूँ आचार्य जी! लेकिन हवा बहीतो वह सुलेमान के घर मे जा रहा है।'

आचार्य जी जोर से हँस पड़े और कहने लगे 'हवा को कोई बाँध पाया है?' 'हवा तो किधर भी जायेगी ही। इसीलिए धुआँ भी हवा के साथ किधर भी जायेगा।'

समीर तपाक से बोला 'धुआँ कहीं भी जाये लेकिन सुलेमान के घर में न जाये, बस!'

आचार्य जी फिर मुस्कुराते हुए बोले 'अरे भाई! धुआँ सुलेमान के घर में क्यों न जाये? तुम्हारा उससे झगड़ा हो गया है क्या? जो धुएँ तक को उसके में घर जाने से रोक रहे हो!' कहकर आचार्य जी फिर हँसने लगे थे।

समीर तो अपनी ही धुन में था वह सपाट स्वर में बोल गया 'मेरा उससे कोई झगड़ा नही है। परन्तु किसी भी कीमत पर धुआँ उसके घर में न जाये। बस!'

आचार्य जी समीर के लड़कपन पर फिर मुस्करा उठे थे। वे हंसी करने के लिए बोले 'धुआँ सुलेमान के घर में चला जायेगा तो क्या हो जायेगा ? जाने दो'

समीर एकदम से छूटा 'धुएँ से उसके घर को नजर लग जायेगी।' कहते–कहते ही समीर अचानकचुप हो गया था।

'कौन कहता है?' पूछते हुए आचार्य जी अचानक गम्भीर हो गये थे। उनके चेहरे की मुस्कराहट जाने कहाँ चली गयी थी।

'सुलेमान कहता है।' समीर न बताया था।

इधर पड़ोस में कई बार सुलेमान का नाम लिए जाने के कारण सुलेमान के अब्बू और उसके घर वाले अपने घर के मुख्य दरवाजे की ओर कान लगाये बढ़ चुके थे।

सामने कई जनों की भीड़ देखकर वे सब घर की चौखट के भीतर ही ठिठक कर माजरा देखने, सुनने, समझने का प्रयास करने लगे थे।

आचार्य जी अब तक सहज हो चुके थे। उन्होंने समीर की सराहना करते हुए कहा 'ये तो अच्छी बात है कि तुम अपने दोस्त के बारे में इतना सोचते हो! लेकिन बेटे! धुएँ की नजर वाली बात ठीक नहीं है।'

समीर को जैसे कुछ अचानक याद आया हो।

वह उछला, और फौरन बोल उठा'आचार्य जी आप ही बताइये न कि हवन के धुएँ का सच क्या है।'

समीर के घर वाले और बहुत सारेलोग अब तक वहाँ जमा हो चुके थे।

आचार्य जी ने समझाते हुए कहा 'जैसे वायुमण्डल का ताप तुम्हें, वायु की ऊर्जा से महसूस होती है और तुम उसे संतुलित करने के लिएसमयानुसार एअर कण्डीशन या हीटर का प्रयोग करते हो। उसी प्रकार से हमारी ऊर्जा और ब्राह्माण्ड की ऊर्जा का अदान–प्रदान हवन के धुएँ के माध्यम से होता है और ब्रह्माण्ड तथा हमारे बीच उर्जा का संतुलन स्थापित होता है। यह विशेष धुआँ हवा को शुद्ध करते हुए चलता है और ऊपर उठकरआकाश में हमारी ऊर्जा को ब्राह्माण्ड तक और साथ ही साथ ब्राह्माण्ड की ऊर्जा को हमारे पास तक पहुँचाने में यह विशेष धुआँ सहायता करता है।'

'हमारी प्रार्थनाओं की ऊर्जा ब्राह्माण्ड तक अधिकतर वायु से ही पहुँचती है।' आचार्य जी ने समझाया था।

समीरने उत्सुकता से पूछा 'तो क्या फिर किसी भी धुएँ से हमारी ऊर्जा को ब्राह्माण्ड की ऊर्जा से मिलाया जा सकता है? मतलब ईश्वर की ऊर्जा हमें मिले और हमारी ऊर्जा उस तक पहुँच जाये।'

आचार्य जी ने कहा 'नही! कोई भी धुआँ वायु को अशुद्ध करता है उसे जहरीला बनाता है लेकिन हवन का धुआँ इसका उल्टा करता है। यह अशुद्ध वायु को शुद्ध करता है।'

समीर और सारे बच्चे हैरानी से मुँह बाये आचार्य जी की अनोखी बातें सुन रहे थे।

बड़ों के भी चेहरों से यही जान पड़ रहा था कि वे पूजा तो जरूर करते थे लेकिन धुएँ का रहस्य वे पहली बार सुन और जान पा रहे हैं।

तभी घोर सन्नाटे को चीरती हुई एक पतली सी आवाज सबके कानों में पड़ी 'लेकिन यह धुआँ विशेष कैसे है!यह वायु को कैसे शुद्ध करता है?' सुलेमान के प्रश्न थे। वह घर के भीतर से बोलता हुआ बाहर आया था।

आचार्य जी ने दुबले–पतले सुलेमान की आवाज की उत्सुकता को ध्यान से सुना और समझा था।

उन्होंने सुलेमान को प्यार से समझाया 'हवन सामग्री में सिर्फ उन्हीं सब सामग्रियों का प्रयोग होता है जो सकारात्मक उर्जा को बढ़ाते हैं, या नकारात्मक उर्जा को समाप्त करते हैं। हवन सामग्री में तमाम तरह की जड़ी–बूटियाँ होती हैं। जलने पर जिनकी तीखी

गंध वायु को शुद्ध करती हैं, शुद्ध ऑक्सीजन को बढ़ाती हैं और अशुद्ध हवा को शुद्ध करती हैं तथा नकारात्मक उर्जा को नष्ट करती हैं।

आगे का वाक्य समीर ने जैसे लपक लिया था 'बेलगूदा, जटामासी, नागर मोथा, कोकिला गुग्गुल कमलगट्टा, अगर–तगर बहुत सारे विशेष जड़ी–बूटी भी इसमें पड़ती है, है न आचार्य जी?' कहते–कहते, आखिर में समीर ने आचार्य जी से हामी भरवाई थी।

कल ही तो पापा ने उससे पूजा के सामान की लिस्ट लिखवाई थी। समीर ने सारा ज्ञान सबके सामने गर्व के साथ उड़ेला था।

सब लोग अब तो समीर को ही देख रहे थे। आचार्य जी ने समीर को शाबाशी दी 'अरे वाह समीर! तुम्हें तो सब मालूम है।'

शाबाशी पाकर समीर फूल कर कुप्पा हो गया था।

आचार्य जी ने आगे बताया था 'इसीलिए घर की वायु जब शुद्ध हो जाती है तो इसे घर के बाहर रख दिया जाता है। जिससे बाहर का वातावरण भी शुद्ध हो जाये।

तभी सुलेमान बीच में बोला 'आपके कहने का मतलब है कि आप दूसरों के लिए भी वायु शुद्ध करते हैं?'

आचार्य जी ने कहा 'हाँ!बिल्कुल! शुद्ध वायु तो सबको मिलनी चाहिए।'

अन्दरसुलेमान के अब्बू यह सब सुनकर शान्त हो चुके थे। परन्तु शायद शंका पूरी तरह मिटी नहीं थी।

उन्होंने घर के भीतर से दबी जबान में कुतर्क छेड़ा था। 'दूसरे के लिए हवा शुद्ध करते हैं तो दूसरे के यहाँ ए.सी., कूलर भी लगवा दें!'

आचार्य जी ने सुलेमान के अब्बू की बातों को सुनकर भी शायद अनसुना कर दिया था।

लेकिन सुलेमान का कान और दिमाग शायद बहुत तेजी से काम कर रहा था। वह फौरन बोल पड़ा था 'अरे अब्बू! एसी, कूलर तो सुविधा भोगने की चीजें हैं लेकिन शुद्ध वायु तो सबकी आवश्यकता है।'

आगे समीर ने सुलेमान के सुर में सुर मिलाया था 'शुद्ध हवा और ऑक्सीजन तो छोटे–छोटे जीव–जन्तुओं तक की आवश्यकता होती है। साँस लेते समय छोटे–बड़े सभी जीव स्वच्छ शुद्ध वायु ही फेफड़े के भीतर सोखते हैं। शुद्ध वायु जीवन की आधारभूत जरूरत है। साँस तो हम सभी प्राणी लेते हैं।'

सुलेमान के अब्बू का भ्रम शायद पूरी तरह से जाता रहा था। तभी तोसुनकर, सुलेमान के अब्बू अनजाने ही अचानक बुदबुदाये थे 'ये तो परोपकार का भी कार्य हुआ!'

कहते–कहते सुलेमान के अब्बू कब घर से बाहर निकल आये थे ये यह उन्हें भी पता नही चला था।

अब्बू को देखते ही सुलेमान नेझट से अब्बू के पास जाकर उनकी अंगुलियों को अपनी हथेली में कसकर बंद कर लिया था।

आचार्य जी ने प्रसन्न होते हुए कहा 'अरे बच्चों तुम लोग तो बहुत समझदार हो तुम सभी ने सही पहचाना है।हर धार्मिक कार्य के आधार में परोपकार की ही भावना होती है।'

'समीर अब तो तुम बेफिक्र हो कि हवन के धुएँ से तुम्हारे दोस्त को कोई नजर नही लगेगी! बल्कि उल्टा, उसकी नजर उतर जायेगी!' आचार्य जी ने समीर से कहा था।

आचार्य जी की बात सुनकर सभी बच्चे अचानक खिलखिला उठे थे।

सब बच्चे अपने–अपने घरों की ओर चलने की तैयारी में ही थे कि सबने देखा सुलेमान बडो सोच विचार में डूबा था और उसके अब्बू शायद अभी कुछ छेपें हुए थे।

अचानक हड़बड़ी में लगभग चीखते हुए सुलेमान का प्रश्न छूटा था ''आचार्य जी, तो फिर हमारी उर्जा ब्राह्मण्ड तक कैसे पहुँचती है। हम तो कोई हवन नही करते हैं।''

प्रश्न जायज था आचार्य जी ने प्रसन्न होते हुए प्रेम से सुलेमान को देखा।

'मस्जिद में जब अज़ान होती है। उसी समय नमाज़ पढ़ी जाती है। अर्थात तुम्हारी उर्जा ध्वनि के माध्यम से ब्रह्माण्ड तक पहुँचायी जाती है। विशेष अक्षरों की ध्वनि में विशेष उर्जा होती है। उन्हीं उर्जा के रास्ते से तुम्हारी प्रार्थनाओ की उर्जा का भी आदान–प्रदान ब्राह्माण्ड से होता है।' आचार्य जी ने सुलेमान को बताया था और सबको आर्शीवाद देते हुए वे अपने घर चले गये थे।

सुलेमान के अब्बू जाते हुए आचार्य जी को बड़ी देर तक आश्चर्य से देखते रहे थे।

अचानक अजान का रहस्य जान जाने के बाद वे जैसे भावुक हो गये थे। वे सभी बच्चों को प्यार से निहारने लगे थे।

वे करुणा से भर गये थे।

एकाएक समीर का हाथ सुलेमान को पकड़ाते हुए उन्होंने कहा था। 'जाओ तुम दोनों खेलने जाओ! अब कभी नहीं मना करूँगा।' कहकर अपनी नम हो आयी आँखों को जैसे वे सबसे छिपाने लगे थे।

सुलेमान के अब्बू की बात सुनकर सुलेमान और समीर खुशी से अचानक चहक उठे थे।

सभी बच्चे खुशी से शोर मचाते हुए एक साथ बोले ''धुएँ को खोल दो''।

क्षण भर में ही मुड़ी चटाई एक तरफ अनाथ सी जमीन पर पड़ी हुई थी। सभी लोगों को आज बहुत सारी नई जानकारियाँ प्राप्त हुई थीं।

मिश्रा जी का परिवार बड़ा खुश था कि आज उनके पड़ोसी की कई सारी गलतफहमियाँ एक साथ दूर हो गयीं थीं।

जाने कब बहती हवा थम गयी थी। हवन का धुआँ हवा में स्वच्छन्द घूमता हुआ ऊपर आकाश में उड़ा जा रहा था।

आज दोनों पड़ोसी पहली बार खुशी से एक–दूसरे के गले मिल रहे थे।

****

अनोखी उडान

लव कुमार 'लव'

वो बचपन भी क्या बचपन था, जब कच्चे घरों की कच्ची छतों में, उंचे उंचे खजूर के पेड़ों पर, खोखले दरख्तों के सुराखों में या फिर घास फूंस के छप्परों में अनगिनत पक्षियों के असंख्य घोंसले होते थे। नरम तिनकों की बुनावट से बने, देखते ही मन मोह लेने वाले और सोचने पर मजबूर कर देने वाले तरह तरह के घोंसलें।

आसमान में चिड़ियों के झुंड को देखकर सहसा ही इन प्रश्नों की बौछार से आज सुरेश का मन व्यथित है, अपने बचपन की इन बातों को सोचकर सुरेश मन ही मन दुखी है क्योंकि उसने बचपन को करीब से जीया है और वो अनुभव आज भी उसके मन मस्तिष्क पर दर्ज है किसी दीवार पर बने चित्रों की तरह।

वैसे तो इन बातों के समरण का कोई खास कारण नही परन्तु कुछ दिनों से समाचार पत्रों, घर में आने वाली लघु पत्रिकाओं में चिड़ियों और अन्य पक्षियों के लिए भीष्ण गर्मी में घरों की छतों पर दाना पानी रखने की खबरें हर रोज आ रही हैं। सुरेश भी इस बची हुई धरोहर को बचाए रखना चाहता है, और चाहता है कि उसके संयुक्त परिवार के सभी बच्चे भी उसके इस कार्य में उसकी मदद करें।

सुरेश ने घर के सभी बच्चों इंदु, अखिल, प्राची, उदित, गोनू और नेहा को पास बुलाया और सीढ़ीयों के पास लगते चौबारे के कमरे में बच्चों को एक चिड़ियों द्वारा मिट्टी का घोंसला बनाने की शुरूआत करते दिखाया। ये अनोखी चिड़ियों का एक जोड़ा है, जो हर गर्मी की ऋतु में किसी न किसी घर में अपने घोंसले की शुरूआत करता है अब की बार इन्होंने हमारे घर को चूना। सुरेश और सब बच्चों के लिए ये कभी न भूल पाने वाली यादों एंव खुशियों के पल थे।

इंदु, प्राची, और उदित ने सुरेश चाचा से पूछा कि, 'चाचू ये मिट्टी के बर्तन क्यों लाए हो.........।' सुरेश ने सब बच्चों को बताया कि घरों की छतों पर पक्षियों के लिए दाना पानी की व्यवस्था करना जरूरी हो गया है क्योंकि खेतों से फसलें मशीनी उपकरणों से काटी जा रही हैं और धरती कंकरीट में बदलती जा रही है, ऐसे में इनके लिए छतों या खूले में दाना पानी रखना बेहद जरूरी हो गया है।

सुरेश ने बताया कि पशु पक्षियों और पेड़ पौधों के बिना मनुष्य का जीवन नीरस होता जा रहा है, दूर दूर तक कहीं घनी छाया नजर नही आती, धरती की परत कंकरीट में तबदील होती जा रही है। सुरेश लम्बी आह भरते हुए कहता है कि ''अरसा हो गया बूंदों के बाद आने वाली मिट्टी की महक को अनुभव किए........।''

विकास कार्यों में मनुष्य इतना मशगूल हो गया कि संजीदा जीवन की गतिविधियां बीते समय की बातें हो गई। इस बारे में बात आगे बढ़ ही रही थी कि अखिल, गोनू और नेहा प्लास्टिक की छोटी छोटी बालटियों में ताजा ठंडा पानी भर कर लाए और लिफाफों में गेहूं और बाजरे के दाने लिए सुरेश चाचा के पास खड़े हो गए।

सभी बच्चों ने मिलकर मिट्टी के कसोरे छत के बीचों बीच रख दिए, वहीं पर सुरेश ने प्लास्टिक की बोतलों को काट कर बनाया धीरे धीरे दाने बाहर आने का स्टैंड लगा दिया ।

चिड़ियों के समूह ने खूले आसमान में गोते लगाते हुए पानी और दानों पर नजर दौड़ाई जैसा कि उनकी प्रकृति होती है, एक एक कर सब चिड़ियां छत पर आने लगी और वहां देखते ही देखते चिड़ियों की अच्छी खासी तादात हो गई। सुरेश और सब बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। चिड़ियों की चीं चीं में सब बच्चों का हल्ला गुल्ला मिलकर एक अलग ही संगीत ध्वनि सी बिखेर रहा था।

रोमांच इस कदर था कि प्राची, अखिल, उदित, इंदु, गोनू और नेहा दूर खड़े उछल कूद करते आसमान छूने लगे थे। कुछ ही देर में चिड़ियों ने भरपेट भोजन किया और पानी से तृप्त होकर आसमान का छोर नापने लगी। एक एक कर सब चिड़ियों ने आसमान को अपने पंखो में समेट लिया। सब बच्चों में मायुसी का माहौल था मानो उनकी बहुमूल्य वस्तु कहीं खो गई हो। सुरेश चाचा ने उनकी मायुसी को भंपते हुए, कल कुछ और नया करने के लिए कहा ताकि चिड़ियां कुछ देर और छत पर रूकी रहें।

सुबह हुई तो बच्चों में नया करने की उत्सुकता देखी गई, सब के सब सुरेश चाचा के पास इकट्ठे हो गए कि हमें क्या करना पड़ेगा ताकि हमारी चिड़ियां बहुत देर तक हमारी आंखों के सामने रहें।

सुरेश ने एक प्लास्टिक की लंबी मोटी डोर और एक पुरानी छतरी जिसका कपड़ा फट चुका था, हाथ में लिया और सब बच्चों को साथ लेकर पहुंच गया छत पर मानो कोई मिशन पूरा करना हो। अखिल और प्राची परिवार के बड़े बच्चे हैं, चाचा ने उनको डोर का एक कोना पकड़ाया और एक एक कर दोनों सिरे बांध दिए, पास ही छतरी का पिंजर रख कर दानों से भरी बातलों का स्टैंड भी वहीं पर ही रख दिया। सुरेश और सब बच्चे मिलकर उपर वाले कमरे के कोने में बैठकर देखने लगे कि कब आसमान से गोते खाती चिड़ियां छत पर आएंगी। चिड़ियों को तो मानो भनक लग गई थी कि हमें चाहने वाले छत पर पहुंच गए हैं

सब चिड़ियां एक एक कर उडनतश्तरी की तरह छत पर उतरने लगी, दाने चुगकर और पानी पीकर पास ही बंधी डोर पर बैठ गईं, कुछ छतरी के पिंजर पर पर बैठ कर अपनी पांखें खुजलाने लगी। बड़ा ही मनोरम दृश्य बन रहा था जो मन को अंदर तक खुशी एंव शांति से भर रहा था।

सुरेश और सब बच्चे इस बची हुई धराहर को सहेज रहे थे। यूं ही देखते देखते आस पास के घरों में भी बच्चे अपनी छतों पर दाने और पानी रखने लगे, चिड़ियां, मैना,

कबूतर, कोयल और बहुत सारे अन्य पक्षी सुबह ही छतों पर डेरा डाल लेते और अपनी जरूरत का दाना पानी खाते पीते और आसमान के बादलों को छूने लगते।

सुरेश की आंखों में उसके बचपन की यादें तैर रही थी। सब बच्चों में अच्छे संस्कारों की बुनियाद डल रही थी, जो आज के समय और समाज की जरूरत भी है। यूं ही देखते देखते एक बार फिर बच्चों का मन और पक्षी आकाश में एक उंची उडान पर निकल गए।

परिचय

लव कुमार 'लव'
हिन्दी अध्यापक
रावमावि. बडी बसी
अम्बाला (हरियाणा)
गांव–लौटों, तह॰,+पो॰ नारायणगढ जिला अम्बाला
दूरभाष– 08685827332
कृतियां– 'मिट्टी का साहित्य' काव्य संग्रह
'वही बचपन वही बूंदें' बाल कविता संग्रह।

बाल कहानी - " पिंकी और चिंकी "

अरविन्द कुमार 'साहू

पिंकी को अपनी नानी का गाँव बहुत अच्छा लगता था | वहाँ हरे भरे खेत और फलों से लदे बागीचे थे | साफ पानी की एक नदी थी , जो कल कल करके बहती रहती थी | तरह तरह के पक्षी थे , ठंडी हवा थी | इस सुहाने वातावरण मे मन को बड़ी शान्ति मिलती थी | शहर की चिल्लपों , धूल और प्रदूषण का यहाँ नाम तक नही था | इस बार पापा जी ने गोवा मे छुट्टियों बिताने का मन बनाया था किन्तु पिंकी उन्हे समझा बुझाकर यहाँ ले आयी थी | यहाँ आकर सभी लोग सचमुच बहुत खुश हुए थे |

मामाजी के बच्चों राहुल और मोहिनी ने पिंकी से बड़ी जल्दी दोस्ती कर ली | वे उसका हाथ पकड़ कर घर मे घुमाने चल दिये | बरामदे से सटा अपना कमरा और रसोई घर दिखाते हुए वे आँगन मे पहुंचे | यहाँ बड़ा सा अमरुद का पेड़ था जिस पर कच्चे - पक्के फल लगे हुए थे | "भैया वो देखो ....., - पिंकी खुशी से चीखते हुए बोली तो राहुल ने भी गर्दन ऊपर उठाई | एक तोता बड़े मजे से एक अमरुद कुतर - कुतर कर खा रहा था , जिसके टुकड़े नीचे गिर रहे थे | ऐसा चित्र तो पिंकी ने अपने स्कूल की किताब मे ही देखा था | वह खुशी के मारे चीख - चीख कर तालियाँ बजाने लगी | अचानक हुए इस शोरगुल से घबराकर तोता उड़ गया | "ओह ! गड़बड़ हो गई !" - अपनी गलती समझते ही पिंकी ने झट अपने होठों पर उंगली रख ली |

पिंकी को उदास देख मोहिनी हँस पड़ी | कहने लगी - " पिंकी ! यहाँ तो ऐसे बहुत से पक्षी और चिड़ियाँ है | मेरे साथ आओ तुम्हें कुछ और दिखाती हूँ |" एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए सब छत पर पहुँच गये | यहाँ खपरैल से ढका चौबारा बना हुआ था जिसमे चारों तरफ से खुली हवा आती थी | राहुल ने बताया कि घर के ज़्यादातर लोग गर्मियों मे यहीं सोते हैं | खपरैल के छज्जे मे कई जगह चिड़ियों के घोसले लटके हुए थे | पिंकी आश्चर्य से देखने लगी | ऐसे घोसले तो उसने शहर के चिड़ियाघर मे भी नहीं देखे थे | तभी उसने देखा, एक चिड़िया फुर्र से उड़ती हुई आई और एक घोसले के मुहाने पर बैठ गई | घोसले के अंदर से " चीं चीं - चीं चीं " का शोर उठा और चिड़िया के छोटे बच्चों की चोचें खुल गई | पिंकी ने पंजों पर उचक कर उन्हें देखने की कोशिश की , लेकिन देख न पाई | चिड़िया ने बच्चों के मुंह मे खाने का सामान डाला और वापस फुर्र हो गई | यह देख पिंकी को बहुत मजा आया | वह फिर से खुश हो गई |

राहुल बताने लगा कि ये घोसले गौरैया के है | पिंकी आश्चर्य से बोली - "अच्छा ? मेरे मास्टर जी तो कह रहे थे कि गौरैया अब दिखती ही नहीं | वह लुप्त होने वाली है |"

राहुल बोला - “हो सकता है तुम्हारे शहर मे न दिखती हो,पर हमारे यहाँ तो रोज दिखती है | अभी जो चिड़िया उड़कर आयी थी वह इस घोसले के छोटे बच्चों की मम्मी है और दिन भर उन्हे इसी तरह दाना लाकर चुगाती रहती है | चिड़िया के बच्चे अभी छोटे हैं | जब ये बड़े होकर उड़ जाएंगे तो कोई और गौरैया इसमे आकर अंडे दे देगी | ये क्रम यहाँ चलता ही रहता है | सिर्फ यही नहीं , आँगन के अमरुद , दरवाजे की नीम और गाँव के बाहर वाले बरगद के पेड़ पर तो न जाने कितनी तरह के पक्षियों का डेरा है | सुबह घूमने चलना तब देखना | ”

“अरे वाह ! ये तो बहुत अच्छी बात है |” पिंकी खुशी से चहक उठी | ….. और अगले दिन सुबह सभी लोग घूमने निकल पड़े | मामाजी और पापाजी भी साथ मे थे | रास्ते मे तरह - तरह के पेड़ और उन पर चहकते पक्षी दिखे | एक से बढ़कर एक रंग बिरंगे और सुंदर | राहुल पेड़ों की पहचान के साथ ही पक्षियों की पहचान भी बता रहा था - “देखो ,ये कू कू करने वाली कोयल है , ये गाने वाली बुलबुल है , ये मैना है | ये हारिल देखो …. एकदम कबूतर जैसे लेकिन कितने रंग-बिरंगे है | ये सफ़ेद बगुले , ये तीतर , ये जलमुर्गी | ….और इन्हे देखो, यहाँ तालाब मे तैरते हुए हंस भी हैं |”

“ हाँ , विद्या की देवी सरस्वती के वाहन |” - पिंकी ने कौतूहल पूर्वक हामी भरी |

वे टहलते हुए बरगद के नीचे पहुँच गये | यह एक विशालकाय हरा भरा वृक्ष था | उसकी शाखाओं से निकली अनेक लंबी -लंबी जड़ें जमीन तक लटक रही थी | जैसे वृक्ष को सहारा दे रही हों | बरगद के ऊपर अनेक पक्षी कोलाहल कर रहे थे | कौओं की कांव - कांव सुनकर पिंकी बोली - “यहाँ तो कौवे भी खूब है | शहर मे तो ये भी दिखने कम हो गये हैं |” राहुल हँस कर बोला - “मैंने सुना है कि शहरों मे गिद्ध एकदम गायब हो गये है | लेकिन यहाँ एक पीपल के पेड़ पर वो अब भी दिखाई पड़ जायेंगे | हमारे गाँव मे गिद्ध अभी तक गायब नहीं हुए |” - राहुल बताता जा रहा था , पिंकी देखती सुनती जा रहा थी | सोचने लगी - ये गाँव का राहुल कितना कुछ जानता है प्रकृति के बारे मे | इतना तो मैं अँग्रेजी स्कूल मे पढ़कर और चिड़ियाघरों मे घूमकर भी नहीं जान पायी |

कुछ देर बाद राहुल ने पिंकी के पापा से पूछा - “फूफा जी , शहरों से इतने पक्षी लुप्त क्यों होते जा रहे है ? वहाँ तो गाँव से ज्यादा सुविधाएं है | पक्षी और पर्यावरण विशेषज्ञ भी रहते है |” पिंकी के पापा ने एक गहरी सांस खींची और कहने लगे - “ बेटे ! लोगों के पास पैसा और सुविधाएं तो खूब है , किन्तु जागरूकता का अभाव है | रात-दिन बस काम और कमाई की चिन्ता मे वे प्रकृति की बनावटी छांह मे रहने को मजबूर हो गये है | हम किताबों के ज्ञानी तो हो गये हैं पर वास्तविकता से कितनी दूर हैं , यह तो यहीं आकर समझा जा सकता है |”

अब तक पूरब दिशा मे सूरज निकल आया था | मामाजी बोले - “ अब हमे घर लौटना चाहिये |” तभी पिंकी दौड़ती हुई आई - “राहुल भैया, वहाँ एक चिड़िया का बच्चा गिरा हुआ है |” राहुल चौंक कर बोला - “ आओ देखते है |” - सभी लपक कर उधर पहुंचे |

मोहिनी बरगद के पत्ते पर एक चिड़िया के बच्चे को बड़ी सावधानी से संभालने का प्रयास कर रही थी | हल्का लाल पीला रंग, रुई के फाहे जैसा कोमल शरीर और आकर्षक चोंच | वह बड़ा प्यारा और मासूम लग रहा था | मामाजी ने ध्यान से बच्चे को देखा , बोले - " ये तो गौरैया का बच्चा है | किसी घोसले से गिर पड़ा है | लेकिन नीचे सूखे पत्ते होने से ज्यादा चोट नहीं आयी होगी | बच तो जाएगा किन्तु काफी देखभाल की जरूरत पड़ेगी |"

मोहिनी बोली - " तो हम इसे घर ले चलते है | किसी घोसले मे रखकर पाल लेंगे | दाना पानी देंगे तो इसकी जान बच जायेगी | पंख निकलने पर खुद उड़ जायेगा |" राहुल और पिंकी भी उत्साहित हो उठे | मामाजी ने बरगद के कई हरे मुलायम पत्ते तोड़े | सींकों की सहायता से बड़ा दोना बनाया | चिड़िया के बच्चे को सावधानी से उठाकर उसमे रखा और लेकर घर चल दिये | घर मे एक खाली पिंजरा तलाश कर उस मे ढेरों मुलायम तिनके डालकर घोसले जैसा आरामदायक बना दिया गया | फिर गौरैया का बच्चा उसमे रख दिया गया ताकि वह सुरक्षित रहे | सभी बड़े उत्साह से उसकी देखभाल मे जुट गये |

पहले दिन रुई मे डुबोकर उसे दूध पिलाया गया | बच्चा चैतन्य हो गया तो उसे मीठे पपीते और अन्य फलों के महीन टुकड़े खिलाये जाने लगे | स्वस्थ होने पर पिंजरे मे बाजरे के दाने रख दिये गये | पानी भरकर मिट्टी की प्याली भी रखी गई उसके पास | वह खाते पीते बड़ा होने लगा | पिंकी उसकी 'चीं चीं' की आवाज सुनकर बड़ी खुश होती थी | सो उसने गौरैया के बच्चे का एक प्यारा सा नाम भी रख दिया - ' चिंकी ' | पिंकी को चिंकी से कुछ ज्यादा ही लगाव हो गया था | हमेशा उसे नजदीक से देखने और छूने की कोशिश करती रहती थी | दाने डालकर चिंकी को पुचकारती रहती थी | चिंकी के साथ रह कर पिंकी अपनी उस सुंदर बार्बी गुड़िया को भी भूल गयी थी , जिसे शहर से साथ लेकर आई थी |

देखते ही देखते दिन बीतते गये और चिंकी को कोमल पंख निकलने लगे | पहले चिंकी पिंजरे मे चहल कदमी करता था | फिर धीरे - धीरे पंख भी फड़फड़ाने लगा | इधर वह बड़ा होकर उड़ने को तैयार हो रहा था और उधर बच्चों की छुट्टियाँ खत्म होने को थी | पापाजी ने लौटने की तैयारियां शुरू कर दी थी | बच्चे चिंकी को जल्द से जल्द उड़ता हुआ देखना चाहते थे |

एक सुबह मामाजी के कहने पर पिंजरे को खुला छोड़ दिया गया | सभी बच्चे दूर बैठे उत्सुकता से देख रहे थे | चिंकी चहल कदमी करता हुआ बाहर निकल आया | थोड़ी दूर तक घूमा टहला | फिर एकाएक उसने पंख फड़फड़ाकर ऊपर की ओर उड़ान भरने कोशिश की | लेकिन दो तीन फीट ऊपर जाते ही छत पर गिर पड़ा | यह देखते ही डर के मारे पिंकी की चीख निकल गई | वह उसे बचाने दौड़ी तो चिंकी हाँफते हुए तेजी से पिजरे मे घुस गया | राहुल ने समझाया - "घबराओ नहीं , सिर्फ देखती रहो | वह उड़ना सीख रहा है |" इसके बाद फिर चिंकी ने कई बार ऐसा किया | उड़ता गिरता , फिर उड़ता | कोशिश करता रहा | उसे उड़ते देख पिंकी खुशी से तालियाँ बजाती तो नीचे गिरते ही दुखी हो जाती | उसे चिंकी से कुछ ज्यादा ही लगाव हो गया था | अगले दिन चिंकी ने और लंबी उड़ान भरी | धीरे -

धीरे उसका प्रयास रंग लाया | एक सुबह वह फुर्र से उड़कर नीम के पेड़ पर जा बैठा | दिन भर इस डाली से उस डाली घूमता रहा | वह उड़ना सीख चुका था | पिंकी को लगा कि शायद अब वह नहीं लौटेगा |

छुट्टियों का आज अंतिम दिन था | पापाजी ने लौटने की घोषणा कर दी थी | सामान पैक हो चुका था | सब लोग बाहर एक दूसरे से विदा ले रहे थे | चलने को हुए तो पापाजी ने पूछा - " पिंकी कहाँ है ? वह नहीं दिख रही |" सब उसे खोजने दौड़े | सारा घर छान मारा | फिर छत पर गये तो देखा पिंकी गौरैया के पिंजरे के पास गुमसुम खड़ी थी | कभी आकाश तो कभी नीम के पेड़ की ओर देखती | उसकी आँखों मे बेचैनी थी | राहुल समझ गया | पिंकी गौरैया के बच्चे का इंतजार कर रही थी | जाते समय आखिरी बार उससे भी मिलकर विदा लेना चाहती थी |इतने दिनों मे अपनेपन का एक रिश्ता जो बन गया था | उसकी आँखेँ मानो बार - बार उसको पुकार रही थी - "एक बार लौट आओ चिंकी |"

पिंकी की दशा देखकर सब परेशान हो गये | दोपहर ढलने को थी | जल्दी निकलना जरूरी था | लेकिन पिंकी तो चलने को तैयार ही नही थी | बिना चिंकी से विदा लिये |आखिर राहुल को एक उपाय सूझा |वह दौड़ कर बाजरे के दानों की टोकरी उठा लाया | पिंकी को देते हुए बोला - "लो इन्हे बिखेरो |" पिंकी अपने नन्हें - नन्हें हाथों से उन्हे बिखेरने लगी | जल्दी ही नीम के पेड़ से कई चिड़िया वहाँ आकर दाने चुगने लगी | फिर खपरैल के घोसलों वाली गौरैया भी आने लगी | लेकिन चिंकी का कही पता नहीं था | पापा ने पिंकी का हाथ पकड़कर खींचा - " अब चलो भी बेटी , हमे देर हो रही है |"

आखिर लंबी प्रतीक्षा से पिंकी भी निराश हो चुकी थी | उसने भारी मन से वापस लौटने के लिये कदम उठा लिये | लेकिन यह क्या ? उसके मुड़ते ही चिंकी फुर्र फुर्र करके उड़ता हुआ आया और पिंकी के पैरों के पास बिखरे दाने चुगने लगा | मानो पिंकी के प्रेम और धैर्य की परीक्षा ले रहा था | पिंकी ने चहक कर उसे छूने को हाथ बढ़ाया तो झट से पिंजरे मे घुस गया और वहीं से टुकर - टुकर निहारने लगा | पिंकी की आँखों से खुशी के आँसू बह निकले | उसने पिंजरे को प्यार से चूमा और हाथ हिलाते हुए भारी मन से लौटने लगी | मानो गौरैया के बच्चे से कह रही हो - 'अलविदा चिंकी' |

टॉफी

डॉ. मंजरी शुक्ला

उछल उछल कर बिंदियाँ के पैरों में दर्द होने लगा था। पर उसके नन्हें-नन्हें हाथ काँच के उन मर्तबानों तक पहुँच ही नहीं रहे थे जिन पर रंग बिरंगी खट्टी मीठी गोलियाँ सजी हुई थी। किसी में नारंगी तो किसी में गुलाबी ....किसी में गोल गोल पीली-पीली बिंदियाँ के मुंह में पानी आ रहा था और वो अपनी तोतली आवाज़ में चिल्ला रही थी -" " अंतल,अंतल..मुझे भी ताफी दे दो ना। देखो ना , मेले पाश पैशे भी हैं।"

पर दुकान में खड़ा भोला नन्ही बिंदियाँ की आवाज़ को सुनकर भी अनसुना कर देता था क्योंकि बिंदियाँ के बापू ने उससे बहुत सारा अनाज उधार ले रखा था। पर ५ साल की बिंदियाँ तो इन बड़ों की दुनियादारी ना जानती थी, वो तो अपनी अठन्नी को रोज रात के तकियें के नीचे रखकर सोती और आँख खुलते ही सामने वाली किराने की दुकान की ओर आशा भरी नज़रों से देखना शुरू कर देती। वो माँ से पूछती , बापू से पूछती और वे दोनों अपनी नज़रें उस मासूम से चुराकर अपनी आँखों में आये बेबसी के आँसू पोंछकर कहते -" अभी तू नन्ही गुड़िया हैं ना। तेरे दाँत न खराब हो जाए इसलिए तुझे वो टॉफी नहीं देता।"

गोल-गोल काजल लगी आँखों को हवा में नचाती बिंदियाँ कहती -" हाँ , देखो तो बापू...मैंने थूब लगद तल दातून ती हैं ....तमक लहे हैं ना मेरे दाँत मोतियों दैथे । मैं अब तभी भी नहीं दाउंगी तौफी लेने।"

और वो बड़े दुलार से बापू के गले लग जाती। और बापू असहाय सा खुद को बहुत रोकने के बाद भी फफक पड़ता। पर रात होते होते ही बिंदियाँ अपनी दिन की बातें भूल जाती और सपनों में अपनी अठन्नी को मुट्ठी में भींच भोला की दूकान पर कूदते फाँदते पहुँच जाती जहाँ पर भोला एक कोने में मुस्कुरा रहा होता और वो नन्ही नन्ही मुठियों में टॉफी भरकर अपनी फ्रॉक में सारे रंगों की गोलियाँ डाल रही होती। एक दिन भरी दुपहरी में बिंदियाँ दुकान पर दिन भर मर्तबानों के पास खड़ी रही पर भोला का दिल ना पसीजा। वो बस कनखियों से उसे देखता रहा कि थक हार कर वो कब वापस अपने घर चली जाए। जब बिंदियाँ की टाँगे काँपने लगी और चिल्ला चिल्ला कर उसकी आवाज़ बैठने लगी तो वो थकी हारी सामने अपनी झोपड़ी में चली गई । दूसरे दिन बिंदियाँ कमज़ोरी के कारण केवल खिड़की से छनती धूप की रौशनी में चमकते मर्तबान और उनके अन्दर रखी टॉफी देख रही थी कि तभी अचानक उसने देखा कि एक बहुत बड़ा और मोटा काला साँप भोला की दुकान से सटे उसके घर के अन्दर जा रहा था। ये देखकर बिंदियाँ डर के मारे कांपने लगी। पर ये

बात वो किसे बताए । माँ बापू तो सुबह ही खेतों में काम करने चले गए थे । बिंदियाँ आज पहली बार अपने हथेली में बिना अठन्नी दबाये, तेज बुखार में लाल मुंह लिये भोला की दूकान की ओर चली गई । सुबह सुबह बोहनी ना होने के कारण भोला वैसे ही चिढ़चिढ़ाया हुआ बैठा था । उसने आव देखा ना ताव , चटाक से बिंदियाँ के कोमल गोरे गाल पर एक चांटा जड़ दिया । बिंदियाँ फूट-फूट कर रोने लगी और डर के मारे थर-थर काँपने लगी । उसकी समझ में नहीं आया कि आज उसे मारा क्यों गया । उसका मन हुआ कि वो लौट जाए पर अचानक उसे भोला के बच्चे का ध्यान आया जो घर में अकेला था । वो धीरे से तुतलाते हुए बोली - " तुम्हाले धर में ताला छांप । "

"...क्या ...? " भोला उसकी बात को ना समझते हुए चिल्लाकर बोला ।

डर के मारे बिंदियाँ ने अपनी दोनों मुट्ठियाँ भोला के आगे कर दी ताकि भोला देख ले कि वो उसके पास टॉफी माँगने नहीं आई ।

वो थोड़ी तेज आवाज़ में भोला के घर की ओर इशारा करते हुए बोली-" तुम्हाले धर में ताला छांप । "

:अरे , ये तुम्हारे घर में काला साँप कह रही हैं । " दुकान पर खड़े दो लोग बोले

ये सुनते ही भोला हवा की गति से अन्दर भागा जहाँ पर उसका दो साल का बच्चा ज़मीन पर अकेला बैठा था और उसके बगल में बड़ा सा फ़न फैलाए काला कोबरा उसे बस डसने ही जा रहा था ।

भोला ने तुरंत बगल में पड़ा लकड़ी का स्टूल उठाकर साँप पर दे मारा जिससे दर्द के मारे बिलबिलाता हुआ साँप वहाँ से चला गया ।

भोला ने माथे का पसीना पोंछते हुए बच्चे को गोद में उठाया और हवा की गति से बाहर आ गया ।

बाहर आकर देखा तो बिंदियाँ वहाँ से जा चुकी थी । धनिया ने तुरंत अपने नौकर से कहकर सारे मर्तबान उठाए और दौड़ पड़ा बिंदियाँ के घर की ओर ।

उसने देखा कि दरवाजे खुले हुए थे ओर बिंदियाँ दीवार के एक कोने में दुबकी सिसकारियाँ भर रही थी । भोला ने अपने नौकर के साथ मिलकर सारे मर्तबान उसके पास रख दिए उसके पैरों मैं गिरकर भरे गले से माफ़ी मांगते हुए बोला- " बिटियाँ, ई सारी गोलियाँ अब तुम्हार हैं और जब तक हम जिन्दा हैं,तुमको एको पैसा देने की जरुरत नहीं हैं । "

बिंदियाँ मुस्कुरा उठी और उसकी आँखों में मर्तबान के अन्दर की रंबिरंगी टॉफी के रंग इन्द्रधनुष बनकर छा गए । उसने काँपते हाथों से मर्तबान खोला और मुंह में एक पीली गोली डालते हुए मुस्कुराकर ऑंखें बंद कर ली ....

----))((----

परिचय :डॉ मंजरी शुक्ला-मूलतः बाल साहित्य लेखन। इसके साथ ही कविता, साहित्य, कला व रंगमंच की समीक्षा, अनुवाद, आलेख तथा स्क्रिप्ट लेखन,दूरदर्शन एवं आकाशवाणी में वर्षों से आरंभिक उद्घोषण,दूरदर्शन के लिए बच्चों के नाटक एवं आकाशवाणी में कहानी लेखन वर्तमान में आकाशवाणी कुरुक्षेत्र में आकस्मिक उद्घोषक

दिविक रमेश की बाल कथाएँ

सॉरी लू लू

--दिविक रमेश

लू लू ने बाहें समेट लीं। काँखों में। मुँह फेर लिया। उठा ऒर अन्दर जाकर बॆठ गया। सोचने लगा- 'अब मैं 10 वर्ष का हो गया हूं। माँ कुछ नहीं समझती। मेरी बात सुनती ही नहीं। माँ, माँ करता रह जाता हूं। अब उनसे कभी बात नहीं करूंगा।' लू लू कुछ देर यूं ही कुछ का कुछ सोचता रहा। फिर बोर होने लगा। 'माँ अब तक क्यों नहीं आई। मुझे मनाने। माँ अच्छी नहीं है। बिलकुल अच्छी नहीं है।' उसने सोच लिया।

'पर ऐसा तो पहले भी हो चुका है।' लू लू ने सोचा। उसे याद आया। पहले भी उसे माँ की एक बात अच्छी नहीं लगी थी। उसे इसी तरह बुरा लगा था। गुस्सा भी आया था। तब भी तो ऎसा ही सोचा था। यही कि माँ से अब कभी बात नहीं करेगा। पर थोड़ी ही देर में सब गड़बड़ हो गया था। माँ ने आकर जब उसे प्यार किया था ऒर उसके पसन्द की आइसक्रीम दी थी तो उसे बहुत-बहुत अच्छा लगा था। उसे तो याद ही नहीं रहा था कि उसे माँ से बात नहीं करनी थी। ऒर बस। सब पहले जॆसा हो गया था। पर इस बार माँ ने जो किया है उससे उसे बहुत गुस्सा है । तभी तो वह माँ से कभी बात नहीं करना चाहता।

लू लू ने इधर-उधर देखा। कान लगा कर सुना भी। कहीं से आवाज नहीं आ रही थी। उसने पाया कि वह एकदम अकेला था। सोचा, जब यहां कोई है ही नहीं तो वह ऎसे क्यों बॆठा रहे-मुंह फुलाकर। 'पर मैं तो उदास हूं। गुस्सा हूं। फिर मुंह कॆसे न फुलाऊं'? उसने अगले ही क्षण सोचा।

जल्दी ही लू लू इस उधेड़-बुन से निकल गया। उसके हाथ कोई गेम (खेल) जो लग गया था। उसने अकेले ही खेलना शुरु कर दिया।

लू लू अब काफी हद तक शांत हो चुका था। उसे कुछ-कुछ मज़ा भी आ रहा था। उसे मज़ा क्यों आ रहा था, इस बात को लेकर लू लू ने जरा भी नहीं सोचा। उसे तो बस यही लगा कि जब आस-पास कोई रोकने-टोकने वाला नहीं होता तो मज़ा आता है ।

अचानक उसे फिर याद आया -वह तो नाराज़ है । उसे मां से कभी नहीं बोलना है । 'पर माँ बार-बार याद क्यों आ रही है ', उसने सोचा। उसने यह भी सोचा कि वह क्यों चाहता

है कि माँ आए ऑर उसे मनाए। लू लू थोड़ा परेशान होने लगा। माँ से नाराज होने की बात उसे कम लगने लगी थी। उसे तो माँ का आकर उसे न मनाना ज़्यादा खराब लग रहा था। उसके मन में आया-'माँ उससे प्यार नहीं करती।'

तभी बाहर से आवाज आई। माँ की थी -'लू लू कहां है तू? ज़रा यहां तो आना बेटे!' लू लू ने सुन लिया। उसने सोचा, 'मैं नहीं जाऊंगा। जब माँ को मेरी परवाह नहीं तो मैं ही माँ की परवाह क्यों करूं?...पर जाना तो होगा ही। माँ के पास एक आंटी भी तो आई हुई है। आंटी क्या सोचेगी।' असल में उसे पापा की बात याद हो आई थी। पापा ने कहा था कि दूसरों के सामने हमें अपने घर के झगड़े नहीं दिखाने चाहिए। उसे यह भी याद आया कि तब उसे 'झगड़े' शब्द का मतलब ही नहीं मालूम था। जब पापा से पूछा तो उन्होंने बताया था- लड़ाई समझ लो। याद करते-करते उसे लगा- 'मुझे हंसी आ रही है । मुझे तब 'झगड़े' शब्द का मतलब ही नहीं पता था। हम कॅसे नए-नए शब्द ऑर उनके अर्थ सीख जाते हें न! पता नहीं नए-नए शब्द ऑर उनके अर्थ जानकर हमें इतना मज़ा क्यों आता है ?'

माँ की फिर आवाज आई- 'लू लू बेटे, ज़रा सुन तो! सो तो नहीं गया बेटू!' लू लू ने फिर सुना। सोचा- 'माँ की आवाज कितनी प्यारी है न! जितने प्यार से बुलाती है। माँ को इतने प्यार से नहीं बुलाना चाहिए। मेरा गुस्सा कम होने लगता है। माँ क्यों नहीं समझती कि मैं नाराज हूं।'

लूलू उठा ऑर माँ के पास चला गया। जाकर चुपचाप खड़ा हो गया। उसने मन ही मन सोचा-'माँ मुझे देख क्यों नहीं रही? क्यों नहीं समझ रही कि मैं नाराज हूं।' तभी माँ ने कहा-' लू लू बेटे, आंटी को बताना तो ज़रा! अपने स्कूल की वह बात! वही टीचर की शाबासी वाली बात। मैं बताने लगी तो आंटी ने कहा कि ये तुम्हारे मुंह से ही सुनेगीं।' 'मैं क्यों बताऊं अब?'-लू लू के मन में आया। पर लू लू तो कब से बताना चाहता था। जो भी सुनता उसकी प्रशंसा जो करता था। लू लू को प्रशंसा बहुत अच्छी लगती थी। प्रशंसा सुन कर लू लू को थोड़ी झिझक जरूर होती थी। पर तब भी। इम्पोरटेंस (महत्त्व) मिलने पर उसे बहुत बहुत खुशी होती थी। अपने को खास समझने का मॉका जो मिलता था। लू लू यह सब सोच ही रहा था कि आंटी बोली- 'लू लू बेटे! तुम्हारी माँ ने थोड़ा-थोड़ा बताया तो है पर मैं तो तुमसे सुनना चाहती हूं। बतलाओ न? शरमाओ मत। अच्छी बात बताने में कॅसी शरम?' सुन कर लू लू को बहुत अजीब लगा। लगा कि आंटी तो बड़ी फनी है । उसने सोचा -'मैं शरमा कहां रहा हूं। मैं तो माँ से नाराज हूं इसलिए नहीं बता रहा। कब से तो बताना चाह रहा था। पर अब तो आंटी पूछ रही है ।'

लू लू ने शुरु किया-' आंटी पता है क्या हुआ? हमारे खेलने का पीरियड था। पूरी क्लास के बच्चे खेल रहे थे। थोड़ी देर के लिए हमारे अध्यापक, हमें बताकर वाँशरूम चले गए थे। मेरी दोस्त नयना कोने वाले पेड़ के नीचे जाकर बॅठ गयी थी। उसकी तबीयत ठीक नहीं थी न? इसीलिए। मैं ने देखा कि स्कूल में काम करने वाले एक अंकल उसके पास आए ऑर कुछ पूछने लगे। तभी मैं ने देखा कि नयना अंकल के साथ-साथ चली गई। वह बीमार थी इसलिए शायद धीरे-धीरे चल रही थी। मैं ने सोचा कि मैं भी पीछे-पीछे चला जाता हूं। शायद उसकी मदद करनी पड़े। मुझे अजीब लगा। अंकल नयना को दो कमरों के बीच की खाली जगह की ओर ले जा रहे थे। उधर तो कोई भी नहीं जाता। मैं छिपा रहा। अंकल ने नयना की पीठ पर हाथ लगा कर पूछा-'यहां दर्द है ?' नयना ने मना किया। तब

अंकल ने नयना को ऎसी -ऎसी जगह छूना शुरु कर दिया जहां नहीं छूना चाहिए था। सू सू की जगह भी।यह सब मैं ने टी.वी.केएक कार्यक्रम से जाना था। नयना को बुरा लग रहा था। वह वहां से चले जाना चाहती थी। लेकिन अंकल जाने ही नहीं दे रहे थे। बीच-बीच में नयना को डांट भी रहे थे। बड़े डरावने लग रहे थे। मुझे बहुत डर लग रहा था।सोचा भाग जाऊं।कहीं दिख गया तो अंकल मुझे बहुत मारेगें। क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। नयना मेरी दोस्त है , मुझे उसकी मदद करनी चाहिए। पर मैं तो बहुत छोटा हूं। तभी मुझे कुछ सूझा। मैं भाग कर खेल की मॅदान की ओर भागा। अध्यापक आ चुके थे। मैं ने उन्हें सब कुछ बताया ऑर उन्हें लेकर उस जगह ले कर गया जहां अंकल नयना के साथ थे। नयना सुबक रही थी ऑर अपने को छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन अंकल मान ही नहीं रही थी। हमारे अध्यापक ने अंकल को जोर से पकड़ लिया ऑर प्रिंसिपल के रूम (कमरे) में ले गए। हमें भी साथ-साथ आने को कहा। हमारी बात सुनकर प्रिंसिपल जी को अंकल पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने अंकल को बहुत डांटा तो अंकल ने अपनी गलती मानी ऑर सॉरी कहा। लेकिन प्रिंसिपल ने हमारे अध्यापक से कहा -'मैं इस बदमाश को पुलिस में दूंगा।' ऑर मेरी ओर देखते हुए कहा-'तुमने बहुत ही बहादुरी ऑर समझदारी काम किया है । शाबास! तुम्हें पुरस्कार मिलेगा।' नयना को बहुत ही प्यार से देखते हुए कहा-'डरो नहीं बेटी। मैं इस को ऎसा सबक सिखाऊंगा कि आगे से कोई ऎसी हरकत नहीं करेगा।' अगले दिन सुबह की ऎसेम्बली (सभा) में, प्रिंसिपल जी ने सबके सामने मेरी बहुत प्रशंसा की। पुरस्कार देने की बात भी की। मुझे बहुत बहुत बहुत अच्छा लगा। नयना भी बहुत खुश थी। नयना के ममी-पापा तो हमारे घर भी अए थे। मुझे प्यार करने।'

बात खत्म हुई तो आंटी ने कहा-'अरे लू लू, तुम तो सच्ची में बहुत समझदार हो। बहादुर भी।' पर कहानी सुनाने के बाद लू लू फिर उदास हो गया था। वह चुप हो गया था। उसका उतरा हुआ चेहरा देख कर आंटी ने पूछा- 'लू लू तुम्हारा मुंह क्यों लटक गया है ?' 'हाँ हाँ लू लू, तुम्हें क्या हुआ है ? इतने अच्छे से तो अपनी बात बतायी है !'-लू लू की माँ ने भी पूछा।

'लेकिन माँ, मैं आपसे बहुत नाराज हूं!' लू लू ने कहा।
'क्यों भला? तुम तो मेरे प्यारे-प्यारे बेटे हो।' माँ ने आश्चर्य से पूछा।
'लेकिन माँ, जब आंटी ऑर आप कपड़ों की बातें कर रही थीं तो मैं आया था न?'
'हां, आया था।'
'तो मेरी बात क्यों नहीं सुनी थी? कितनी बार माँ माँ करता रहा था।'
'कौन-सी बात लू लू?'
'मैं ने जब कहा था कि माँ मैं अपनी बात बताऊं तो आपने कहा था न कि बाद में बताना। अभी हम बात कर रहे हैं। बड़ों के बीच बच्चे नहीं आते। मैं बच्चा नहीं हूं माँ। मैं भी बताना चाहता हूं। कितनी कोशिश की थी मैं ने। पर आपने बोलने ही नहीं दिया। तभी तो मैं नाराज हूं। अंदर भी चला गया था।'
'कोई जरूरी बात बतानी थी लू लू?' आंटी ने पूछा।
'हां आंटी, यही बात तो बतानी थी! स्कूल वाली!' लू लू ने आंटी से कहा।
'अरे, यह तो सचमुच बड़ी गलती हो गई। हमने तो अपनी बातों की मस्ती में तुम्हें सुना ही नहीं।' आंटी ने कहा।
'हाँ लू लू, मुझे भी लग रहा है कि मुझसे गलती हो गई है। आगे से तुम्हारी बात जरूर सुनुंगी। सॉरी लू लू!' माँ ने लू लू को अपनी ओए खींचते' हुए कहा।
'ओके माँ!' लू लू ने खुश होकर कहा।

लू लू को बहुत अच्छा लग रहा था। उसने मन ही मन कहा-"माँ इतनी अच्छी क्यों होती है ?"

देशभक्त डाकू

'एक था डाकू। रौबीला। मूंछों वाला। हट्टा कट्टा। निडर। उसके कई साथी थे। सभी डाकू। बन्दूकों वाले। डर तो नहीं लग रहा न?'

परियों, फूलों, प्यारे-प्यारे जानवरों, तितलियों और प्यारी प्यारी बूंदों की कहानियाँ सुनाने वाली हमारी दादी ने उस दिन कुछ ऐसे ही कहानी शुरू की थी। डाकू की कहानी। हमें थोड़ा डर तो लगा था पर कहानी सुनने का मज़ा भी तो लेना था। हमने कहा - नहीं दादी, हम किसी से नहीं डरते। आप सुनाइये न डाकुओं की कहानी।

दादी की आँखों में भी हँसी आ गई थी। बोली। तुम जानते हो न कहानी सुनाने की शर्त क्या है?।

'आपका सवाल, हमारा उत्तर' हमने झट कहा।

'तो बताओ अगस्त के महीने का क्या महत्व है।'

हम चुप। सोच जो रहे थे।

'बोलो, बोलो'।

'मेरा जन्म दिन', मेरी छोटी बहन काकू बोल पड़ी थी।

'अरे हाँ, एक अगस्त को तो काकू का जन्म दिन होता है। पर यह बताओ अगस्त में एक और किसका जन्म दिन होता है। दादी ने गर्दन हिलाते हुए पूछा।

'हम सब फिर चुप थे। तभी मुझे उत्तर सूझा। मैंने कहा, 'हमारे देष की आज़ादी का।'

'वाह!, 'दादी ने कहा - '15 अगस्त 1947 को हमारा देश आज़ाद हुआ था। जानते हो इस आज़ादी के लिए कितनी लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ी थी। अंग्रेजों से। 1857 से लेकर 1947 तक। कितने ही देशभक्तों को कुर्बानी भी देनी पड़ी। और लड़ाई भी कितने कितने ढंग से लड़ी गई। अच्छा वह सब फिर कभी बताऊँगी। पर जानते हो एक देषभक्त डाकू भी था।'

हम सब चैंक गए। मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। दादी को हो क्या गया था, डाकू को देषभक्त कह रही थी।

दादी ने जैसे मेरे मन की बात जान ली हो। बोली, 'अरे बच्चो लगता है तुम डाकू का मतलब आजकल के डाकू जैसा समझ रहे हो। असल में एक ऐसे देषभक्त थे जिसने डाकू

बनकर अंग्रेजों की नाक में दम कर डाला था। वह आम लोगों को कुछ भी नहीं कहता था। बल्कि प्यार करता था। उनकी मदद करता था।

'अच्छा!' हमनें तो पहली बार किसी भी अच्छे डाकू की बात सुनी थी। अब तो डाकू की कहानी सुनने का और भी मन हो उठा। सो बैठ गए डट कर। और कहानी थी कि धीरे-धीरे उतरने लगी थी दादी के होठों से।

डाकू का नाम था गेंदालाल। आगरा का नाम तो सुना है न। वही दुनिया के आठवें चमत्कार वाला षहर। यानी प्यारे-प्यारे सुन्दर सुन्दर ताजमहल वाला षहर। उसी का एक गाँव है - बटेसर। इसी गाँव के थे भोलानाथ दीक्षित। और इन्हीं का बेटा था गेंदालाल। इनका जन्म सन् 1888 में हुआ था।

गेंदालाल के पिता के पास पैसा तो था नहीं। सो गेंदालाल मुश्किल से ही इन्टर पास कर सके। आगे की पढ़ाई रोकनी पड़ी। कितने दुःख की बात है न? गेंदालाल को भी बहुत दुःख हुआ। आँखों में आँसू भी आए। पर कम उम्र में भी समझदार थे। पिता की मुश्किल को समझते थे। सो सोचा कि नौकरी ही कर लें। सो एक कॉलेज में अध्यापक बन गए।

पर गेंदालाल को देश की पराधीनता हमेशा खलती थी। उन्हें लगता कि अंग्रेजों की गुलामी उन्हें ठीक से सांस भी नहीं लेने दे रही। उन्होंने आज़ादी के लिए चल रही क्रांति में भाग लेना शुरू कर दिया। छत्रपति शिवाजी के नाम पर एक सभा बनाई। जानते हो न कि छत्रपति षिवाजी भी बहुत बड़े देशभक्त थे। उनके मन में नए विचार आते थे। सोचा नवयुवकों को एकजुट करके अंग्रेजों से संघर्ष किया जाए। पर कैसे?

एक दिन बैठे सोचते रहे। सोचते रहे। कुछ सूझ ही नहीं रहा था। तभी उन्होंने एक अद्‌भुत दृश्य देखा। सपने में।

एक उजाड़ सी जगह। दूर दूर तक कुछ नहीं। न सड़क, न बिजली। बस थोड़े-बहुत पेड़ और उनके बीच दो-तीन घर। रहने वाले मुश्किल से 20-22 आदमी। एकदम गरीब। एक वक्त का खाना भी मुश्किल से खा पाते। तभी क्या देखते हैं कि दूर से धूल उड़ती आ रही है। आ रही है। धूल जितनी पास आ रही थी उसमें से दो-तीन आकृतियाँ उभरने लगी थीं। घोड़ों पर। अरे यह क्या। पास आते ही वे उन गरीब लोगों को मारने लगे। उनसे उनका थोड़ा-बहुत सामान भी छीनने लगे। वे रोते रहे लेकिन घोड़े वालों पर कोई असर नहीं हुआ। वे मार रहे थे और हा हा हा कर हँस रहे थे। साथ ही बोल रहे थे - 'गुलामों, अगर कभी भी सिर उठाने या यहाँ से भागने की कोशिश की तो हम तुम्हें काट डालेंगे।' गुलाम क्या बोलते। घोड़े वालों के पास तो बन्दूकें थीं, और कितना ही सामान था। ऐसे ही कितने ही छोटे-छोटे गाँव उनके गुलाम थे। और इन गरीबों के पास तो लड़ने को न अपनी ताकत ही थी और न लड़ने के

हथियार ही। खाना तक तो ठीक से मिलता नहीं था और कपड़ों की तो पूछो ही मत। बस रो ही सकते थे वे। घोड़े वाले आगे बढ़ गए।

तभी घोड़े वालों की दिषा में ही फिर धूल उड़ती दिखाई पड़ी। दिल धक धक कांपने लगा। वे भी ज़रूर इन घोड़े वालों के साथी होंगे। ज़रूर इन गरीब लोगों को मारेंगे और उनसे सामान भी छीनेंगे। डर भी लगने लगा। पर गुस्सा भी आया। धीरे-धीरे धूल में से आकृतियाँ उभरने लगीं। ये ऊँट वाले कुछ लोग थे। अरे यह क्या! इन्होंने तो घोड़े वालों से ही लड़ना षुरू कर दिया। लो अब उन्हें पीटने भी लगे। उनका सामान भी छीन लिया। घोड़े वाले तो दुम दबा कर भाग गए। बड़ा मज़ा आया। पर यह क्या? ऊँट वाले इधर ही आ रहे थे। गरीब लोगों की ओर। क्या ये भी इन्हें पीटेंगे? कौन हैं ये। पर देखें कैसे। इन्होंने तो अपने मुँह ढक रखे थे। केवल आँखे दिख रही थीं। बिल्कुल डाकुओं जैसे लग रहे थे। डाकू ही थे। पर यह क्या। इन्होंने तो पास आते ही सबको गले लगाना षुरू कर दिया। घोड़े वालों से लूटा हुआ सामान गरीबों को देना षुरू कर दिया। गरीबों के चेहरे खिलने लगे थे। जैसे सरसों के फूल खिलते हैं। जैसे बच्चों के चेहरे खिलते हैं। ऊँट वाले कह रहे थे -- 'तुम सब अपने को गुलाम मत समझो, गुलामी के खिलाफ़ लड़ो। आज़ाद होकर खुशी से जीओ। सबने कहा, 'हाँ, हम गुलामी के खिलाफ़ लड़ेंगे। बताइये हम क्या करें।'

'ठीक है।' ऊँट वालों के सरदार ने कहा - 'तो जो नौजवान हैं वे हम डाकुओं में मिल जाएँ। ज़्यादा और एक होकर ही तो हम गुलामी के खिलाफ़ लड़ सकेंगे। हम दुश्ट घोड़े वालों का सामान लूटेंगे और उन्हें अपने लोगों में बाँटेंगे। लोग ताकतवर हो जाएँगे। फिर एक दिन आएगा जब सब घोड़े वाले यहाँ से भाग जाएँगे। बोलो ठीक है।'

'हाँ हाँ ठीक है।' सब गरीब ज़ोर ज़ोर से बोले। पता नहीं कहाँ से उनमें ताकत आ गई थी!

सपना खत्म हो गया। गेंदालाल थोड़ी देर सोचते रह गए। कैसा दृष्य था यह! पर धीरे-धीरे उनकी समझ में कुछ आ गया। उन्हें लगा कि देष को गुलाम बनाकर रखने वाले अंग्रेज घोड़े वाले हैं, पूरा देष गरीब लोग हैं। उन्हें बचाने के लिए ऊँट वाले डाकुओं की ज़रूरत है। देशभक्त डाकुओं की। गेंदालाल को जैसे राह मिल गई थी। उसने तभी तो डाकुओं का अच्छा और मजबूत संगठन बनाने की ठानी। जो अंग्रेज़ों को लूट सके। उन्हें परेषान कर देष से भगा सके। जो क्रांतिकारी हैं उन्हें, अंग्रेजों से लूटा धन-माल देकर उनकी मदद कर सके।

बस अब क्या था। चल निकले गेंदालाल दीक्षित अपनी राह पर। उन्होंने जेल में बंद देषभक्त डाकू कैदियों को छुड़ाया। उन्हीं में उन्हें एक सूझ बूझ वाला डाकू मिल गया। नाम था - ब्रह्मचारी। ब्रह्मचारी को बन्दूक आदि भी चलानी आती थी। उसने डाकुओं के संगठन को अस्त्र-षस्त्र चलाने सिखाए। ये सब चंबल और यमुना के बीच बीहड़ों में छिप कर काम

करते थे। ब्रह्मचारी के किस्से अंग्रेजों तक भी पहुँचे। वे उसे पकड़ना चाहते थे। देष के कुछ ऐसे धनी लोग भी थे जो अंग्रेजों का साथ देते थे। डाकू गेंदालाल देशभक्त क्रांतिकारियों के लिए उन्हें भी लूटते थे।

पर एक बार उनके गिरोह में एक भेदिया भी घुस गया। वह उनकी सारी गुप्त योजनाओं की जानकारी अंग्रेजों को दे देता था। एक बार तो हद ही हो गई। वह सबको खिलाने के लिए पूरियाँ लाया। सब पूरी खाने लगे। देखते ही देखते सबका जी मचलाने लगा। असल में उसने पूरियों में ज़हर मिला दिया था। पानी लाने के बहाने वह वहाँ से खिसकने लगा। पर ब्रह्मचारी की तेज आँखों ने उसे पहचान लिया। उसने भेदिए पर गोली चला दी। गोली की आवाज सुन पहले ही से पास छिपी पुलिस वहाँ आ गई। जमकर लड़ाई हुई। कितने ही क्रांतिकारी डाकू मारे गए। गेंदालाल और ब्रह्मचारी हार गए। पकड़ लिए गए। पर वे मन से नहीं हारे। कैद में भी आगे की योजना बनाने लगे।

गेंदालाल के साथियों ने उन्हें कैद से छुड़ाने की खूब कोषिष की। अंग्रेजों की नाक में दम किया। पर अंग्रेज काफी ताकतवर थे। उन्होंने देषभक्तों को गिरफ्तार करने की गति बढ़ा दी। वे लालच देकर कुछ नवयुवकों को अपनी ओर कर लेते थे। और उनसे भेदियों का काम लेकर क्रांतिकारियों को पकड़ लेते थे। ये गद्दार थे।

गेंदालाल कैद में ही बीमार हो गए। सूख कर काँटा हो गए। उन पर मुकदमें चलाए गए। अंग्रेजों के ही जज थे और उन्हीं का कानून था। उन्हें आजीवन कारावास या फाँसी की सजा मिल सकती थी। गेंदालाल ने सोचा कि यदि ऐसा हुआ तो क्रांति आगे कैसे बढ़ेगी। उन्हें एक तरकीब सूझी। अंग्रेजों को उल्लू बनाने की। उन्होंने पुलिस को सूचना दी कि वे सरकारी गवाह बनना चाहते हैं। यानी पुलिस के अपने आदमी। यह भी कहा कि वे क्रांतिकारियों को पकड़वाने में मदद भी करेंगे। अंग्रेजों की पुलिस के पास अपना दिमाग तो कम ही था। गेंदालाल की चाल में फँस गई। गेंदालाल को सरकारी मुखबिर बना लिया। पर गेंदालाल तो भारत माँ के सच्चे सपूत थे।

एक दिन मौका पाकर एक दूसरे मुखबिर रामनारायण के साथ गायब हो गए। कोटा पहुँच गए। पर रामनारायण भी उस्ताद निकला। एक दिन गेंदालाल को कोठरी में बंद कर सारा समान ले चंपत हो गया। पर उसने पुलिस को गेंदालाल के बारे में कुछ नहीं बताया। गेंदालाल तीन-चार दिन, भूखे-प्यासे कोठरी में पड़े रहे। बीमार तो थे ही। पर साहस नहीं छोड़ा था। हर क्षण देष को आज़ाद कराने की ही सोचते। किसी तरह कोठरी से निकले। पैदल ही आगरा की ओर चल पड़े। इधर पुलिस ने गेंदालाल के परिवार को तंग कर डाला था। यहाँ तक कि परिवार भी गेंदालाल को गिरफ्तार कराने की सोचने लगा।

बीमारी की गंभीर हालत में ही दिल्ली पहुँचे। छिपने के लिए एक प्याऊ पर नौकरी षुरू की। पर बीमारी थी कि बढ़ती चली गई। उन्हें एक ही अफ़सोस सताता कि क्रांति के

लिए वे जितना काम कर सकते थे, नहीं कर पा रहे। अब तो उन्हें बेहोषी भी आ जाती थी। किसी ने उनकी पत्नी को सूचित कर दिया।

पत्नी आ गई। उनकी खूब सेवा की। मौत उन पर छा चुकी थी। पर वे जीना चाहते थे। वे मोक्ष भी नहीं चाहते थे। दूसरे जन्म में भी क्रांतिकारी डाकू ही बनना चाहते थे। उन्होंने चाहा कि बच्चे उनकी पसन्द का गीत सुनाएँ। बड़ों ने इशारा किया। बच्चों ने उत्साह से गाया

अरे गुलामी! ना ना ना ना
हो आजादी हाँ हाँ हाँ हाँ

उछल उछल कर कूद कूद कर
कहते बच्चे हाथ उठाए
सुन ले सुन ले दुनिया सारी
आजादी हम सबको भाए

अरे गुलामी! ना ना ना ना
हो आजादी हाँ हाँ हाँ हाँ

तुम भी गाओ हम भी गाएँ
हाथी गाए चिड़ियाँ गाएँ
पर्वत गाए नदियाँ गाएँ
आज़ादी के गाने गाएँ

अरे गुलामी! ना ना ना ना
हो आजादी हाँ हाँ हाँ हाँ

झूम झूम कर बादल गाएँ
चली झुलाती उन्हें हवाएँ
तुम भी गाओ हम भी गाएँ
आजादी के गाने गाएँ

अरे गुलामी! ना ना ना ना
हो आजादी हाँ हाँ हाँ हाँ

उन्होंने 21 दिसम्बर 1920 को भारत माँ की गोद में प्राण त्याग दिए।

सबकी आँखों में आँसू थे। लेकिन जुबान पर थी - 'पंडित गेंदालाल दीक्षित की जय।' भारत माता की जय।

किस्सा चाचा तरकीबूराम का

चाचा तरकीबूराम और किसी के प्यारे हों न हों, पर बच्चों के बहुत प्यारे हैं।गाँव भर में कोई ऐसा बच्चा नहीं है, जो उनकी बैठक में न जाता हो। चाचा तरकीबूराम भी हर वक्त बच्चों की मदद के लिए तैयार रहते हैं। बस कोई बच्चा पहुँच जाए अपनी समस्यालेकर, वे सबकुछ छोड़-छाड़कर उसे सुलझाने में लग जाएँगे। वे अक्सर गाँव में ही रहते हैं। बहुत ही जरूरी हो तभी शहर या दूसरी जगह जाते हैं--वह भी एक दिन भर के लिए। असल में न तो उनका दिल बच्चों के बिना लगता है और न बच्चों का उनके बिना। अब तो चाचा तरकीबूराम के किस्से दूसरे गाँ के बच्चों तक भी पहुँच गए हैं। किस्से भी द्स-पाँच हों तो! अब वही किस्सा ले लो!

गाँव में तालाब के किनारे एक छोटा-सा प्राइमरी स्कूल है। वीन्य़ इसी स्कूल में चौथी कक्षा का विद्यार्थी है। करीब एक महीणे पहले उस बेचारे पर मूसीबत टूटी थी।

एक दिन जब उसने आधी छुट्टी में अपना खाने का डिब्बा खोला तो दंग रह गया। खाना गायब था। उसकी माँ उसे रोज बढ़िया-बढ़िया चीजें खाने के लिए रखती थी। उसने सोचा शायद माँ आज खाना रखना ही भूल गई। उसने भूखे पेट ही किसी तरह बिताया। पेट में कूद रहे चूहों ने उसे परेशान तो बहुत किया, पर बेचारा करता भी क्या।

शाम को घर पहुँचते ही उसने माँ से शिकायत की---"माँ, आज तुमने खाना क्यों नहीं रखा?" माँ ने वह शिकायत सुनी तो हक्की-बक्की रह गई। उसने तो अपने हाथ से अच्छा-अच्छा खाना डिब्बे में रखा था।

अगले दिन माँ ने वीनू के सामने ही डिब्बे में खाना रखा। आधी छुट्टी में जब वीनू ने डिब्बा खोला तो रुआँसा हो गया। खाना फिर गायब था। उसने अध्यापक से शिकायत कीतो अध्यापक ने सब बच्चों को डाँटते हुए पूछा--"वीनू का खाना किसने चुराया है? सच-सच बता दो वरना सब को मुर्गा बनाऊँगा। लेकिन किसी ने चूँ तक नहीं की।

वीनू के एक अच्छे दोस्त मटरू ने खाने में से थोड़ा वीनू को दिया। वीनू ने उतने खाने से ही किसी तरह गुजारा किया।घर जाकर उसने माँ सेसारा किस्सा सुनाया।उसने यह भी कहा--"माँ अगर कल भी किसी ने मेरा खाना चुराया तो में भी किसी का खाना चुरा लिया करूँगा।" माँ ने वीनू की बात सुनी तो प्यार से बोली--"तुम्हारा गुस्सा बहुत ठी है बेटे! लेकिन कोई गन्दा काम करे तो खुद गन्दा काम करने से समस्या नहीम सुलझती! और फिर सजा गन्दा काम करनेवाले को ही मिलनी चाहिए! तुम चोर को पकड़ने की कोशिश करो! कल तुम और मटरू चोर पर पूरी नजर रखना।"

अगले दिन फिर वही हुआ! वीनूऔर उसके दोस्त मटरू ने ध्यान तो खूब रखा था पर न जाने चोर खाने पर कब हाथ साफ कर गया। बेचारे दोनों बहुत उदास हो गए। वीनू को तो लगा था कि अब वह कभी दोपहर का खाना नहीं खा सकेगा। उसे रोज ही भूखे पेट पढ़ना पड़ेगा।

मटरू ने बहुत दिमाग लद्आया कि चोर को पकड़ने की कोई तरकीब सूझ जाए ताकि उसके दोस्त को भूखा न रहना पड़े, लेकिन सब बेकार। आखिर उसे अचानक तरकीबूराम का ध्यान आया। उसका चेहरा एकदम खिल गया। वह चहककर बोला--वीनू, तुम्हारा चोर मिल गया! तुम्हारा चोर मिल गया!" वीनू ने इधर-उधर देखा, वहाँ कोई नहीं था। तभी मटरू ने बताया--"अरे, हमें तरकीबू चाचा का अभी तक ख्याल नहीं आया था। चलो उनके पास। वे जरूर चोर को पकड़ लेंगे।

"अरे, हाँ, तरकीबू चाचा का तो ध्यान ही नहीं रहा था। आज स्कूल से लौटते वक्त उनके पास चलेंगे।" उस दिन उनका बाकी का समय बहुत ही आराम से कटा।

शाम को घर लौटते वक्त वे दोनों पहुँच गए तरकीबू चाचा की बैठक में। तरकीबू चाचा बड़े मजे से बैठे हुए थे। बच्चों को देखा तो खुश होकर बोले-"अरे, आओ-आओ, वीनू-मटरू! आज कई दिनों बाद आए हो। क्या कोई नाराजगी है भई अपने तरकीबू चाचा से?"

"नहीं, चाचा, नहीं! यह बात नहीं है। असल में पिछले कई दिनों से हम बहुत परेशान हैं। स्कूल में बेचारे वीनू का कोई खाना चुरा लेता है। इसे भूखे पेट ही रहना पड़ता है।मास्टर जी ने सब बच्चों को खूब डाँटा भी, लेकिन किसी ने भी तो नहीं बताया कि चोर कौन है।" मटरू ने बताया।

"अच्छा तो बात यह है!" चाचा तरकीबूराम ने गम्भीर होकर कहा। जब वे गम्भीर होकर सोचते हैं, तो अपनी मूँछों को दोनों ओर से मरोड़ने लगते हैं। मूँछों को मरोड़ते हुए उन्होंने पूछा--"कितने दिन से यह किस्सा चल रहा है?"

"छह: दिनों से, तरकीबू चाचा!" वीनू ने उत्सुकता के साथ बताया।

"ऊँ, तो मास्टरजी की डाँट खाकर भी किसी ने नहीं बताया कि चोर कौन है?"

"नहीं चाचा!" मटरू ने एकदम बताया।

घोड़ी देर के लिए सब चुप हो गए।चाचा तरकीबूराम ने अपनी आँखे बन्द कर लीं। दोनों बच्चे उनकी आँखें खुलने की प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देर में चाचा तरकीबूराम के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ती नज़र आने लगी और उन्होंने झट से आँखें खोल दीं। फिर उन्होंने धीरे-धीरे कहा- "तुम्हारा चोर पकड़ा गया समझो, वीनू! अब जैसा मैं कहूँ, तुम दोनों वैसा ही करो।"

"हमें क्या करना होगा, चाचा-" दोनों ने पूछा।

"सुनो!" चाचा ने दोनों के कान में कुछ कहा। सुनकर दोनों उछल पड़े।

अगले दिन स्कूल से छुट्टी होते ही वीनू और मटरू सिवाले वाले पेड़ के पास पहुँच गए। चाचा तरकीबूराम पहले से ही वहाँ मौजूद थे।

तीनों पेड़ के मोटे तने के पीछे छिप गए। थोड़ी ही देर में किसी के आनेकी आहट नजदीक आ गई। किसी की आवाह आई-"हे पेड़वाले भूत! लो यह एक पूरी और सब्जी! आज वीनू पूरी और सब्जी लाया था। मैं यहाँ पेड़ की जड़ में रख रहा हूँ। तुम खा लेना। अब तो तुम रात को मुझे डराने नहीं आओगे न?"

"अरे, यह तो शैतान लखमी की आवाज है। अछ्छा तो यह है चोर!" वीनू ने बहुत ही धीमे-धीमे कहा।।

तभी चाचा ने मोटी-सी, भद्दी-सी आवाज निकालते हुए कहा-"शाबास, लखमी! मैं खुश हुआ। अब मैं तुम्हें रात में डराने नहीं आऊंगा!"

आवाज सुनकर लखमी बहुत खुश हुआ।वह बोला-अच्छा तो भूत जी, मैं जा रहा हूँ।" यह कहकर वह चलने को हुआ ही था कि वीनू-मटरू के साथ चाचा तरकीबूराम ने सामने आकर उसे पकड़ लिया। वह भौंचक्का-सा रह गया। वह रंगे हाथों जो पकड़ा गया था।उसने चाचा तरकीबूराम से बहुत माफी माँगी, लेकिन चाचा तरकीबूराम उसे पकड़कर सीधा मास्टरजी के पास ले गए। लखमी असल में पहले भी कई बर अपनी शरारतों को लेकर चाचा तरकीबूराम से माफी माँग चुका था। चाचा भी माफ करते रहे थे।

मास्टर्जी ने सारा किस्सा सुना तो उन्होंने लखमी को बहुत डाँटा और अगले दिन उसके माँ-बाप को बुलाकर उसकी शिकायत भी की। इतना ही नहीं, स्कूल के सारे बच्चों के सामने उसके गले में 'चोर' की पट्टी लटकाकर, उसे घुमाया गया। लखमी ने जब नाक रगड़-रगड़कर यह कहा कि वह कभी चोरी नहीं करेगा, तभी उसे माफ किया गया।

अब तुम यह तो जरूर जानना चाहोगे कि आखिर तरकीबूराम चाचा की तरकीब क्या थी, जिसे सुनकर वीनू-मटरू उछल पड़े थे और जिसके कारण लखमी की चोरी पकड़ी गई थी।

भई, हुआ यह कि चाचा ने उनके कान में कहा था कि वीनू अगले दिन खाने के डिब्बे में एक पर्ची भी रख दे, जिसे पर भद्दी सी लिखावट में लिखा हो-"मैं सब जानता हूँ। तुम रोज वीनू का खाना चुराकर अकेले-अकेले खा जाते हो। अगर आज तुमने थोड़ा-सा खाना मेरे लिए नहीं रखा तो मैं रात को तुम्हें बुरी तरह डराऊँगा। मैं सिवालेवाले पेड़ का भूत हूँ। स्कूल से छुट्टी होने के ठीक आधा घण्टे बाद तुम आज के चुराए हुए खाने में से थोड़ा खाना लेकर पेड़ के पास पहुँच जाना और उसकी जड़ में रखकर मुझे आवाज देकर बता देना। इध-उधर बिलकुल मत देखना।"

बस तरकीबूराम चाचा की तरकीब कामयाब हो गई। लखमी ने उस पर्ची को भूत कि लिखी पर्ची समझकर वैसा ही किया, जैसा पर्ची में लिखा था। उसे तब तक यह तो पता ही नहीं था कि भूत-वूत कुछ नहीं होता, सो आ गया चाचा के शिकंजे में। अब तो समझ गए न?

लो, मुझे एक और किस्सा याद हो आया। तुम भी क्या कहोगे कि चाचा तरकीबूराम के ही किस्से सुनाने पर लग गए। अच्छा चलोयह किस्सा फिर कभी। अब तुम अपने कोर्स की किताब पढ़ लो। शायद तुम्हें यह नहीं मालूम कि चाचा तरकीबूराम यह कभी नहीं चाहते कि उनके किस्से सुनने-पढ़ने वाले बच्चे अपनी स्कूल की पढ़ाई में फिसड्डी रहें। उन्होंने खासतौर पर कहा था कि उनके किस्से उन्हीं बच्चों को बताए जाएँ, जो खूब मन लगाकर पढ़ते हों।

अरविंद कुमार साहू की बाल कहानियां -

"बदल गई ईशा"

ईशा बड़ी नकचढ़ी लड़की थी | अपनी किसी भी सहेली से ज्यादा दिन तक उसकी पटरी नहीं बैठती थी | जरा – जरा सी बात पर तुनकती रहती | जिधर से घर मे आती , मम्मी से किसी न किसी सहेली की शिकायत जड़ देती | - " रेशू ने मेरे सामने अपनी गुड़िया की इतनी तारीफ किया ,जैसे मेरे पास इतनी अच्छी गुड़िया ही नहीं है | मेरी गुड़िया उससे खराब है क्या ? वह नयी खरीदकर लायी है इसीलिए भाव खा रही है | मम्मी समझाती – " बेटी, उसने तेरी गुड़िया की बुराई तो नहीं किया | सिर्फ अपनी नई गुड़िया की तारीफ किया, फिर इसमे गलत क्या है?"

" मेरी गुड़िया की बुराई करती तो उसका मुंह नोच लेती मैं | " ईसा गुस्से मे बोली - "बड़ी आई नयी गुड़िया वाली " | मम्मी फिर समझाती - "गलत बात है बेटा , तुम भी तो जब पापा के साथ जाकर अपनी नयी गुड़िया लायी थी तो कितना खुश थी | अपनी सारी सहेलियों से उसकी तारीफ करते नही थक रही थी | आखिर रेशू भी तुम्हारी ही तरह छोटी लड़की है |"

-" हुंह, पर मैंने तो उसे अपनी गुड़िया के बारे मे नहीं बताया था | वह क्या सोचती है कि मेरे पास उससे अच्छी गुड़िया नहीं है | मेरी गुड़िया देख ले तो उसकी गुड़िया की तारीफ रखी रह जाएगी |"

- " पर बेटी इसमे इतना भुनभुनाने की क्या बात है | उसने तुम्हें तो कुछ कहा नहीं |"

- " आप भी उसी की तरफ बोलती है | जाइए मैं आपसे भी नहीं बोलूंगी | कुट्टी .....|" और ईशा दनदनाती हुई अपने कमरे मे चली गयी |

मम्मी बोली – " उफ... , ये लड़की भी कितनी नादान है ? आखिर कब समझेगी ?" ये ईशा का रोज का काम था | कल वो शालू से अपनी नई पेंसिल बॉक्स के लिए चिढ़ गयी थी | कारण कुछ खास नही था | बस , शालू ने उसकी नई पेंसिल बाक्स की तारीफ नहीं किया था | परसों , आन्या से बैडमिंटन की रैकेट के लिए गुस्सा हो गयी थी | उसने ईशा से सिर्फ इतना कहा था कि दीदी आपकी रैकेट मुझसे पकड़ते नहीं बनती | शायद थोड़ा सा बड़े साइज़ की है | बस ईशा बिफर गयी – " क्या मैंने तुम्हारे लिए , तुमहरे नाप का रैकेट खरीदा है ? बड़ी आयी बड़ा छोटा बताने वाली | जाकर अपनी नाप के रैकेट से ही क्यों नहीं खेलती ? मेरा क्यों छूती है | मैंने तुझसे अपने साथ खेलने के लिए तो नहीं कहा ?" ऐसी जली – कटी सुन कर आन्या सन्न रह गयी और उदास होकर वहाँ से चली गयी |

ईशा को इस नए शहर की कालोनी मे आए हुए लगभग एक महीना हो रहा था | उसके पापा

का यहाँ तबादला हुआ था | पिछले शहर मे भी ईशा ऐसा अक्सर करती रहती थी | ये उसकी आदत बन गयी थी | पिछले पन्द्रह दिन तो उसे कालोनी के बच्चों से दोस्ती करने मे लग गए थे | अब बाकी के पन्द्रह दिनो मे ही उसकी सबसे कुट्टी होने लगी थी | कोई उसे समझाता तो वह उससे भी रूठ जाती थी | अपने मम्मी – पापा और बड़े भाई से भी | उसकी इसी आदत से धीरे – धीरे मुहल्ले के सभी बच्चे उससे कन्नी काटने लगे थे | कोई भी बच्चा उसके साथ खेलने - घूमने का मन नहीं बना पाता था |

कुछ दिन बाद तो ऐसा माहौल हो गया कि ईशा कालोनी मे अकेली पड़ने लगी | वह घर से बाहर निकलती तो बच्चों का झुंड विपरीत दिशा मे घूमने चल देता | पार्क मे जाती तो बच्चे उससे दूर खेलने लगते | यहाँ तक कि स्कूल की कक्षा मे भी कोई सहेली उसके पास नहीं बैठती थी | उसके अगल – बगल खाली सीट पर वो नए बच्चे बैठने लगे थे , जिनसे ईशा की कभी न दोस्ती हुई थी , न बोल - चाल होती थी | अब ईशा को बड़ा अजीब सा लगने लगा था |

खाली समय काटने को दौड़ता था | वह कभी किताब लेकर बैठती तो ऊब जाती | खेलने निकलती तो सिर्फ अकेले वाला खेल जैसे रस्सी आदि कूद कर संतोष करना पड़ता | घूमने निकलती तो अकेले चुपचाप टहलती रहती | गुमसुम फूलों – पत्तियों को निहारते – छूते हुए गुजर जाती | जबकि थोड़ी ही दूरी पर अनेक बच्चे एक साथ हँसते – खेलते ठहाके लगते रहते थे | लेकिन ईशा को अब भी समझ नहीं आता था कि इतने सारे बच्चे इस तरह उससे दूरी क्यों बनाते जा रहे हैं | एक दिन तो वह अपने छोटे भाई आयुष पर तुनक गयी ,जिसके साथ वह अकसर लूडो या साँप – सीढी खेल लिया करती थी | भाई भी गुस्से मे उठकर चला गया तो उसे अकेले ही दोनों तरफ से खेलकर समय बिताना पड़ा | उसे बिलकुल भी मज़ा नहीं आ रहा था | पर वो करती भी क्या ?

वह बहुत उदास रहने लगी थी | अब अकेलापन उसे काटने को दौड़ता था | ...... और एक दिन तो वह बीमार ही पड़ गयी | मम्मी – पापा ने डॉक्टर अंकल को बुला लिया | उन्होने देखा और जाँच करने के बाद आश्चर्य से कहा – " ईशा को तो कोई बीमारी नहीं हैं | हाँ ,यह कुछ सुस्त और उदास जरूर दिख रही है | ऐसा अकेलेपन और अवसाद के कारण हो सकता है |" डॉक्टर अंकल ने बड़े प्यार से ईशा का सिर सहलाया और पूछा – " इतनी सुंदर और अच्छी बच्ची के पास अकेलापन और उदासी कहाँ से आगयी ? आखिर क्या बात है बेटी !" डॉक्टर अंकल की बात सुनकर ईशा फफक पड़ी | उसने बताया कि मेरे साथ कोई खेलना – बैठना – पढ़ना नहीं चाहता | मेरा भाई भी नहीं | मैं बहुत ऊब जाती हूँ |"

लेकिन ऐसा होता क्यों हैं ? तुम तो बहुत अच्छी लड़की हो |"- " मैं अच्छी हूँ पर ,..... शायद ऐसा कोई और नहीं मानता | मेरा बड़ा भाई भी नहीं | मुझे अकेले ही लूडो खेलना पड़ा | उसकी चाल भी चलनी पड़ी | तब खेल खत्म हो सका | मैं क्या करती ? कल मेरा जन्मदिन भी है |

कोई बच्चा नहीं आएगा | मैं अकेले कैसे मनाऊंगी ? अंकल ! मुझे बिलकुल भी अच्छा नहीं लग रहा |" डॉक्टर अंकल को सारी बात समझते देर न लगी | वे बोले – " जब तुम उन बच्चों को जाकर प्यार और अपनेपन से बुलाओगी तो वे जरूर आएंगे |" इतना सुनते ही ईशा फिर से तुनक गयी - " मैं क्यों बुलाने जाऊँ ? मेरी गलती थोड़े है | वे लोग खुद ही मुझे नहीं बोलते |'

डॉक्टर अंकल ने प्यार से समझाया – " देखो बेटी ! तुम शायद नहीं जानती कि तुम्हारी समस्या क्या है ? ये तुम्हारा 'ईगो' है | ईशा का ईगो , ईशा का बड़बोलापन | दूसरे की बातें और उसकी भावनाएं न समझने की गलती | अपनी बात आगे और ऊंची रखने की गलती | तुरन्त किसी की बात पर बिना सोचे – समझे कड़वी प्रतिक्रिया देने की गलती | तुम्हें अपने व्यवहार मे परिवर्तन लाना होगा | सभी की बातों को धैर्य पूर्वक सुनना और उनकी भावनाओं को समझना होगा | जैसे वो तुम्हारी बातों को सुन लेते हैं और बिना झगड़ा किए चले जाते हैं| वैसे ही तुम्हें भी सब से प्रेम से बिना गुस्सा किए हुए बात करना चाहिए | तुम ऐसा करके देखो | वो सब जो तुमसे अभी बात तक नहीं करते , वही तुम्हारे सबसे अच्छे दोस्त बन जाएंगे |"

मम्मी – पापा की बातें भी न समझने वाली ईशा पर डॉक्टर अंकल की बातों ने जैसे जादू किया | उसकी आँखों मे आशा की चमक आ गयी – " क्या ऐसा सच मे हो जाएगा अंकल ?" डॉक्टर अंकल मुस्कराये - " बिलकुल बेटी ! तुम आजमाकर देख लो | एकदम मुफ्त का इलाज है |"

ईशा ठठाकर हंस पड़ी | बोली – " अभी देखती हूँ |" सामने ही उसका भाई आयुष आश्चर्य भरी निगाहों से चुपचाप पीछे हाथ बांधे खड़ा देख रहा था | ईशा प्यार से बोली – " भाई ! मेरे साथ लूडो खेलेगा ? अब मैं किसी की बात का बुरा नहीं मानूँगी | आ जा मेरे अच्छे भैया |" आयुष तुनक कर बोला – " पर मैं तो बुरा मान गया |"

" क.... क.... क्यों ? " - ईशा आश्चर्य से डॉक्टर अंकल की ओर देखते हुए बोली | आयुष ठहाका लगाकर हंस पड़ा – " ईशा पगली ! तेरी नहीं डॉक्टर अंकल की बात का | मैंने तो सोचा था कि तुझे चार – पाँच सुइयां लगेगी और ढेर सारी कड़वी – कड़वी दवाइयाँ खानी पड़ेंगी , तभी अक्ल ठिकाने आएगी |"

" तूने मुझे पगली कहा , तू मुझे सुई लगवाना चाहता था | ठहर तुझे अभी बताती हूँ |" - ईसा तुनक कर बिस्तर से उठी और आयुष को पकड़ने दौड़ी |अब आयुष अपने दोनों हाथ आगे करके खड़ा हो गया–" लेकिन ईशा ! मैं तो कब से तेरे साथ खेलने के लिए लूडो हाथ मे पकड़े खड़ा हूँ|"

कमरे मे ज़ोर का ठहाका गूँजा | मम्मी – पापा समेत सभी हंस पड़े थे | अगली सुबह ईशा और

आयुष मिलकर सभी से पिछली बातों की माफी मांगते हुए जन्मदिन का निमंत्रण बाँट रहे थे और शाम को सारे बच्चे मिलकर जन्मदिन की खुशियाँ बाँट रहे थे | " हैप्पी बर्थ डे टू यू ईशा, जन्म दिन बहुत – बहुत मुबारक हो |"- ... और ईशा ?, मानो उसका नया जन्म ही हो रहा था| आज से वह सचमुच बदल गई थी |

--------xxx --------------xxx --------------xxx -------------xxx ------

बाल कहानी - "भूल सुधार "

राजू एक सरल और मेधावी बच्चा था | उसके पिताजी गाँव के प्राइमरी स्कूल मे अध्यापक थे | उनका परिवार सीमित आमदनी के कारण सादगी पूर्वक रहता था | राजू ने इसी वर्ष गाँव के स्कूल से आठवी कक्षा पास की थी और अब वह पाँच किलोमीटर दूर कस्बे के स्कूल मे नौवीं की पढ़ाई कर रहा था | नए स्कूल मे बहुत से अमीर घरों के बच्चे भी पढ़ते थे ,जो प्रायः अच्छे - अच्छे कपड़े पहनते थे और बहुत फिजूल खर्ची भी करते थे | कई बच्चे तो घर से मंहगे मोबाइल फोन भी लेकर आते थे और राजू जैसे बच्चों को दिखाकर खूब रौब झाड़ते थे | इन्हे देखकर राजू का बालमन भी बेचैन होने लगता था कि काश ! उसके पास भी ऐसा 'स्मार्ट फोन' होता |

राजू के पिताजी के पास एक पुराना मोबाइल था ,जिस पर कभी - कभी फोन आते थे | पिताजी ने उसे भी मोबाइल का उपयोग करना सिखा दिया था , ताकि जब वे किसी काम मे व्यस्त हो, तो राजू आने वाली कॉल का जवाब दे सके | इस मोबाइल मे बहुत सीमित सुविधाएं थी | एक अलार्म था जो सुबह पाँच बजे जगाने का काम करता था | एक साँप वाला साधारण खेल था जो खाली समय मे मज़ेदार लगता था | कुछ संगीत की धुनें थी जो कोई फोन आने पर बजती थी | हाँ ,एक कैलकुलेटर भी था , जिस पर राजू प्रायः अपनी गणित की समझ को जांच लेता था | कुल मिलाकर मोबाइल मे उसकी रुचि बढ़ गयी थी |

जबसे उसने मंहगे मोबाइल यानि स्मार्ट फोन देखे तो उसे अपना पुराना मोबाइल एकदम बेकार लगने लगा | स्मार्ट फोन मे गाने सुनने और वीडियो देखने की सुविधा तो थी ही ,साथ मे फोटो खींचकर फिल्म भी बनाया जा सकता था | उसमे रेडियो -टीवी भी चल सकते थे | यहाँ तक कि एक नक्शा था ,जो उसके घर तक रास्ता भी बता सकता था | यही नहीं , उसमे एक 'गूगल' था जो दुनिया भर की कोई भी जानकारी मिनटों मे दे सकता था | इतना ज्ञान तो उसके मास्टर जी को भी नहीं होगा | उसमे और भी तमाम उपयोगी कार्यक्रम थे , जिनके बारे मे राजू सोच भी नहीं सकता था कि एक छोटा सा मोबाइल इतने काम का हो सकता है |

राजू का बालमन भटकने लगा था | वह रोज सोचता , काश ! ऐसा ही एक स्मार्ट फोन उसके पास भी होता तो कितना अच्छा होता | वह बहुत सी बातें इतनी जल्दी सीख जाता ,जिसके लिए उसे अभी वर्षों प्रतीक्षा करनी पड़ेंगी | गूगल द्वारा वह अपना ज्ञान इतना बढ़ा लेता कि उसकी कक्षा तो क्या पूरा स्कूल उसके ज्ञान की प्रशंसा करता | काश ! उसके

पिताजी भी इतने धनी होते कि उसकी ये इच्छा झट पूरी हो जाती | उसके पिताजी सचमुच राजू की भावनाओं का बहुत ध्यान रखते थे | उनका हमेशा प्रयास होता था कि राजू खुश रहे और उसके जरूरत की आवश्यक चीजें उसे जरूर मिलें | ताकि वह प्रसन्नचित होकर अपनी पढ़ाई व प्रगति करता रहे | लेकिन ......, लेकिन ये स्मार्ट फोन तो उनके महीने भर के वेतन मे भी नहीं आ सकता था | वह निराशा से भर उठा था | उसकी आकांक्षा लगातार बढ़ती जा रही थी |

राजू सोचता रहता कि काश ! कोई चमत्कार हो जाता और ये स्मार्ट फोन उसके हाथ लग जाता | पर उसे कोई इतना महंगा स्मार्ट फोन उपहार या पुरस्कार मे भी तो नहीं देने वाला था | वह करे तो क्या करे ? " भगवान ! कहीं पड़ा हुआ ही मिल जाता तो वह उसे छुपाकर रख लेता |" - वह बालकबुद्धि चमत्कार की आशा मे प्रार्थना भी करने लगा था | ....और एक दिन ,स्कूल के बाहर रास्ते मे उसे सचमुच एक पड़ा हुआ स्मार्ट फोन दिख गया | जाने किसका छूट गया था , पर राजू की तो मानो प्रार्थना ही पूरी हो गयी थी | पहले तो वह झिझका , और डरा भी कि दूसरे की वस्तु नहीं छूनी चाहिए , भले ही वह पड़ी हुई क्यों न हो | किन्तु जल्द ही उसकी झिझक पर स्मार्ट फोन का आकर्षण हावी हो गया | उसने सतर्कता पूर्वक इधर - उधर देखा | कोई भी आस पास नही था | वह जल्दी से फोन उठाकर चलता बना |

घर पहुँच कर जल्दी से उसने बस्ता रखा और बिना हाथ - मुंह धोये ही अपने कमरे मे घुस गया | वह स्मार्ट फोन चलाने की बड़ी जल्दी मे था | खुशी - खुशी उसने मोबाइल चालू किया और फिर धीरे - धीरे उसकी चमत्कारी दुनिया मे डूबता चला गया | एक के बाद एक , वह सारे फीचर तेजी से खोलता - देखता जा रहा था | उस के हाथ बड़ी तेजी से कीबोर्ड पर थिरक रहे | वह सोच रहा था कि कितनी जल्दी सब कुछ जान - समझ ले और अपने मन की इच्छाएँ पूरी कर ले | आज वह साथी बच्चों के साथ शाम को खेलने भी नहीं गया | आज उसको भूख भी नहीं लगी ,जबकि खाने का समय हो गया था | माँ ने कई बार पुकारा तो कह दिया कि भूख नहीं है | घंटों बीत गए ,राजू को समय का पता ही नहीं चला | रात हो गयी थी | वह फोन से खेलते - खेलते , उसे हाथ मे पकड़े हुए ही थक कर सो गया |

देर रात तक जागने के कारण राजू सुबह भी देर तक सोता रह गया | पिता जी को आश्चर्य हुआ कि सुबह पाँच बजे उठने वाला आज इतनी देर तक सोया है | अब तो परीक्षा के दिन भी आने वाले हैं | वह उसे देखने कमरे मे गए तो राजू दुनिया से बेखबर सोता मिला | उसके चेहरे पर मासूमियत और परम संतुष्टि के भाव छाए हुए थे | उन्होने प्यार से झुक कर उसका माथा चूमा और धीरे से जगाने लगे | तभी राजू ने एक करवट ली और स्मार्ट फोन उसके हाथ से छूट कर गिर गया |

पिताजी चौंक उठे | यह क्या ? राजू के पास मंहगा मोबाइल फोन | कहाँ से आया ? उन्हे समझते देर न लगी कि राजू देर रात तक क्यों व्यस्त था ? अब उनके लिए सब कुछ जानना बहुत जरूरी हो गया था |

राजू के उठते ही उन्होने स्मार्ट फोन के बारे मे पूछा | राजू को ज़ोर का झटका लगा | जैसे उसकी चोरी पकड़ी गयी हो | उसने डरते - डरते पिताजी को सारी बात बता दी | वे तत्काल बोले - “बेटे ये बहुत गलत बात है | पहली बात तो दूसरे कि कोई भी वस्तु लेनी हीं नहीं चाहिए ,और यदि पड़ा हुआ भी मिला है तो यह बात हमको कल ही बताना चाहिए था | हमे तुरन्त यह मोबाइल उसके मालिक को या पुलिस स्टेशन में जाकर लौटाना होगा | अन्यथा, हम पर ईमानदार होने के बावजूद चोरी का आरोप भी लग सकता है | पिताजी की बातें सुनते ही राजू के होश उड़ गए | वह अपराध बोध से भर गया | उसे अपनी गलती का आभास हो चुका था | उसने तुरन्त पिताजी जी से क्षमा मांगी और स्वीकार किया कि वह इस फोन को अच्छी तरह चला कर देखने - समझने और आनन्द उठाने का मोह नहीं छोड़ पाया था |

पिताजी शान्ति से बोले - “ बेटे ! गलतियाँ सबसे हो जाती हैं | लेकिन इसका आभास होते ही भूल सुधार जरूर करना चाहिए | अन्यथा देर होने पर परिणाम विनाशकरी भी हो सकता है | चलो जल्दी से तैयार हो जाओ | हम गाँव के प्रधान जी के साथ जाकर इसे पुलिस को सौंप देंगे | वह मालिक को ढूंढ लेगी |”

थोड़ी देर बाद वे लोग कस्बे की पुलिस चौकी मे बैठे थे | दरोगा जी बता रहे थे कि इस स्मार्ट फोन की शिकायत उनके पास आ चुकी है | हमने सर्विलान्स के जरिये उसे खोजने का प्रयास भी शुरू कर दिया है | इसी गाँव के आस-पास की लोकेशन मिल रही है | कुछ देर मे हम आपके घर तक पहुँच ही जाते | अच्छा किया कि आप लोग खुद इसे यहाँ ले आए | अगर यह आपके घर से बरामद होता तो आप पर चोरी या समान छिपाने का आरोप जरूर लगता | आप लोग कानूनी लफड़े मे फँसते और गाँव मे लोग तरह - तरह की बातें फैलती | बहरहाल , अब आप निश्चिंत रहें | हम इसे सही मालिक तक जल्द ही पहुंचा देंगे |”

इसके बाद दरोगा जी ने राजू को भी प्यार से समझाया-“बेटे ! कभी भी लालच मे न पड़ना | इस तरह की लावारिस वस्तुओं मे विस्फोटक पदार्थ भी हो सकता है | चोरी का आरोप न सही ,किन्तु विस्फोट होने से जान- माल का भारी नुकसान भी हो सकता है | ऐसे मामलों मे तत्काल पुलिस या अपने समझदार बड़े - बुजुर्गों को बताना चाहिए | तभी ठीक और जरूरी कार्यवाही हो पाएगी |”

“जी सर , मैं हमेशा ध्यान रखूँगा |” राजू का सिर पश्चाताप से झुका हुआ था | इस घटना से उसे एक नई सीख मिल गयी थी |

द्वंद युद्ध

मूल लेखक : निकोलाई तेलेशोव

अनुवाद : सुशांत सुप्रिय

सुशांत सुप्रिय

सुबह तड़के का समय था । व्लैदिमीर क्लादूनोव नाम का बाईस वर्ष का एक लम्बा , रूपवान युवक उस घास के मैदान पर खड़ा था जिस पर ताज़ा बर्फ़ गिरी हुई थी । युवक का मनोहर चेहरा किसी लड़के जैसा था और उसके बाल घने और घुँघराले थे । उसने एक अधिकारी की वर्दी पहन रखी थी और उसके पैरों में घुड़सवारी वाले लम्बे जूते थे । लेकिन उसने ओवर-कोट और टोपी नहीं पहनी हुई थी । वह लाल चेहरे और मूँछों वाले एक अन्य अधिकारी को घूर रहा था जो उससे तीस मीटर दूर खड़ा था । वह अधिकारी धीरे-धीरे अपने उस हाथ को उठा रहा था जिसमें उसने रिवॉल्वर पकड़ रखी थी । हाथ उठा कर उसने रिवॉल्वर का निशाना व्लैदिमीर पर लगा दिया ।

व्लैदिमीर क्लादूनोव के एक हाथ में भी रिवॉल्वर थी किंतु ऐसा लग रहा था जैसे वह लगभग उदासीनता से प्रतिद्वन्द्वी की गोली की प्रतीक्षा कर रहा था । उसका रूपवान , युवा चेहरा हर रोज़ की अपेक्षा कुछ फीका था किंतु वह निडरता से स्थिति का सामना कर रहा था और उसके चेहरे पर तिरस्कार की हँसी थी । वह अभी ख़तरनाक स्थिति में था । उसका प्रतिद्वन्द्वी निर्दयी और दृढ़ निश्चय वाला था । उन दोनों के कर्मठ सहायक सावधानी से एक ओर खड़े थे । मृत्यु की सन्निकटता उस पूरे पल को भयानक तीव्रता, रहस्यमयता और गाम्भीर्य प्रदान कर रही थी । मान-मर्यादा के एक प्रश्न का फ़ैसला होना था । हर व्यक्ति इस प्रश्न की महत्ता से परिचित था ; वे क्या कर रहे थे , इस बात को वे जितना कम समझ रहे थे, पल की गम्भीरता उतनी ही गहरी होती जा रही थी । एक गोली चली । सब की देह में एक कँपकँपी दौड़ गई । व्लैदिमीर के हाथ नीचे की ओर गिरे , उसके घुटने मुड़ गए और वह ज़मीन पर लुढ़क गया । वह बर्फ़ पर गिरा पड़ा था और गोली उसके सिर को चीर कर निकल गई थी । उसके हाथों , बाल , चेहरे और सिर के आस-पास की बर्फ़ ख़ून से लाल थी । सहायक उसकी ओर दौड़े और उन्होंने उसे उठा लिया । मौके पर मौजूद डॉक्टर ने उसकी मृत्यु की पुष्टि कर दी , और मान-मर्यादा के प्रश्न का हल निकल गया ।

अब केवल रेजीमेंट में इस ख़बर की घोषणा की जानी बाक़ी थी । साथ ही, जितनी कोमलता और सावधानी से हो सके , मृतक की माँ को इस घटना की सूचना दी जानी थी । वह वृद्धा अब दुनिया में अकेली रह गई थी । जिस युवक की मृत्यु हुई थी, वह उस वृद्धा का इकलौता बेटा था । द्वन्द्व-युद्ध से पहले किसी ने उस वृद्धा के बारे में सोचा भी नहीं

था , किंतु अब वे सभी बेहद सहृदय हो गए थे । वे सभी उस वृद्धा माँ को जानते थे तथा उसके प्रति स्नेह का भाव रखते थे । वे इस तथ्य से अवगत थे कि उस वृद्धा को यह भयावह समाचार सुनने के लिए धीरे-धीरे तैयार किए जाने की ज़रूरत थी । उस वृद्धा माँ को यह सूचना देने के लिए अंत में इवान गोल्युबेन्को को सबसे उपयुक्त पाया गया और उम्मीद की गई कि वह इस मामले को जितनी शांति से हो सके, निपटा दे ।

वृद्धा पेलेजिया पेत्रोव्ना कुछ देर पहले ही सो कर उठी थी । इस समय वह सुबह की चाय बना रही थी जब उदास और चकराया हुआ गोल्युबेन्को कमरे में दाखिल हुआ ।

"चाय पीने के लिए बिल्कुल सही समय पर आए हो, ईवान ईवानोविच ! " बड़े मिलनसार ढंग से बोलते हुए उस वृद्धा ने उठ कर मेहमान का स्वागत किया।" तुम ज़रूर व्लैदिमीर से मिलने आए होगे!"

" जी , दरअसल मैं ... इधर से गुज़र रहा था -- " गोल्युबेन्को ने घबरा कर हकलाते हुए कहा " माफ़ करना । वह तो अभी सो रहा है । कल सारी रात वह कमरे में इधर-से-उधर चहलक़दमी करता रहा । इसलिए मैंने नौकर से भी कहा कि वह उसे न उठाए , क्योंकि आज यूँ भी त्योहार का दिन है । लेकिन तुम शायद ज़रूरी काम से आए हो ? "

" जी नहीं, मैं तो यहाँ से गुज़रते हुए बस यूँ ही एक मिनट के लिए -- "।

" अगर तुम उससे मिलना चाहो तो मैं उसे नींद से जगा देने का आदेश दे दूँगी । "

"नहीं, नहीं , आप तकलीफ़ न करें ! "

लेकिन पेलेजिया पेत्रोव्ना को लगा कि वह उसके बेटे से ज़रूर किसी ज़रूरी काम से मिलने आया है । इसलिए वह कुछ बुदबुदाते हुए कमरे से बाहर चली गई। गोल्युबेन्को बेचैनी से कमरे में इधर-से-उधर टहलने लगा । वह अपने हाथ मलते हुए यह सोच रहा था कि वह वृद्धा को उसके बेटे की अकाल-मृत्यु की भयावह सूचना कैसे दे । निर्णायक घड़ी अब जल्दी ही पास आ रही थी , किंतु वह खुद पर नियंत्रण खोता जा रहा था । वह बेहद डरा हुआ था और अपनी किस्मत को कोस रहा था जिसके कारण उसे इस सारे मामले में घसीट लिया गया था ।

" अरे , तुम युवकों पर कौन भरोसा कर सकता है ! " कमरे में प्रवेश करते हुए पेलेजिया पेत्रोव्ना ने ख़ुशमिज़ाजी से आगंतुक से कहा । " यहाँ मैं पूरी कोशिश कर रही हूँ कि बर्तनों की वजह से कोई शोर न हो , और तुम्हें कह रही हूँ कि मेरे बेटे को न उठाया जाए । पर वहाँ वह बिना पीछे कोई निशान छोड़े पूरा-का-पूरा ग़ायब हो चुका है । लेकिन प्रिय ईवान ईवानोविच , तुम तो स्थान ग्रहण करो और चाय पियो । इधर हाल में तुम हमें उपेक्षित करते रहे हो ! "

वह जैसे किसी गुप्त खुशी से अभिभूत हो कर हँसी और फिर उसने धीमे स्वर में कहा , " और इस समय हमें कितनी ख़बरें पता चलीं ! व्लैदिमीर वाकई इसे गुप्त नहीं रख

सका । अब तक तो उसने तुम्हें भी इसके बारे में सब कुछ बता दिया होगा , क्योंकि मेरा व्लैदिमीर बेहद सीधा-सादा और खुले दिल वाला है ।

" कल रात मैं अपने पापमय विचारों में डूबी यह सोच रही थी -- ' यदि मेरा बेटा व्लैदिमीर पूरी रात इधर-से-उधर चहलक़दमी कर रहा है , तो इसका मतलब है कि वह अपनी प्रेमिका लेनोच्का के बारे में सोच रहा है ! ' हर बार वह यही करता है । यदि वह सारी रात कमरे में चहलक़दमी करता है , तो वह सुबह ज़रूर ग़ायब हो जाता है । ओह , ईवान ईवानोविच , बुढ़ापे में मैं ईश्वर से केवल यही एक खुशी माँगती हूँ । एक वृद्धा को और क्या चाहिए ? मेरी तो केवल एक ही इच्छा है , एक ही ख़ुशी । मुझे तो यह लगता है कि व्लैदिमीर और लेनोच्का की शादी हो जाने के बाद मेरे पास ईश्वर से माँगने के लिए और कुछ नहीं बचेगा । इनका ब्याह मुझे बेहद ख़ुशनसीब और प्रसन्न बना देगा ! व्लैदिमीर के अलावा मुझे और कुछ नहीं चाहिए ; उसकी खुशी से अधिक क़ीमती मेरे लिए और कुछ नहीं " वृद्धा इतनी भावुक हो गई कि उसे अपनी आँखों में भर आए आँसू पोंछने पड़े । " क्या तुम्हें याद है , " उसने बोलना जारी रखा , " शुरू में बात नहीं बन रही थी -- या तो उन दोनों के बीच रुपये-पैसों को लेकर कोई बात थी या कोई और ही वजह थी । तुम जैसे युवा अधिकारियों को बिना उचित पहनावों के शादी की इजाज़त भी तो नहीं दी जाती । ख़ैर , अब मैंने सारा बंदोबस्त कर लिया है । व्लैदिमीर की शादी के लिए पाँच हज़ार रूबल्स की जो रक़म चाहिए थी , वह मैंने जुटा ली है । और यदि वे चाहें तो कल ही शादी कर सकते हैं ! हाँ , और लेनोच्का ने मुझे इतनी प्यारी चिट्ठी लिखी है । मेरा दिल ख़ुशी से फूला नहीं समा रहा ! " बोलते हुए वृद्धा पेलेजिया पेत्रोव्ना ने अपनी जेब में से एक चिट्ठी निकाली और उसे गोल्युबेन्को को दिखा कर उसने वह चिट्ठी वापस अपनी जेब में रख ली । " वह कितनी प्यारी लड़की है ! कितनी अच्छी ! " इवान गोल्युबेन्को को वृद्धा की बातें सुनकर लग रहा था जैसे वह जलते हुए अंगारों पर बैठा हुआ है । वह पेलेजिया पेत्रोव्ना को बीच में ही रोकना चाहता था और उसे बताना चाहता था कि अब सब कुछ ख़त्म हो गया था, कि अब उसके व्लैदिमीर की मृत्यु हो गई थी , और यह कि एक छोटे-से घंटे के भीतर ही उसकी सारी उम्मीदें नष्ट हो जाने वाली थीं । किंतु वह चुपचाप वृद्धा पेत्रोव्ना को बोलते हुए देखता-सुनता रहा । उसके प्रसन्न चेहरे को देख कर गोल्युबेन्को के मन में एक हूक-सी उठी।

" पर आज तुम इतने उदास और बुझे हुए क्यों लग रहे हो ? " अंत में वृद्धा ने उससे पूछा । " तुम्हारा चेहरा रात-सा काला लग रहा है ! " ईवान ने कहना चाहा , " हाँ ! और जब तुम्हें अपने बेटे की मृत्यु के बारे में पता चलेगा , तो तुम्हारा चेहरा भी ऐसा ही हो जाएगा ! " लेकिन वृद्धा को कुछ भी बताने की बजाए उसने अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया और अपनी मूँछों को ऐंठने लगा । पेलेजिया पेत्रोव्ना ने इसे नहीं देखा । वह अपने ख़्यालों में पूरी तरह गुम थी । उसने कहना जारी रखा -- " लेनोच्का लिखती है कि मैं ईवान ईवानोविच को नमस्कार कहती हूँ । मैं चाहती हूँ कि वह व्लैदिमीर के साथ मेरे यहाँ आए । तुम तो यह

जानते ही हो कि वह तुम्हें कितना पसंद करती है , ईवान ईवानोविच । नहीं , लगता है , मैं इस पत्र को अपने तक सीमित नहीं रख पाऊँगी । मैं इसे पढ़ कर तुम्हें सुनाती हूँ । देखो , कितना प्यारा पत्र है ।“

पेलेजिया पेत्रोव्ना ने दोबारा अपनी जेब से चिट्ठियों का बंडल निकाला । उसने उसमें से एक चिट्ठी अलग की । वह सघन लिखावट वाला पत्र था जिसे उसने ईवान के लिए खोला । ईवान का चेहरा और भी उदास हो गया था । उसने अपने हाथ से उस पत्र को दूर हटा देना चाहा , किंतु वृद्धा पेलेजिया पेत्रोव्ना ने उस पत्र को पहले ही पढ़ना शुरू कर दिया -- " प्रिय पेलेजिया पेत्रोव्ना -- वह समय कब आएगा जब मैं आपको अभी की तरह नहीं , बल्कि ' मेरी प्रिय माँ ' कह कर सम्बोधित कर पाऊँगी ! मैं उस समय की आतुरता से प्रतीक्षा कर रही हूँ , और मुझे उम्मीद है कि वह समय जल्दी ही आएगा । दरअसल मैं तो अभी से आपको कुछ और नहीं बल्कि ' माँ ' कह कर सम्बोधित करना चाहती हूँ । -- " पेलेजिया पेत्रोव्ना ने पढ़ना बंद करके अपना सिर उठाया और गोल्युबेन्को की ओर देखा । उसकी आँखों में आँसू झिलमिला रहे थे ।

" क्या तुम देख रहे हो , ईवान ईवानोविच , " उसने कहा । लेकिन जब उसने देखा कि गोल्युबेन्को दाँत से अपनी मूँछों को काट रहा था और उसकी आँखें भी गीली थीं , तो वह उठी और उसने अपना काँपता हाथ गोल्युबेन्को के बालों पर रखा और चुपचाप उसके माथे को चूम लिया । " शुक्रिया ईवान ईवानोविच , " उसने फुसफुसा कर कहा । वह बेहद विचलित हो गई थी । " मैं हमेशा यही सोचती थी कि तुम और व्लैदिमीर सामान्य मित्रों की बजाए भाइयों जैसे अधिक थे । माफ़ करना । मैं बेहद खुश हूँ । ईश्वर तेरा शुक्रिया । " उसकी आँखों से आँसू की बूँदें ढुलक कर उसके गालों पर आ गई थीं ।

ईवान गोल्युबेन्को इतना घबराया और चकराया हुआ महसूस कर रहा था कि प्रत्युत्तर में वह वृद्धा पेत्रोव्ना के हड्डियों वाले ठंडे हाथों को ले कर केवल उन्हें चूम भर सका । आँखों से बहते आँसुओं की वजह से उसका गला रुँध गया था , और वह एक भी शब्द नहीं बोल पाया । पर मातृत्व से उपजे स्नेह के इस अगाध प्रदर्शन की वजह से ईवान ने अपने प्रति एक ज़बर्दस्त धिक्कार महसूस किया । इस स्थिति से बचने के लिए तो वह स्वयं सिर में गोली खा कर मैदान में मरे पड़े होने को भी तैयार था ।

इस वृद्धा से मित्रता के लिए प्रशंसा पाना उसे असहनीय लग रहा था क्योंकि आधे घंटे के भीतर ही उसे पूरी सच्चाई पता चल जाने वाली थी । तब वह उसके बारे में क्या सोचने वाली थी ? एक मित्र , लगभग भाई होते हुए भी क्या वह उस समय चुपचाप नहीं खड़ा रहा जब व्लैदिमीर को एक रिवॉल्वर का निशाना बनाया गया ? क्या इस भाई ने ही दोनों

प्रतिद्वंद्वियों के बीच की दूरी को नहीं नापा था और उनके रिवॉल्वरों में गोलियाँ नहीं भरी थीं ? उसने यह सब कुछ पूरे होशो-हवास में किया था ; और अब वह मित्र और भाई अपना कर्तव्य निभाने की हिम्मत दिखाने की बजाए वहाँ चुपचाप बैठा था । वह बेहद डरा हुआ था। इस पल उसे खुद से घृणा हो रही थी , किंतु वह इतना विवश महसूस कर रहा था कि एक भी शब्द नहीं बोल पाया । उसकी आत्मा चैन के अभाव में छटपटा रही थी । उसके सीने में घुटन भरी थी । वह बीमार महसूस कर रहा था ।

इस बीच समय गुज़र रहा था । वह यह बात जानता था , किंतु जितना ज़्यादा वह इस बात को जानता था , उसे उतनी ही कम हिम्मत हुई कि वह पेलेजिया पेत्रोव्ना को सच्चाई बता कर उसके कुछ अंतिम ख़ुशनुमा पलों से उसे वंचित कर दे । वह उसे क्या कहे ? वह इस त्रासद सूचना के लिए उस वृद्धा को कैसे तैयार करे ? ईवान गोल्युबेन्को का दिमाग़ फिर गया । उसके पास सभी द्वंद्व-युद्धों, सभी लड़ाइयों, सभी तरह की शूरवीरता, और तथाकथित मान-मर्यादा के सभी तरह के प्रश्नों को शाप देने के लिए पर्याप्त समय था । अंत में वह अपनी जगह से उठा क्योंकि या तो वह उस वृद्धा पेत्रोव्ना को सच्चाई बता देना चाहता था, अन्यथा वह वहाँ से दूर कहीं भाग जाना चाहता था ।

चुपचाप जल्दी से उसने पेलेजिया पेत्रोव्ना का हाथ थाम लिया और झुक कर अपने होठों से उसे छुआ , जिससे उसका चेहरा छिप गया । तभी अचानक उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई । वह बिना कुछ सोचे जल्दी से दौड़ कर गलियारे में पहुँचा और अपना ओवर-कोट उठा कर बिना कुछ कहे मकान से बाहर निकल गया । पेलेजिया पेत्रोव्ना हैरानी से उसकी ओर देखती रही । उसने सोचा -- " ओह , यह बेचारा भी किसी के प्रेम में दीवाना होगा । ख़ुशी मिलने से पहले इन युवा लोगों को कितना दुख झेलना पड़ता है ! " ... और अपने ऐसे सपनों में खोई , जो पूर्ण थे और जिन्हें भंग नहीं किया जा सकता था , वह जल्दी ही उसे भूल गई ।

कहानी

तान्या

विजय कुमार सप्पत्ति

आज : दोपहर १ बजे

मैंने सारे बर्तन सिंक में डाले और उन्हें धोना शुरू किया. आज मन कुछ अच्छा नहीं था. सुबह से ही अनमना सा था. कोई भी काम सही तरह से नहीं हो पा रहा था. कभी कुछ छूट जाता था, कभी कुछ नहीं हो रहा था. एक अजीब सी खीझ भी हो रही थी. मन में ये कैसी उदासी थी, मैं कुछ समझ नहीं पा रही थी. मुझे डिप्रेशन हो रहा था और मशीनी अंदाज में, मैं बर्तन धो रही थी.

मैंने म्यूजिक सिस्टम पर गाने लगा रखे थे, गाने सुनते हुए काम करना मुझे पसंद था. पर आज मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था. कुछ अटका हुआ सा था. अचानक म्यूजिक सिस्टम पर अगला गाना शुरू हुआ - जगजीत सिंह का 'चिट्ठी न कोई सन्देश, जाने वो कौन सा देश, जहाँ तुम चले गए'. बस जैसे इसी गाने के शब्दों के लिए मेरा मन रुका हुआ था, अटका हुआ था. मेरी रुलाई फूट पड़ी. मैं रोने लगी. बर्तनों का धोना बंद हो गया. उधर नल से पानी बह रहा था और इधर मेरी आँखों से भी.

तानु की याद आ रही थी. मेरी तानु, मेरी पुपु रानी और सारी दुनिया की तान्या !

अचानक पीछे से एक आवाज आई. तान्या की चहकती आवाज़. " ममा, क्या तुम भी, कभी भी रोती रहती हो. देखो मैं आ गयी हूँ, चलो चुप हो जाओ, मैं हूँ न !" मैं एकदम से पलटी. वो मेरे सामने थी. अपनी उसी मिलियन डॉलर वाली मनमोहक मुस्कान के साथ. आँखों में हंसी के साथ. वही जींस और टी-शर्ट पहने हुए थी, जो मुझे बहुत पसंद थी.

मैंने अवाक होकर पुछा, 'तु कब आई तानु ?'

उसने कहा, 'जब तूमने रोना शुरू किया माँ !'

मेरी फिर रुलाई फूट पड़ी, मैंने उसे गले लगा लिया. बहुत देर तक. उसने कहा 'अरे अब छोडो न माँ.'

मैंने कहा 'नहीं छोड़ूंगी, इतने दिनों के बाद आती हो.'

उसने कहा, 'अच्छा मेरी माँ, अब जल्दी- जल्दी आया करूंगी. ओके अब बैठ जाओ माँ और शांति से बाते करो .कितने दिन हो गए, तुमसे बाते किये हुए.'

मैंने नल बंद किया और उसे अपने कमरे में ले आई और उसके साथ बिस्तर पर बैठ गयी, मेरे बैठते ही वो मेरी गोद में आकर लेट गयी. मैं उसके चेहरे को देखने लगी, कितनी सुन्दर दिख रही थी. वो तो थी ही सुन्दर. आखिर मेरी बेटी थी. मेरी फिर रुलाई फूट पड़ी, मेरी आँखों से आंसू उसके चेहरे पर गिरने लगे.

उसने कहा, 'माँ रोना बंद करो न , नहीं तो मैं चली जाऊँगी, देखो मेरा मेकअप ख़राब हो रहा है.' कह कर वो खिलखिलाकर हंसने लगी. उसकी हंसी सुनकर मैं भी मुस्करा उठी. तान्या की हंसी उसके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी बात थी. उसकी हंसी में कितनी मुक्तता थी, उसकी हंसी में जीवन धडकता था. वो खुद ही तो जीवन थी.

मैंने कहा, 'सुन, मैं तेरे लिए कुछ खाने को ले आती हूँ,' उसने कहा, 'अरे माँ बैठो ना , खाना पीना तो होते ही रहेगा. तुम अपनी सुनाओ. कैसी हो , क्या चल रहा है, कुछ नए कपड़े वगैरह खरीदे ? शुगर की दवाई समय पर ले रही हो न ? खाने में ऑईल ज्यादा तो नहीं ले रही है न ? सलाद ज्यादा खाया करो . स्कूल में ज्यादा देर तक मत रहा करो .'

मैंने उसके मुंह पर हाथ रख दिया और बोली कि 'थोडा कम बोला कर, कितना बडबड करती है, शांत रहा कर. अब तुम बड़ी हो गयी हो. थोडा चुलबुलापन कम करो. दादी अम्मा मत बन.'

वो फिर हंसने लगी, 'माँ तुम तो बस. अरे तुमसे से ही तो सीखा है सब कुछ. और फिर मैं तुम्हारा खयाल नहीं रखूंगी तो कौन रखेगा, बोल. और सुनाओ ममा . क्या चल रहा है आजकल घर में ?'

मैंने कहा, 'यहाँ तो बस वैसे ही है. जैसे तुम छोड़ कर गयी थी. सब कुछ रुका हुआ सा.' मेरी आँखें फिर भीग गयी. तान्या ने मुझे देखा और पुछा, 'मेरी याद आती है ममा ?'

मैंने उसे अपने सीने से लगा लिया, 'तानु! क्या बोलती हो बेटा, बस घर भर में तेरी याद ही तो महकती रहती है. तु बस जल्दी-जल्दी आया कर . तेरी शरारतें ही यादों को महकाते रहते है."

तान्या फिर हंसने लगी, 'मैं हूँ ही शरारती, सबसे छोटी जो ठहरी. मैं मस्ती न करूँ तो कौन करेगा.' कह कर फिर हंसने लगी, उसकी हंसी से मुझे बहुत ख़ुशी होती थी. तान्या हंसती थी तो लगता था जैसे फूल बरस रहे हो.

मुझे याद आया उसके पिछले जन्मदिन पर उसे तेज बुखार था, हम सब उसे हंसाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन वो हंस नहीं पा रही थी. फिर उसे हमने टॉम एंड जेरी की फिल्म दिखाई तो वो हंसने लगी.

तानु एक बहुत प्यारी बच्ची थी. उसने कितनी अच्छी तरह से मैनेजमेंट की पढाई की और बंगलौर की एक बड़ी कम्पनी में जॉब करने लगी , वो वहाँ जॉब करने क्या गयी, वही की हो कर रह गयी.

मैंने तान्या से पुछा, 'मयंक से मिलने गयी थी?' तान्या हँसते- हँसते अचानक चुप हो गई, उसने कहा, 'नहीं. मैं जब भी उसे देखती हूँ तो तकलीफ होती है . मैं अब हँसते हुए ही रहना चाहती हूँ, अब मुझे रोना नहीं पसंद.'

उसकी बात सुनकर मुझे फिर रोना आ गया. तान्या बोली, 'माँ ये बार-बार का रोना बंद करो. मुझे रोना पसंद नहीं है, तुम जानती हो. प्लीज.........'

मैंने कहा 'नहीं नहीं बेटा कोई नहीं , बस तुझे मयंक बहुत पसंद था, इसलिए पुछा. खैर अब जाने दे उस बात को .

और फिर मैंने हँसते हुए कहा 'बड़ी आई रोना नहीं पसंद बोलने वाली, जब तू बच्ची थी और बार-बार गिर जाती थी, तो दिन भर रोती रहती थी, फिर तो जैसे आदत ही बना ली थी, हर बात पर रोती रहती थी. हर बात पर बस जिद करना और रोना. यही सीख लिया था. वो तो भला हो तेरी प्राइमरी की टीचर का, जिसने तुझे हँसना सिखाया और फिर जो हंसी तो बस हँसते ही रही.'

तान्या फिर से हंसने लगी थी.

मैंने कहा, 'पता है जब तू बंगलौर गयी थी , तब मेरा तेरा कितना झगड़ा होता था कि तू वापस आ जाये.'

तान्या ने थोडा मुस्कराकर कहा, 'हां न माँ , मुझे सेल्फमेड बनना था पर तुम हो कि मुझे छोड़ना ही नहीं चाहती थी , हम कितना लड़ते थे पर याद है माँ, रोज ही पैचअप हो जाता था सोने के पहले !'

मैंने हंसकर कहा 'और दो दिन बाद फिर से लड़ाई शुरू हो जाती थी'

तान्या खूब हंसने लगी, वो दिल खोल कर हंसती थी. उसकी हंसी में मेरा जीवन था जैसे.

मैंने कहा, 'रुक, मैं तेरे लिए कुछ खाना बना कर लाती हूँ.' तान्या ने मेरा हाथ पकड़ लिया, 'माँ, मेरी माँ, मेरे पास बैठो ना , कितने दिन के बाद तो आई हूँ. बाद में खा लूंगी.' 'और फिर तुम मेरे जैसे चॉकलेट ब्राउनी तो बना नहीं सकती हो न ?. मैं तुमसे बेहतर कुक हूँ ममा !'

मैंने कहा, 'सच है , तू तो मेरी अम्मा है लेकिन पिछली बार भी तू बस बाते ही करती रही थी. और बाद में लेट हो रहा है कह कर चली गयी थी. एक तो तू, बहुत दिनों में आती हो और फिर जल्दी से चली जाती हो. आज तो तुझे कुछ खाना ही होगा !'

तान्या ने कहा, 'ये बताओ ममा कि स्कूल कैसे चल रहा है.'

मैंने एक लम्बी सांस ली और कहा, 'स्कूल में मन लगने लगा है, बच्चों की चहल पहल में मन लगा रहता है, पता है, 8th में एक नई लड़की आई है, उसका नाम भी तान्या है, जब मेरे से उसका परिचय हुआ तो,'

तान्या ने मेरी बात बीच में ही काटते हुए कहा, 'जरूर तुमने, उसे अपने पास बिठा लिया होगा. और खूब सारी बाते की होंगी और चॉकलेट भी दिया होगा,' अब हंसने की बारी मेरी थी. वो भी हंसने लगी और कहने लगी, 'क्या मैं तुम्हें जानती नहीं माँ !'

मैंने कहा, ' वो तो सही है बेटा, पर तेरी जगह कोई नहीं ले सकता है तान्या. you are !' लेकिन जब उसने उसने एनुअल डे के फंक्शन में तेरा मनपसंद गाना गाया तो मैं चौंक गयी थी .

तान्या बोली, 'माँ, मैं अभी भी बेस्ट हूँ. न मेरे जैसे कोई थी, न ही कोई और होंगी. और नहीं तो क्या. I am the best for now and

मैंने कहा, 'हां रे वो तो है. तेरी जैसी कोई नहीं. चल तू वो गाना सुना.'

तान्या ने कहा, 'नहीं माँ आज तो तुम सुनाओ वो बचपन वाला गाना.'

मैंने कहा 'तेरी शरारतें ख़त्म नहीं होती है. है न.'

'चल तू आजा मेरे पास,' कहकर मैंने उसे अपने पास घसीट सा लिया और अपने दिल से लगाकर उसे ये गाना सुनाने लगी, 'जूही की कली मेरी लाड़ली, नाजों की पली मेरी लाड़ली ओ आसकिरन जुग जुग तू जिए, नन्ही सी परी मेरी लाड़ली , ओ मेरी लाड़ली......' बस इतना कहते ही, उसने कहा, 'चु...चु. चु ...चु....' कह कर मुझे चूम लिया.

मैं फिर रो पड़ी, मैं बहुत देर तक रोते रही. कुछ देर बाद चुप हुई, उसे अपने गले से अलग किया तो देखा कि वो सो गयी थी. मैंने उसे अपने बिस्तर पर सुला दिया. और उसे एक चादर ओढ़ा कर जल्दी से किचन में चली गयी, और उसके लिए उसकी पसंद का खाना बनाने लगी.

उसे हर तरह का खाना बहुत पसंद था. मैंने बनाना शुरू किया, बहुत प्यार से, बहुत ममता से, आखिर वो मेरी लाड़ की बेटी थी, सबसे प्यारी, सबसे छोटी ! मेरी तानु !

मैंने रोटी बनाते हुए याद किया कि किस तरह से उसे मैंने भगवान से मन्नतें करके माँगा था. कितने मंदिर गयी थी. मेरी बड़ी बेटी भी मेरे साथ जाती थी. कई जगह माथा टेकने के बाद, प्रभु जी के आशीर्वाद से ये खूबसूरत सी परी मेरे घर आई थी.

उसके नामकरण के लिए घर में बहुत बहस हुई थी , मुझे उसे एक मॉडर्न नाम देना था और घर के लोग पुराने टाइप का नाम देना चाह रहे थे. आखिर जीत मेरी ही हुई . और मैंने इसे तान्या नाम दिया. और वो अकसर मुझसे पूछती थी कि, 'माँ तान्या का मतलब क्या है?'

मैं उससे कहती थी कि 'ये बाइबिल से जुड़ा हुआ नाम है और इसका मतलब ये है कि तुम सारे परिवार को रिप्रेजेंट करती हो, तुमसे ही परिवार है. तुम ही परिवार हो, तुम में ईश्वर का वास है…' कहते कहते मेरी आँखें भीग जाती थी.

उसके पसंद का खाना बन गया था, मैंने उसे टेबल पर लगाया, फिर याद आया कि तान्या तो बिस्तर पर खाना ज्यादा पसंद करती थी, मैंने खाने को एक प्लेट में परोसा और अपने कमरे में गयी, देखा तो तान्या उठकर बैठ गयी थी और कमरे में मौज़ूद अपने और मेरे फोटो को देख रही थी. मैंने कहा, 'बेटा मैंने खाना बना लिया है, सब कुछ तेरे पसंद का है.'

मैं थाली उसके पास लेकर गयी और उससे कहा कि 'तू बैठ, मैं खिलाती हूँ. कितने दिन हो गए, मैंने तुझे अपने हाथों से खिलाया नहीं है.'

तान्या भी पालथी मारकर बैठ गयी. ये उसका पसंदीदा स्टाइल था, वो बिस्तर पर पालथी मारकर बैठ जाती थी, और मैं उसे खिलाती थी, और फिर उसके रनिंग कमेंट्री शुरू हो जाती थी, माँ ये- माँ वो.

अभी वो फिर से शुरू हो गयी थी. 'माँ तूम कितना अच्छा खाना बनाती हो. तुम्हारे जैसे खाना पूरी दुनिया में कोई नहीं बना सकता.. मैं तो तरस जाती हूँ माँ तुम्हारे हाथ का बना खाना खाने के लिए,' उसका ये बोलना था कि फिर से मेरी आँखें भीग गयी.

मैंने कहा, 'तेरा जब भी मन हो, आ जाया करना, ये तो तेरा ही घर है. सब कुछ तो तेरा ही है.'

वो खाते खाते मेरे गोद में झूल गयी, 'मुझे तो कुछ नहीं चाहिए, बस माँ चाहिए. और कुछ नहीं.'

मैंने कहा, 'माँ कहाँ जा रही है, ममा तो अपनी तानु की ही है.'

खाना हो गया, तो तान्या फिर से मेरी गोद में लेट गयी और थोड़ी देर मेरी तरफ देखने के बाद , कमरे के चारों और उसकी नज़रें घुमने लगी . उसकी नज़रें अपने पापा के फोटो पर पड़ीं. पूछने लगी, 'माँ, पापा मेरे जैसे दिखते थे न ?' मैंने हँसते हुए कहा, 'नहीं तू अपने पापा जैसे दिखती है. बड़ी आई पापा, तेरे जैसे दिखने वाले.' तान्या ने कहीं शून्य में देखते हुए कहा, 'सच है माँ मैंने तो उन्हें ठीक से देखा भी नहीं था. वो चले गए हम सबको छोड़कर.'

मैंने एक गहरी सांस ली और उसके सर को सहलाते हुए कहा, बेटा वो फौजी थे, देश पर कुर्बान हुए है, शहीद हुए है, और मुझे नाज़ है उन पर, और तुम्हें भी उन पर फख्र होना चाहिए.'

तान्या खड़ी हो गयी और एक जोरदार सेल्यूट अपने पापा की तस्वीर को देखते हुए दिया. मुझे हंसी आ गयी, तानु की शरारतें गयी नहीं थी. और उसकी यही छोटी-छोटी बाते मुझे बहुत पसंद थी.

मैंने कहा, 'बेटा तू जल्दी-जल्दी आया कर, मुझे तेरी बड़ी याद आती है, मुझे तेरी बड़ी जरूरत महसूस होती है.' तान्या ने हँसते हुए कहा, 'अरे माँ तूम तो सोयी रहती हो, मैं तो आती हूँ न तुम्हारे सपने में. आकर देख कर जाती हूँ कि सब ठीक है. अगर तुम्हारी तबीयत खराब रहती है तो मैं जादू कर देती हूँ और तूम ठीक हो जाती हो . सच्ची में !

मैंने हँसते हुए पुछा, 'अच्छा बता तो कैसे जादू करती है,' वो खड़ी हो गयी और जादूगरों की तरह एक्टिंग करने लगी और मुझे छु मंतर बोल दी. मैं जोर से हँसने लगी.

तानु बस ऐसे ही थी. जीवन से भरी हुई, हंसी से भरी हुई, हर जगह बस वो ही होती थी, मेरी प्यारी तानु. मेरी बच्ची. मेरी जान !

तान्या ने घर भर का एक चक्कर लगाया और मेरे पास आकर कहने लगी, बहुत सारे पौधे लगा लिए है ममा, और ये दो नई बिल्लियाँ भी पाल ली है.

फिर उसने मेरी तरफ गहरी नज़र से देखा और कहा , और बताओ माँ , मैं कैसे-कैसे और कब-कब याद आई तुम्हें.

मैंने कुछ देर सोचा और कहा 'कुछ अजीब सी बाते तो होती रहती है , जब मैं अमेरिका गयी थी वहां एक स्टोर में की-चेन लेने के लिए बक्से में हाथ डाला तो सिर्फ तेरे नाम का की-चेन मेरे हाथ में आया. वही अमेरिका में एक होटल में खाना के लिए हम सब गए थे कि जैसे ही हम भीतर गए , तेरा मनपसंद गाना बजने लगा था . पिछले बरस देहरादून के एयरपोर्ट पर तेरी बहुत याद आई तो देखा कि एक पसेंजर बस वहां अचानक आई जिसके पीछे के साइड पर तानु लिखा था और जब भी मुझे तेरी बहुत याद आई तो तेरी बड़ी बहन या तेरी कोई न कोई सहेली मुझे जरूर फ़ोन करती है. ऐसे ही बहुत सी बाते है ....'

ये सब कहते-कहते मेरी आँखें भीग गयी थी .

तान्या चुप हो गयी अचानक , मेरी तरफ बहुत देर तक देखती रही और फिर बहुत उदास हो गयी. फिर भरी हुई आँखों से कहने लगी, 'माँ मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है, सच में तुम्हारे सिवा कोई नहीं है मेरा माँ.'

ये सुनकर मेरी रुलाई फूट पड़ी. मैंने उसे गले से लगा लिया. वो बहुत देर तक सुबकती रही.

फिर वो शांत हुई, उसने कहा, 'माँ वो दिन याद है......!'

मैंने उसे देखा और मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया !

कई साल पहले / रात 9:३० बजे

तानु का फ़ोन आया, उस वक्त मैं खाना खा रही थी, मैंने मोबाइल उठा कर पुछा, 'हां बेटा?' तानु ने कहा, 'माँ मैं मयंक के साथ डिनर पर जा रही हूँ. आज मैं बहुत खुश हूँ माँ, तुम खुश हो न माँ ?" मैं तो खुश थी ही, तानु की हर ख़ुशी में मेरी ख़ुशी थी. मैंने हां कहा और कहा कि अपना ख्याल रखना बेटा , उसने हां कहा और फ़ोन कट गया. मुझे अचानक से थोड़ी बैचेनी होने लगी थी. उस रात मुझे ठीक से नींद भी नहीं आई.

उसी रात / रात १ बजे

मोबाइल पर लगातार बजती हुई घंटी ने मेरी कच्ची पक्की नींद को झकझोरा. मैंने देखा, मोबाइल के स्क्रीन में कोई अनजाना सा नंबर था. मैंने फ़ोन उठाया. उधर से एक अनजानी आवाज आई, 'क्या आप तान्या की माँ बोल रही है ?' मेरे चेहरे पर पसीना आ गया, इतनी रात के फ़ोन का अंदेशा कुछ अच्छा नहीं था. मैंने जल्दी से कहा, 'हां, क्या हुआ, सब ठीक तो है, तानु ठीक तो है ?' उस आवाज़ ने थोडा रुककर कहा, 'माफ़ कीजिये, मयंक और तान्या का एक्सीडेंट हो गया है,' मैंने चिल्लाते हुए पुछा, 'तानु कैसी है, उसने हिचकिचाते हुए कहा, 'माफ़ कीजिये आंटी; वो ठीक नहीं है, मयंक को कम चोट लगी है, लेकिन तान्या को सर में गहरी चोट लगी है. हम उसे मनिपाल हॉस्पिटल ले जा रहे है, क्या आपका बंगलौर में कोई रिश्तेदार या दोस्त है ? जिससे हम संपर्क कर सके?'

इतना सुनना था कि मेरा दिमाग और दिल ने काम करना बंद कर दिया था. मैं सुन्न हो गयी थी.

दूसरे दिन / सुबह ६ बजे

दूसरे दिन सुबह तान्या 6 बजे इस संसार को छोड़कर इन्द्रधनुष के उस पार अपने प्रभु से मिलने चली गयी.

मुझे हमेशा के लिए अकेला छोड़कर.

मेरी तानु, मेरी बेटी, मेरी तान्या !

आज / शाम ५ बजे

मैं फिर रोने लगी. धुंधली आँखों से देखा तो तानु मेरे पास ही खड़ी थी, उसने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे गले लगी और धीरे- धीरे घर से बाहर चली गयी.

म्यूजिक प्लेयर पर उसका मनपसंद गाना बजा रहा था " knock knock ,knocking on heaven's door' ये गाना उसे बहुत पसंद था और उसके अंतिम यात्रा पर भी यही गीत बजाया गया था; यही उसकी आखिरी इच्छा थी !

मैं बहुत देर तक पलंग पर बैठकर / लेटकर रोती रही.

आज / रात 9 बजे

मैं चुपचाप खाना खा रही थी कि अचानक बड़ी बेटी अंजलि का कॉल आया अमेरिका से. उसने कहा कि माँ तुम्हें पता है? आज मेरे सपने में तानु आई थी, वो हमारा ख्याल रखती है. वो तो हमारे साथ ही है हमेशा!'

मैंने शांत स्वर में कहा, हां मुझे पता है, सब कुछ पता है, वो यही है. हमारे साथ!

हमारी तानु, हमारी तान्या.

कहानी

''दस महीने का मोह''

एस. भाग्यम शर्मा

धीरे–धीरे आई कार एक छोटे से मकान के सामने आकर खड़ी हुई। कार से धीरे से उतरी शालिनी। बड़ा सा पेट, मातृत्व के बोझ से परिपूर्ण।
'' आपको डॉक्टर साहिबा ने 2 घण्टे में वापस आन को कहा है। जाकर जल्दी आ जाइयेगा।'' ड्राइवर के कहने पर शालिनी सिर हिलाकर अन्दर चली गई।
''आ ! अम्मा आ गई।'' हर्षित दौड़ कर शालिनी के पैरों से लिपट गया। आवाज सुन रसोई से श्रीकान्त बाहर आया।
'' शालिनी आओ ....आओ बैठो.......तबियत कैसी है। अभो मैंने सब्जी बनाकर रखी है। वे अच्छी तरह तुम्हारी देखभाल करते हैं ? '' प्रेम से पूछते हुये पत्नी के पास आया श्रीकान्त।
''आपकी नौकरी का क्या हुआ ? मिल को पुनः खोलने वाले है या नहीं ''
''बातचीत चल रही है शालिनी। निश्चय ही एक महीने में खुल जायेगी, ऐसा सुपर वाइजर कह रहे थे। जो नौकरी चली गई थी वह दोबारा मिल जाएगी।.....फिकर मत करो। अभी चिंता करना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है। बहुत सी बातें सोच सोच कर मन खराब मत करो। शान्ति से रहो। तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहना चाहिए। मेरे लिए ये ही जरूरी है।
''मुझे क्या है जी ! मैं तो अच्छी हूं। रोजाना बढ़िया, तरह तरह का, स्वास्थ्य प्रद खाना मिलता है। समय पर दवाई, गोलियां बहुत ही अच्छी देखभाल के बीच रह रही हूं। पर मेरा मन तो घर के इर्द गिर्द ही घूमता है। हर्षित ने खाना खाया नहीं। आप अकेले कितना परेशान होते हो। यह सोच मन बहुत ही तड़पता है।''
''फिक्र मत करो शालिनी। तुम्हारे प्रसव में थोड़े दिन ही तो बाकी हैं। सब कुछ ठीक से हो जाएगा। ''
'' अम्मा तुम कब आओगी ? '' पांच साल के बच्चे हर्शित ने पूछा तो शालिनी की आँखें नम हो गईं।
वह बोली '' पापा का कहना मानो मेरे राजा बेटे अच्छे बच्चे बन कर रहो......अम्मा जल्दी आ जाएगी। अच्छा मैं चलती हूं।''
'' ठहरो, शालिनी, खाना बन गया है। एक रोटी तो खाकर जाओ। ''
'' नहीं जी........बाहर कुछ भी खाने को सख्त मना किया है। अभी तो सिर्फ बच्चे से मिलने आई हूं। इसके लिए डाक्टर साहिबा से बहुत अनुरोध कर के आई हूं। हर्शित का पूरा ध्यान रखना जी। मैं चलती हूं।''
कमरे की खिड़की से शालिनी ने बाहर झांका। अस्पताल में लोग, बहुत सी चिंताओं में घिरे इधर उधर आ जा रहे थे। नीम के पेड़ की हवा के कारण बाल बार बार उड़ कर उसके चेहरे पर आ रहे थे। पेट के अंदर बच्चा जोर जोर से लात मार रहा था। उसका शरीर रोमांचित हो रहा था।
'वह बुदबुदाने लगी। 'मेरे खून से पलने वाले मेरे प्यारे बच्चे तू तो बहुत ही भाग्य शाली है। तेरा जन्म भले ही इस गरीब मां के कोख से हुआ हो पर तेरे लिए आगे तो ऐषो आराम की

जिन्दगी तुम्हारे स्वागत के लिए खड़ी है। उसका मन बहुत ही उदास हो रहा था उसने अपने पेट पर हाथ फेरा और आंखें बंद कर ली।
"षालिनी, क्या खड़े खड़े ही सो रही हो। खाना लेकर आई हूं.........खालो।"
नर्स के कहने पर शालिनी ने आंखें खोली "रख कर जाओ, बाद में खा लूंगी। अभी भूख नहीं है।"
"क्या कह रही हो...........भूख नहीं है..........तबियत तो ठीक है ना..........डाक्टर से कहूं क्या ? " नर्स ने घबरा कर पूछा।
"नहीं वह सब कुछ नहीं है। सोचा कुछ देर में खा लूंगी। ठीक है अभी खा लेती हूं।'
" ठीक है खा लो। खाने के बाद तुम्हें दवाई व गोलियां देनी है। खाना खाकर आराम करना। शाम को चार बजे बरामदे में चलना है। ऐसा डाक्टर ने कहा है। फिर मैं तुम्हें ले जाऊंगी।"
सब्जी, रोटी,कढ़ी,सूप, फलों का रस, सलाद, खीर आदि से थाली भरी हुई थो। वह सोचने लगी कि जब हर्शित होने वाला था तो मुझे सिर्फ सूखी रोटी नसीब थी। अब देखो तो रोज ही दावत जैसे थाली नाना प्रकार के व्यंजनों से भरी रहती है।
डाक्टर ने शाम को चेकअप किया। "सब कुछ नॉर्मल है शालिनी। कोई भी परेशानी नहीं है। क्या तुम बच्च का हिलना डुलना महसूस कर रही हो।"
"हां जी ! डॉक्टर साहब। बच्चा बहुत ही चंचल है। पूरी रात पेट में लात मारता रहता है। "
"थैंक्स गॉड, सब अच्छी तरह से चल रहा है, बच्चा पूरा स्वस्थ पैदा हो तो उस दम्पति को प्रसन्नता होगी।"
"डॉक्टर एक बात पूछूँ ? "
" क्या बात है शालिनी ? "
"मेरे गर्भ में पल रहे बच्चे के मां–बाप से मैं एक बार मिल सकती हूँ?"
"तुम ऐसा क्यों चाहती हो, शालिनी ?.......इसकी जरूरत नहीं है। "
"क्यों नहीं डॉक्टर। भले ही बीज उनका है, पर मैं अपने खून से सींच रही हूं। अतः ये बच्चा मेरा है ऐसा मुझे महसूस होता है ना ? इसे अपना मान कर ही इसका बोझ उठा रही हूं ना ? मेरे पेट में पल रहे बच्चे के मां–बाप वही लोग हैं ये मुझे मालूम नहीं होना चाहिए क्या डाक्टर ? "
"ये गलत है शालिनी, जो समझौता हुआ है, उसके हिसाब से तुम एक किराये की मां हो। उनके बीज का दस महीने भार उठाकर तुम सिर्फ उसे पैदा कर उन्हें देने वाली हो। उसके बाद तुम्हारा कर्त्तव्य पूरा हुआ। उसके लिए रूपये लेकर तुम्हें अलग हो जाना चाहिए। उनसे तुम्हें मिलना है तुम्हारा सोचना गलत है। वे भी तुम्हारा मिलना पसंद नहीं करेगें न इस बात के लिए राजी हागे।वे तो तुम्हारे किया–कलापो पर अप्रत्यक्ष रूप से ध्यान रख रहें हैं। फिर क्या बात है शालिनी ! शांति से रहो। "
सुबह से ही शालिनी की तबियत खराब हो रही है। बच्चे का सिर नीचे आ गया है, और दो दिन में ही प्रसव हो जाएगा ऐसा डाक्टर ने कह दिया। पता नहीं क्यों शालिनी को अपने पति से मिलने की तीव्र इच्छा हो रही है। उसे ये भी पता है कि उन्हें यहां आने की अनुमति नहीं मिलेगी।
' क्या करें.......मेरा बच्चा बाहर आने वाला है। उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है सब लोग कह रहे हैं। कुछ भी हो, फिर भी मेरे खून से सींच कर बना वह जिसके भार को इतने महीने मैने वहन किया इस वजह से मेरे मन में जो मातृत्व की जो भावना है उसका किसी

को ख्याल नहीं ? मुझे मेरे पति से मिलने का मन बहुत कर रहा है। प्रसव का मतलब एक औरत का पुर्नजन्म होता है।मेरा दूसरा जन्म होते समय आप मेरे पास नहीं होगे ?मैं क्या करूं?

कमर का दर्द धीरे धीरे बढ़ता चला गया। 'अम्मा' कहते हुये शालिनी कमर पकड़ कर पलंग के पास जो बुलाने के लिए घण्टी लगी है उसे दबाने लगी।

प्रसव वाले कमरे में उसके चारों ओर डाक्टर व नर्स खड़े हुए थे। भयंकर दर्दहोने के साथ ही ,.........

''हाँ, आप तुरन्त आ जाईयेगा। प्रसव पीडा शुरू हो गई। अब थोड़ी देर में बच्चा पैदा हो जाएगा। '' डाक्टर फोन पर कह रहीं है,उसे कहीं कुंए से बोल रही जैसे लगा। आधे होश में शालिनी ने ये सुना।

''अम्मा'' उसके जोर से चिल्लाने के साथ नये कोमल बच्चे की रोन की आवाज बाहर आई। जो कानों में मिश्री घोलने के साथ, शरीर व मन को भी सुकून देने लगी। शालिनी बेहोश होने लगी।

जैसे ही उसने आंखें खोली, कमरे में अपने को लेटे पाया। पास में श्रीकान्त व बेटे हर्षित को खड़े देखा।

'' आप आ गये क्या ? ''

बड़ी उत्सुकता से उसकी आंखे पास पड़े हुए झूले को देखने लगी।

''क्यों जी, बच्चा........बच्चा कहां है ?'' कमरे में घुसे डाक्टर बोले '' सब अच्छी तरह से सम्पन्न हो गया। सुन्दर सा लड़का हुआ। उसकी आँखें सुन्दर व रंग गोरा है बिल्कुल गुलाब के फूल जैसे बच्चा है। उसके मां–बाप बहुत खुष हैं। जो समझौता हुआ उससे ज्यादा रूपये देकर गये।''

रूपये श्रीकान्त को देते हैं। ''डाक्टर मुझे बच्चे को देखना है। मुझे दिखाईये।''

''नहीं शालिनी, प्रसव होते ही आधे घण्टे के अन्दर ही वे लोग बच्चे को लेकर चले गये। तुम देख नहीं सकती। ''

'दस महीन पेट में रख कर भार उठाया, उस बच्चे के मुख को मैं देख नहीं सकती ! ...... एक मिनट उस बच्चे को देख नहीं सकती ! ....एक मिनट उस बच्चे को गोद में लेकर मेरे बेटे कह कर चूम लूं , तो क्या ये अधिकार भी मुझे नहीं ? ....मेरा व उसका जो रिष्ता है वह सिर्फ दस महीने का ही है..........? सोच सोच कर उसका रोना रूकता ही नहीं था। '

'' डॉक्टर, मैंने दस माह जिसे पेट में रखा उसके चेहरे को मैं देखना चाहती हूं।दस महीने मेरे पेट में, मेरे खून से जिसे सींचा है उसे सिर्फ एक बार उठा कर चूमना चाहती हूं डाक्टर। मेरे दर्द को समझो आप। कृपा कर उसे मुझे दिखाइये डॉक्टर। ''

शालिनी का दिल फटने लगा वह रोने लगी।

''मां , मेरा छोटा भाई कहाँ है मां ? '' बिना समझे हर्षित पूछने लगा।

'' रोओ मत शालिनी। तुम्हारी हालत को मैं समझता हूं। ये तुम्हारे लिये नया अनुभव है। गरीबी के कारण तुमने उस बच्चे का भार उठाया तो भी तुम्हारे मातृत्व के भावना को मैं सम्मान देता हूं। परन्तु, मैं कुछ भी करने की स्थिति में नहीं हूँ। भगवान ने जिसे बच्चा नहीं दिया उसे तुमने दें दिया। तुम एक भगवान की तरह हमेषा उनके मन में रहोगी। अभी तुम्हारा शरीर कमजोर है। रोना तुम्हारे लिए ठीक नही..........''

डॉक्टर के सांत्वना देने पर हाथ में रूपयों के साथ खड़े श्रीकान्त की आंखें भी भर आई व उसने फूट–फूट कर रो रही शालिनी को गले लगा कर तसल्ली दी।

पुस्तक समीक्षा

जुगाड़ तकनीक के विविध आयाम-राहुल देव

युवा कवि एवं लेखक अरविंद पथिक का पहला व्यंग्य संग्रह 'जुगाड़ तकनीक के विविध आयाम' पढ़ने को मिला। इसमें उनके 26 व्यंग्य संग्रहीत हैं। व्यंग्य की उनकी समझ को पढ़कर लगा कि वे स्वभाव से ही विनोदी व्यक्तित्व के हैं तो गंभीर व्यंग्य को लेकर उनकी प्रतिबद्धता पढ़कर आश्वस्ति भी हुई। अपनी बात में वह लिखते हैं, 'मेरी समझ में व्यंग्य बात कहने की विशिष्ट शैली है जिसमें शिष्ट रहना कतई जरूरी नही।' अपनी परम्परा को याद रखते हुए वे पाठकों से रूबरू होते हैं।

संग्रह के सभी व्यंग्यों से गुजरने के बाद मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि अरविंद कितने मुखर होकर बड़े ही बेबाक तरीके से अपनी व्यंग्य प्रतिभा को पूरी विट के साथ प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि अपनी इस क्षमता को आगे ले जाने की उनके अंदर अपार संभावनाएं हैं। उनके व्यंग्यों में हास्यरस की प्रधानता है। हास्य से निकटता के कारण इन व्यंग्यों को विशुद्ध व्यंग्य न कहते हुए 'हास्य व्यंग्य' कहना होगा। अरविंद जी के व्यंग्यों में आई राजनीतिक टिप्पणियां प्रभावी हैं। कई दफा पारिवारिक स्थितियों के बीच उपजे हल्के-फुल्के क्षण भी उनके व्यंग्य विषय बने हैं। व्यंग्यों की सहज-सरल भाषा-शैली बड़ी ही प्रवाहमयी और पठनीय है। पढ़ने से साफ पता चलता है कि सायास नही बल्कि अनायास रचे गए हैं जिनके पीछे लेखकीय अनुभव अपने परिवेशगत सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक व पारिवारिक वातावरण की विसंगतियों का जीवंत भाषा में व्यंग्यात्मक चित्रण है। इनमे आये हुए कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं, 'जुगाड़ हमारी प्राचीन भारतीय परंपरा से सहज भाव से आया है। जुगाड़ की यह तकनीक भारतीय परिवारों में श्रुति परम्परा की तरह पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित हुई है। इसका अपना अलिखित संविधान है।', 'भारतवर्ष को यदि अपने सीमित संसाधनों द्वारा विकास के पथ पर आगे बढ़ना है तो 'यूज़ एंड थ्रो' के चीनी दर्शन को त्यागकर जुगाड़ के मितव्ययी पर टिकाऊ तरीकों की ओर आज नही तो कल वापस आना ही होगा। (शीर्षक व्यंग्य), 'वह साहित्यकार ही क्या जो पुरस्कार के स्वीकार और तिरस्कार दोनों
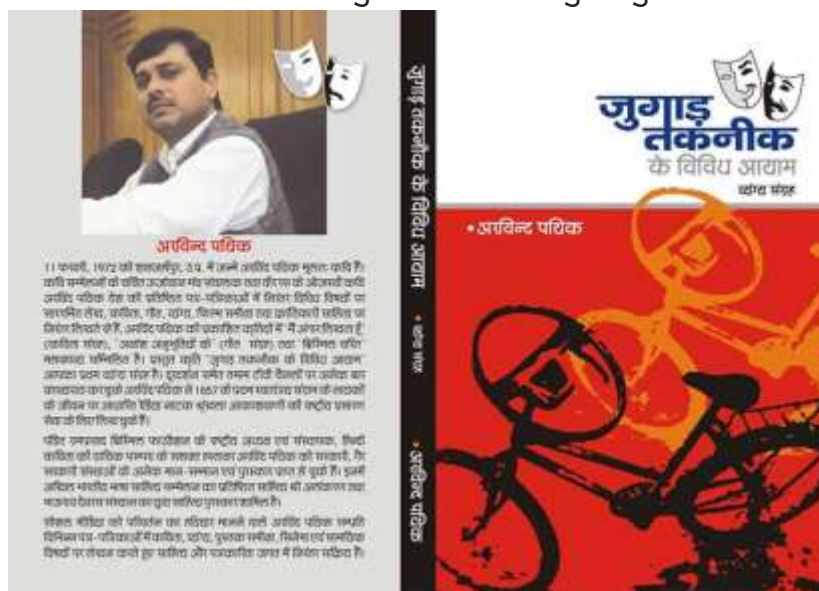
से ही न्यूज़ न बना ले।' (पुरस्कार वापसी पर्व), 'महीने भर दाल खाने के लिए पर्सनल लोन न लेना पड़ जाए तो नाम बदल देना।' (अरहर की दाल) आदि।

संग्रह की रचनाओं में लेखक का प्रखर हास्यबोध पाठक को कई दफा गुदगुदाता है तो कई दफा उसे चल रहे राबे-ढाबे पर सोचने को विवश भी करता है। उनके इन हास्यव्यंग्यो की जद में जो भी आया है उनके तेज़ भाषिक प्रहारों से उसका बचना मुश्किल ही रहा है। अरविंद बात से बात निकालने की कला में एक्सपर्ट हैं। बतरस की अधिकता से हालांकि कहीं कहीं कुछ रचनाएं कमजोर भी पड़ी हैं फिर भी यह उनका यह पहला संग्रह है अतः उम्मीद जगाता है कि लेखक को अभी अपनी रचनात्मकता में लम्बी दूरी तय करनी है।

संग्रह में जुगाड़ तकनीक के विविध आयाम, पुरस्कार वापसी पर्व, अरहर की दाल, लव और जिहाद, सरकारी स्कूल का मास्टर, अन्नदाता सुखी भव, काश आ जाते ऐसे अच्छे दिन, न्यायमूर्ति की नियुक्ति, कालाधन, ईमानदार जी, फेसबुक : प्रेम और साहित्य, फेसबुक पर प्रेमक्रान्ति जैसी उल्लेखनीय व्यंग्य रचनाएं हैं। तथापि इस 96 पृष्ठीय पुस्तक का 400 रुपये मूल्य बहुत ज्यादा है। अगर प्रकाशक इसका मूल्य कम रखते तो यह कृति और अधिक पाठकों तक पहुंच सकती थी।

जुगाड़ तकनीक के विविध आयाम/ व्यंग्य संग्रह/ अरविन्द पथिक/ 2017/ बुनियादी साहित्य प्रकाशन, लखनऊ/ पृष्ठ 96/ मूल्य 400/-Rahuldev.bly@gmail.com

दूर देश की पाती/पाठकीय प्रतिकृया

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार।

श्रीमान जी,

आपकी पत्रिका हिन्दी के प्रचार प्रसार का कार्य एंवम रचनाकारों की रचनाओं को पाठकों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य एक मिशन की तरह कर रही है। हिन्दी भाषा की सेवा के लिए यह कार्य सराहनीय है। मैं भी आपकी पत्रिका के माध्यम से साहित्य प्रेमियों एंव पाठकों के साथ अपनी कविता के माध्यम से अपने विचार साझा करना चाहता हूं। आपकी पत्रिका के लिए कुछ रचनाएं भेज रहा हूं, ये पूरी तरह से मेरी मौलिक रचनाएं हैं, अप्रकाशित और अप्रसारित हैं। यदि पत्रिका के लिए उपयोगी हों तो आगामी अंकों में शामिल कर कृतार्थ करें।

लव कुमार'लव', हिन्दी अध्यापक,रावमावि., बडी बसी अम्बाला (हरियाणा)गांव–लौटों, तह॰,+पो॰नारायणगढ,जिला,अम्बाला,दूरभाष– 08685827332

'इंदु संचेतना 'त्रैमासिक पत्रिका का जनवरी -मार्च अंक ६पढ़ा ।जिसमें साहित्य का बेजोड़ संकलन पढ़ने को मिला ।इस पत्रिका के माध्यम से साहित्य का बेहतरीन सागर पाठकों को घर बैठे उपलब्ध हो रहा है जिससे विभिन्न लेखकों से रूबरू होने एंव विभिन्न रचनाओं का रसास्वादन करने का मौका मिला है ।

पत्रिका के मुख्यपृष्ठ से ही इन्द्रधनुषी चित्र और विविध रचनाएँ अपने आकर्षण से खींचने लगते है । ये आकर्षण पत्रिका के एक अंक तक ही सीमित नही रहता अपितु अन्य अंकों को पढ़ने की भूख तीव्र कर देता है और बेसब्री से इंतजार करने को विवश करता है ।

पाठक रचनाओं को पढ़ने की यात्रा पर निकलते ही विश्राम अंतिम पृष्ठ के बाद ही करेगा ऐसा मुझे पत्रिका पढ़कर अनुभव हुआ ।

मेरा सुझाव है चीन के पर्यटन ,पुस्तकालयों एवं विभिन्न प्रसिद्ध पुस्तकों ,लेखकों से भी परिचित करवाया जाये तो बहुत से लेखक नवीन जानकारियों से आनन्दित होंगे मुख्यरूप से वे लेखक जो चीन की संस्कृति,साहित्य और इतिहास को करीब से जानना एवं समझना चाहते है ।

पत्रिका में सम्पादक मंडल ने सराहनीय कार्य किया है इस हेतु हार्दिक बधाईयां एवं अशेष मंगलकामनाएं ।

शुभेच्छु

शालिनी शालू 'नज़ीर '

हलचल

एक विशेष कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के छात्रों के साथ हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा

पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की कविता संग्रह के राजस्थानी भाषा के अनुवाद का लोकार्पण

प्रशंसा व आलोचना, दोनों प्रेरणा देते हैं - राज्यपाल

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी की पुस्तक के विमोचन के दौरान उपस्थित डॉ. जेबा रशीद, डॉ. जरीना जरी, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, गिरिधर राय व नंदलाल शाह

कोलकाता : किसी भी चीज का आकलन दो प्रकार का होता है, प्रशंसा व आलोचना। दोनों ही आकलन प्रेरणा देते हैं। रविवार को भारतीय भाषा परिषद में आयोजित काव्य लहरी के एक वर्ष पूरे होने के अवसर पर राज्यपाल की 4 किताबों के विमोचन के दौरान पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी ने उक्त बातें कहीं। उन्होंने बताया कि अगर कोई आपको या आपकी रचनाओं की प्रशंसा करता है तो यह आपको और अच्छा करने की प्रेरणा देती है। वहीं अगर कोई आपका या आपकी रचनाओं की आलोचना करे तो यह आपको खुद में सुधार लाने के लिए प्रेरित करती है। उन्होंने अपनी नयी किताबों के बारे में बताते हुए कहा कि इन किताबों में लिखी हुई कविताएं उन्होंने अपनी जवानी में लिखी थी जो इधर-उधर कहीं छुपी हुयीं थीं। कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल की 4 किताबों, 'जखमों पर शबाब' हिन्दी और उर्दू व हिन्दी और राजस्थानी भाषा में व 'खयालों का सफर' हिन्दी व उर्दू भाषा में, का विमोचन किया गया। इन किताबों का राजस्थानी में अनुवाद डॉ. जेबा रशीद ने व उर्दू में अनुवाद डॉ. जरीना जरी ने किया।

वहीं इस मौके पर काव्य लहरी के मंच पर अपनी कविताओं को पेश करने वाले अबतक के 73 कवियों की रचनाओं पर आधारित एक किताब 'काव्य लहरी' का भी विमोचन किया गया। कवि व गीतकार डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं और कहा कि कोलकाता में रचना व कला को सम्मान दिया जाता है। डॉ. कुसुम खेमानी ने स्वागत भाषण दिया व भारी बारिश के बावजूद लोगों को मौके पर उपस्थित होने के लिए धन्यवाद कहा। काव्य लहरी के एक वर्ष की पूर्णता पर गिरिधर राय को राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया गया।

इस मौके पर गिरिधर राय ने कहा कि जब उन्होंने काव्य लहरी की शुरुआत की तब उन्हें कई लोगों ने कहा था कि यह कार्यक्रम ज्यादा दिन नहीं चलेगा लेकिन यह सफल हुआ और आगे भी यह आयोजित होता रहेगा। कार्यक्रम के दौरान ईश्वरी प्रसाद टांटिया व विमला पोद्दार उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन नंदलाल शाह ने किया। डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

<u>साहित्य के फूल ग्रामांचल में ही खिलते हैं-</u> कलकत्ता शहर के सूदूर शिल्पांचल में नैहाटी नामक स्थान है जहां सुविधाएं तो बहुत कम हैं पर हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार, नयी प्रतिभाओं के निखार का सतत प्रयास जारी है। इस प्रयास में इसी क्षेत्र की आध्यापिका डॉ. इन्दु सिंह एवं डॉ.विक्रम साव के प्रयास सरहनीय हैं जो अपने अथक प्रयास से हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार का अलख जगाने में लगे हुए हैं । उनकी यह सेवा पिछले सात वर्षों से चल रही है । मुंशी प्रेमचंद के जयंती के अवसर पर मैत्रेयी ग्रंथागार में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया । रिमझिम बारिश, पानी से लबालब भरी सड़कों की भी परवाह न कर साहित्य प्रेमियों का जमावड़ा देखने योग्य था । कार्यक्रम में वरिष्ठ लेखिका माला वर्मा,डॉ. श्रीकांत गोंड,श्री एन. चंद्रा राव, ऋषि बंकिमचंद कॉलेज फॉर वुमेन के हिन्दी के प्राध्यापक,साहित्य प्रेमी श्री चंद्र कुमार मुखर्जी, श्री बिनय कुमार शुक्ल,श्री धरमदेव सिंह एवं श्रीमती आरती वर्मा उपस्थित थीं । इनके अतिरिक्त विभिन्न विद्‌यालयों एवं महाविद्‌यालयों के छात्र-छात्राएँ भी उपस्थित थे । समारोह की खासियत यह थी कि सबसे युवा साहित्यप्रेमी कक्षा सातवीं के कई छात्र थे । विभिन्न साहित्यिक चर्चाओं के अतिरिक्त वरिष्ठ लेखिका श्रीमती माला वर्मा की नवीनतम पुस्तक 'विश्व के 20 आश्चर्य' का लोकार्पण भी हुआ ।

इसी क्षेत्र में महिलाओं के एक गैर सरकारी संगठन द्‌वारा साहित्य श्रीजन मेला में हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन क्या गया । इस कार्यक्रम में वरिष्ठ लेखिका श्रीमती माला वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी । कार्यक्रम में माला वर्मा जी के अतिरिक्त अन्य साहित्यकारों के पुस्तकों की प्रदर्शिनी भी लगाई गयी । प्रतियोगिता में क्षेत्र के युवाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया । कुमारी वाणी शुक्ल प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता घोषित हुईं। श्री राजा साव प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर रहे ।कार्यक्रम के साथ ही संस्था द्‌वारा क्षेत्र के युवाओं में हिन्दी के प्रति आकर्षण जगाने के लिए हिन्दी एवं अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुरुआत की घोषणा की गयी ।

सृजन सम्मान का फॉर की/ रिपोर्ट राजेश्वर राज :सौजन्य : महेंद्र भीष्म

कई लोग अपने अपने तरीके से समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने में अपने जीवन को सार्थक करते हैं और समाज को नयी दिशा दे जाते हैं। इन्हीं नामों में एक नाम था "राजाराम मोहन राय" जिन्होंने भारत देश की एक वीभत्स कुप्रथा सतीप्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाई और उसे हमेशा के लिये जड़ से समाप्त किया। अवसर था महामना राजाराम मोहन राय का २५४वाँ जन्मदिवस; इस शुभअवसर पर सृजन फाउंडेशन लखनऊ मंच ने उन बारह पुरुषों को खोजा और सम्मानित किया जो स्त्री के हित के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं। 'का फॉर की' सम्मान का आयोजन जयशंकर सभागृह में सोमवार की शाम किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में बुन्देलखण्ड की भूमि से मऊरानीपुर की श्रीमती पुष्पलता अग्रवाल ने किया। विशिष्ट अतिथि टीकमगढ़ से गीतकार, अभिनेत्री व नाट्यनिर्देशक गीतिका वेदिका तथा अध्यक्षपद पर हाईकोर्ट अधिवक्ता श्री सुरेश अवस्थी थे। दीपप्रज्ववलन किन्नर गुरु पायल सिंह ने किया।

कार्यक्रम का संचालन सृजन फाउंडेशन के अध्यक्ष अमित सक्सेना ने किया। पुरुस्कृत हुए लोगों ने महिला के क्षेत्र में गौरवान्वित प्रयास किये, वे थे- मेंसुरेशन के क्षेत्र में जागरूकता, महिला आत्मरक्षा के प्रशिक्षण, सेक्सवर्कर्स को नारकीय जीवन से मुक्त कर उन्हें रोज़गार प्रदान कराना, घरेलू हिंसा पर कार्य, अधिकारों की पहचान। ये बारह जन थे- रियाज़ अजीज़, लक्ष्य राय, पुनीत गाँधी, डॉ आशीष गुप्ता, विवेक सक्सेना, गौरव ह्यूमन, अभिषेक चौहान, ज्ञान प्रकाश त्रिपाठी, अमृत शर्मा, नितेश वर्मा, अनूप यादव व कथाकार महेंद्र भीष्म। टीकमगढ़ के थियेटर कलाकार राजेश्वर ने जानकारी देते हुए कहा कि कथाकार महेंद्र भीष्म ने न केवल महिलाओं के क्षेत्र में जागरूकता के कार्य किये अपितु किन्नर के अधिकारों के प्रति भी अथक प्रयास कर समाज में उन्हें हाशिये से उठा के मुख्य धारा में जोड़ने की पहल की। इस संदर्भ में "किन्नर कथा" व "मैं पायल" उनके रचे कालजयी उपन्यास हैं। जो उन्हें नरश्रेष्ठ की पदवी से विभूषित करते हैं। शीघ्र ही उनकी लिखी कहानी "तीसरा कम्बल" को फीचर फिल्म के रूप में कुछ अंश टीकमगढ़ नगर में भी शूट किए जाएंगे।

“एक आदमी जैसा आदमी” का लोकार्पण - प्रस्तुति : नवलकिशोर शर्मा

जयपुर. साहित्यिक पत्रिका “एक और अंतरीप” के डॉ. हेतु भारद्वाज पर एकाग्र विशेषांक “आदमी जैसा आदमी” का जयपुर के तोतुका भवन में लोकार्पण हुआ. इस अवसर पर साहित्यकारों , लेखकों और पत्रकारों की मौजूदगी में डॉ. हेतु भारद्वाज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा हुई. वरिष्ठ कवि ऋतुराज ने कहा कि” हेतु भारद्वाज आम आदमी के लेखक हैं. जितना सरल उनका व्यक्तित्व है उतना ही सहज उनका लेखन है. अपनी कहानियों और अपने सम्पादकीयों से गहरी और गंभीर बात सहज ही कह देने की कला है उनके भीतर.” इस अवसर पर कला, संगीत एवं लोक साहित्य मर्मज्ञ विजय वर्मा ने कहा कि “डॉ. हेतु भारद्वाज जमीन से जुड़े और स्वाभाव से खरे होने के साथ ही आम आदमी से गहराई से जुड़े रहने वाले सरल व्यक्ति हैं. संबंधों को निभाना कोई उनसे सीखे. जमीन और लोगों के साथ इस गहरे अकृत्रिम जुडाव के मूल में एक तत्व शायद उनकी ग्रामीण पृष्ठभूमि भी है. वे सही मायनो में एक ढाणी के आदमी हैं.” व्यवसायी एवं राजनेता केशवदेव अग्रवाल ने कहा कि डॉ. हेतु भरद्वाज के व्यक्तित्व में एक अच्छी बात यह है कि राजनितिक और सामाजिक जीवन की कोई विधा उनसे अछूती नहीं रही है.वे सबका अध्ययन, मनन और चिंतन करते हैं. धार्मिक विषयों तक पर किसी ज्ञानी और पंडित से बहस कर लेते हैं.” इस अवसर पर एक और अंतरीप के प्रधान संपादक डॉ. प्रेमकृष्ण शर्मा ने कहा कि इस पत्रिका को पुनर्जीवित करने का सारा श्रेय डॉ.हेतु भरद्वाज को जाता है जिनके परामर्श से यह पत्रिका गत छः सालों से रेगुलर निकल रही है. वरिष्ठ आलोचक डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल का कहना था कि साहित्य , शिक्षा , समाज, राजनीति, कला आदि आदि अनेक अनुशासनों पर गंभीर विमर्श करने वाले और अपना मौलिक सोच रखने वाले हेतु भारद्वाज की खासियत यह है कि वे आम विद्वानों की तरह मनहूस नहीं हैं. बात कितनी ही गंभीर हो, उसे सहज स्वाभाविक रूप में कहना उन्हें आता है और बखूबी आता है. कवि गोविन्द मातुर ने कहा कि हेतु जी न तो कभी पुरस्कारों और सम्मानों के पीछे दौड़े और न ही कभी किसी प्रतिस्पर्धा में रहे.तीस से भी अधिक पुस्तकें लिख चुके हेतुजी ने कभी भी अपनी किसी पुस्तक का लोकार्पण नहीं कराया और नहीं किसी से समीक्षा का आग्रह ही किया. ऐसा है उनका विराट व्यक्तित्व जो उन्हें अपने समकालीनों के बीच अलग पहचान दिलाता है. कार्यक्रम का संयोजन एक और अंतरीप के संपादक अजय अनुरागी ने किया. डॉ. रजनीश भारद्वाज ने आभार व्यक्त किया.

डॉ सीता किशोर खरे स्मृति समारोह 2017

दिनांक 25 जून 2017,स्थान मृगेश पुस्तकालय सेवढा,संयोजक युवा साहित्यकार मंच सेवढा

डॉ. सीता किशोर खरे स्मृति प्रसंग के अवसर पर आयोजित कार्य क्रम के प्रथम सत्र में दादा

सीता किशोर द्वारा लिखित पुस्तक " रहीम के आमू सामू" का विमोचन मुख्य अतिथि श्री नारायण सिंह यादव अध्यक्षता श्री शिव चरण पाठक जी विशिष्ठ अतिथि श्री धीरज महते एवं श्री मुमताज खान द्वारा किया गया ।इस अवसर पर सीता किशोर स्मृति सम्मान 2017 से वरिष्ठ साहित्यकार डॉ शफी उल्लाह कुरैशी को सम्मानित किया गया । श्री धीरज महते द्वारा वरिष्ठ साहित्यकारों का सम्मान किया गया । इसी क्रम में डॉ सीता किशोर खरे पर आयोजित व्याख्यान माला में डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव, डॉ कामिनी, राम स्वरूप स्वरूप डॉ अवध बिहारी पाठक ओम प्रकाश दीक्षित, सी पी सडैया, विमल विश्वसी, डॉ.लोकेंद्र सिंह नागर, सुरेश पटेल, शायां कुरैशी,नूप पाठक, हरि कृष्ण सडैया, ओम प्रकाश उपाध्याय आदि ने अपने बिचार व्यक्त किए। काव्य गोष्ठी का प्रारंभ डॉ नागर की गजलों से हुआ ।इसके बाद राजकुमार सक्सेना अमित खरे ज्योति प्रकाश श्रीवास्तव राकेश श्रीवास्तव सलीम मलिक मनोज शर्मा,डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव राम स्वरूप स्वरूप ओम प्रकाश ओज एवं पूर्व विधायक श्री शिव चरण पाठक ने भी काव्यपाठ किया । संचालन डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव एवं अमित खरे ने किया ।भार प्रदर्शन विमल विश्वासी ने किया।

पंडित रामानुज त्रिपाठी की पुण्य तिथि पर हुआ जिपं सभागार में आयोजन

समारोह में सम्मानित हुए साहित्यकार

लोकार्पण

सुलतानपुर | हिन्दुस्तान संवाद

पंडित रामानुज त्रिपाठी सृजन संस्थान, गरएं की ओर से स्व. पंडित रामानुज त्रिपाठी की पुण्य तिथि पर साहित्यकार सम्मान समारोह, पुस्तक लोकार्पण एवं विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। शहर के जिला पंचायत सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कई प्रदेश के साहित्यकारों ने भाग लिया।

पहला सत्र बाल साहित्य पर और दूसरा सत्र नवगीतों पर आधारित रहा। पहले सत्र में रामानुज त्रिपाठी के बालगीत संग्रह 'जंगल का स्कूल' और मासिक पत्रिका 'बालवाटिका' के जुलाई अंक का लोकार्पण और दूसरे सत्र में धीरज श्रीवास्तव एवं मंजू श्रीवास्तव द्वारा सम्पादित गीत-पुस्तक 'नेह के महावर' और रामानुज त्रिपाठी के नवगीत संग्रह 'धुंए की टहनियां' का लोकार्पण हुआ।

दोनों सत्रों के विचार पक्ष को विभिन्न साहित्यकारों ने सम्बोधित किया। दोनों सत्रों का कुशल संचालन युवा साहित्यकार ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह 'रवि' ने किया। बाल साहित्य की वर्तमान प्रासंगिकता पर बोलते हुये दिनेश प्रताप सिंह ने कहा कि आज हम बच्चों को शिक्षा देने और उसे प्रौढ़ बनाने के नाम पर अधिक से अधिक बोझ के नीचे दबा रहे हैं। यहां बच्चे बौद्धिक न होकर कुंठित होने लगते हैं। हमें बच्चों को इस कुंठा से बचाने के लिए बाल साहित्य से जोड़ना होगा। लखनऊ के बंधु कुशावर्ती ने कहा कि रामानुज त्रिपाठी रामनरेश त्रिपाठी के बाद बाल-साहित्य के इस जिले के बड़े महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे हैं। डॉ. शोभनाथ शुक्ल ने त्रिपाठी जी के बाल साहित्य पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि के रूप में बालवाटिका पत्रिका के संपादक डा. भैरूंलाल गर्ग ने संस्मरण सांझा करते हुए कहा रामानुज त्रिपाठी के बाल साहित्य से परिचय बालवाटिका पत्रिका से ही संभव हो सका। विशिष्ट अतिथि राजस्थान के फतह सिंह लोढ़ा ने संस्थान के अध्यक्ष अवनीश त्रिपाठी की प्रशंसा करते हुए कहा कि भारतवर्ष में अनेक लेखक थे, हैं और रहेंगे। लेकिन पिता के साहित्य को आगे लाने वालों को उंगलियों पर गिना जा सकता है। इस मौके पर वरिष्ठ साहित्यकार आद्या प्रसाद सिंह, डा.सुशील कुमार पांडेय, सम्पादक आचार्य ओम नीरव, प्रोफेसर मंजू श्रीवास्तव, गुजरात के डा. सूर्यदीन यादव, ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि, करुणेश भट्ट, डा. रामप्यारे प्रजापति, जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, डा. देवनारायण शर्मा, डा. ओंकार नाथ द्विवेदी आदि रहे। आभार ज्ञापन आयोजक अवनीश त्रिपाठी ने किया।

इस अंक के लेखकों के पते -

विजय कुमार,फ्लैट नंबर-402,पंचम तल,प्रमिला रेसिडेंसी,हाउस नंबर-36-110/402, डिफेंस कालोनी,सैनिकपुरी पोस्ट, सिकंदराबाद-500094 Email : vksappatti@gmail.com Mobile : +91 9849746500

भगवती सोनी, हिंदी विभाग राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय,अजमेर, राजस्थान, भारत, 305817, 09509608821

नवीन कुमार जैन- ओम नगर कालोनी, वार्ड नं.-10,बड़ामलहरा, जिला- छतरपुर, म.प्र.पिन - 471311,फोन-+91-8959534663,वाट्सऐप.-+91-9009867151,ईमेल- naveenjainnj2701@gmail.com

एस. भाग्यम शर्मा बी–41 सेठी कालोनी जयपुर 302004ए मो–9468712468

राज्यलक्ष्मी, हैदराबाद विश्वविद्यालय, ph-9866041833,Email-rsreenasingh62@gmail.com.

अल्का चन्द्रा, 170–140 एल ब्लॉक, नवीन नगर,काकादेव, कानपुर–208025 –मो0नं0– 9935536768, ईमेल– alkachandra41@gmail.com

सुशांत सुप्रिय, मार्फ़त श्री एच. बी. सिन्हा, ५१७४, श्यामलाल बिल्डिंग , बसंत रोड, (निकट पहाड़गंज) , नई दिल्ली -११००५५ मो: 08512070086,ई-मेल: Sushant1968@gmail.com

लव कुमार 'लव',हिन्दी अध्यापक,रावमावि. बडी बसी अम्बाला (हरियाणा) गांव–लौटों, तह०,+पो० नारायणगढ जिला अम्बालाएदूरभाष– 08685827332

रंजना महेंद्र चौबे, संपर्क - ए/102 नीलकंठ अपार्टमेंट, राहुल पार्क, एस. वी. रोड, भायंदर (पूर्व) ठाणे-401105

डॉ. मंजरी शुक्ला,क्वार्टर नंबर D-1433,इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटिड,रिफाइनरी टाउनशिप विलेज एन्ड पोस्ट - बहोली,पानीपत,हरियाणा-132140, मो0-09616797138

दिविक रमेश,एल-1202, ग्रेंड अजनारा हेरिटेज,सेक्टर-74,नोएडा-201304,मो. 9910177099 divikramesh34@gmail.com

दिनेश वर्मा 'कनक', नीलकमल ज्वेलर्स, पूरनपुर, जि. पीलीभीत,उप्र, पिन-262122, मोबा. 98378 98385

डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा, अकादमिक ग्रंथालयाध्यक्ष, छ.ग. पाठ्यपुस्तक निगम, पें[illegible]नबाड़ा**,** रायपुर (छत्तीसगढ़) **,** मोबा. नं. 09827914888, 070495908884**92001,**

डॉ संगम वर्मा, सहायक प्राध्यापक,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एवं हिन्दी शोध केन्द्र,सतीश चन्द्र धवन राजकीय महाविद्यालय, लुधियाना, पंजाब, भारत -141001,चलभाष-094636-03737, ईमेल - sangamve@gmail.com

नीरज कुमार नीर,आशीर्वाद,बुद्ध विहार,पो ओ - अशोक नगर,रांची , झारखण्ड - 834 002 Mob - 8797777598 email - neerajcex@gmail.com

सुनीता शानू,206/3, भूतल, गली नंबर-5, पद्मा नगर, किशनगंज,दिल्ली i-110007, मोबाइल--8860595937, http://mereerachana.blogspot.com/

संतोष कुमार वर्मा, कांकिनाड़ा पश्चिम बंगाल, मोबाइल -9681835197,

भगवती सोनी, हिंदी विभाग राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय अजमेर, राजस्थान, भारत, 305817, 09509608821

डॉ0 चन्द्रकान्त तिवारी **असिस्टेन्ट प्रोफेसर–हिन्दी बी0एस0ए0ई0आई0 फरीदाबाद, एन0सी0आर0,मेल आई0 डी –damantewari@gmail.comमो0 नं0 –+918586098669,+8851679576,**

अरविंद कुमार साहू - 'साहू सदन , अकोढ़िया रोड , ऊंचाहार , जिला - रायबरेली (ऊप्र) पिन 229404 मोबाइल - 7007190413 ईमेल aksahu2008@rediffmail.com

एस. भाग्यम शर्मा, बी–41 सेठी कालोनी जयपुर 302004 मो–9468712468

रवि कुमार गोंड़, शोधार्थी, हिंदी विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश,अस्थाई शैक्षणिक खण्ड शाहपुर, छतरी ,जिला- काँगड़ा (हि.प्र.) 176206 ई-मेल-ravigoan86@gmail.com, दूरभाष नं. : 0780711173

प्रा. डॉ. मनोहर,संस्थापक व संपादक ,'शब्दसृष्टि',भारतीय साहित्य, कला व सांस्कृतिक प्रतिष्ठान व हिंदी-मराठी द्विभाषिक पत्रिका, भ्रमणध्वनि : 9870255527

सुशांत सुप्रिय, A-5001, गौड़ ग्रीन सिटी , वैभव खंड, इंदिरापुरम ,ग़ाज़ियाबाद -201014(उ.प्र.) मो : 8512070086,ई-मेल : sushant1968@gmail.com

फरीदा खातून,नेल्सन रोड,मारवाड़ी कल,पोस्ट हाजीनगर,उत्तर 24 परगना,पश्चिम बंगाल पिन-743135 ,मोबाइल +91-9038609189